

आत्माराम एण्ड संस
दिल्ली लखनऊ

चमचागीरी

डा॰ बरसाने लाल चतुर्वेदी



प्रकाशक
आत्माराम एण्ड संस,
कश्मीरी गेट, दिल्ली-११०००६

शाखा
१७-अशोक मार्ग, लखनऊ

मूल्य : ३०.००

संस्करण : १६८६

मुद्रक : आर० के० भारद्वाज प्रिंटर्स शाहदरा दिल्ली-३२

२४.५.५५

अपनी ही धर्मपत्नी
श्रीमती द्रोपदी चतुर्वेदी को
जिनकी चमचागीरी अहर्निश
करता रहा हूँ

विषय सूची

28.5.88

अंग्रेजी बोलने वाली बिल्ली

पंडित भोलानाथ सब तरह से सुखी थे। भरा पूरा परिवार था। उनके विचार भी प्रगतिशील थे। खुद ज्योतिष का कार्य करते थे। ऊँचे केस लेते थे। भविष्यवाणी जो करते थे, प्रायः सच्ची निकलती थी। फीस भी तगड़ी लेते थे। सरकारी कर्मचारी अपनी तरक्की के बारे में उनसे पूछने आया करते थे। पत्नी सेवा-वृत्ति की थी। पढ़ी-लिखी अधिक नहीं थी, रामायण पढ़ लेती थी, दूध का हिसाब लिख लेती थी। लड़के दो थे, एक इंजीनियर और एक डॉक्टर।



दीवाली का दिन था, मैं उनके यहाँ बधाई देने पहुँचा। बोले, 'रामप्रसाद यार, सब अच्छा चल रहा था, ये जो नयी बहू घर में आई है, इसकी वजह से नित्य के झंझट शुरू हो गये हैं।'

मैंने कहा, 'क्या सास बहू की नहीं बनती? घर का काम काज

नहीं करती ? अशिष्ट व्यवहार करती है ?' पंडित जी, सब बातों से इन्कार करते रहे। अंत में मैंने पूछा, 'कोई बात तो होगी ?'

पहेली बुझाते और मुसकराते हुए पंडितजी बोले, 'रामप्रसाद, तुम भी सुनकर हँसोगे। बड़ा मनोरंजक कारण है। सुबह जल्दी उठती है, घर का काम-काज भी खूब करती है। अपनी सास के, मेरे चरण छूती है। किसी से अशिष्ट व्यवहार नहीं करती।'

मुझे गुस्सा आ रहा था। मैंने कहा, 'आप यह पहेली बुझाते रहेंगे या कारण भी बतायेंगे। मैं तो तंग आ गया। आप नहीं बताते तो मैं जाता हूँ। पंडित जी ने एक पान मंगवाकर मुझे खिलाया और एक खुद खाया, फिर हँसकर कहने लगे 'कारण यह है कि बात-बात में अंगरेजी बोलती है। तुम जरा रुको, मंदिर गयी है, आती ही होगी। उस दिन मैंने उससे पूछा भी था। कहने लगी कि 'पापा, इट इज माई हैबिट, आई कांट हेल्प इट' समझ में नहीं आता कि क्या करूँ। कल क्या हुआ, मेरी छोटी लड़की ने हँसी-हँसी में उससे कह दिया—अंग्रेजी बिल्ली। हिन्दी समझ लेती है, लेकिन शुरू से ही कानवेन्ट में पढ़ी है, इसलिए बात-बात में अंगरेजी बोलती है।'

मैं चाय पी रहा था कि पुष्पा भी आ गयी। आते ही पंडितजी ने उससे पूछा, 'बेटी मंदिर हो आयी ?'

'ओह, वंडरफुल, वेरी गुड टेंपिल।'

पंडित जी बोले, 'बेटी, मंदिर अच्छा था—यह कहना चाहिए। लोग तुम्हें तंग करते हैं तो नाराज होती हो। ऐसा कैसे चलेगा ? अब तुम्हारे सिर का दर्द कैसा है ?'

'जी, सेरिडान लेने से कुछ रिलीफ फील कर रही हूँ।'

पंडित जी फिर हँसने लगे। मेरा परिचय कराया और मुझसे इशारा किया कि मैं ही कुछ समझा दूँ। मुझसे बोली, 'हमारा फाल्ट क्या है, हिन्दी हमको सिखाया नहीं गया।'

मैंने कहा, 'पुष्पाजी, क्या आप अपने घर में भी अंगरेजी ही बोलती थीं ?'

'ओह, यस' अंदर से किसी ने आवाज़ दी और पुष्पा जी अंदर चली गयी।

वसंत पंचमी का दिन था। पुष्पा जी की बुआ-सास मथुरा से आयी थीं। दरवाजे पर पुष्पा जी मिल गयीं। वे 'बेल्बॉटम' तथा 'कुरता' धारण किये हुए थीं। बुआ-सास का अभिवादन करती हुई बोलीं, 'गुडमार्निग टु यू' वेलकम।

वे कुछ समझ नहीं पायीं। आते ही भोलानाथ से बोलीं, 'दरवाजे पै कौन छोरा हो, गुड़ गुड़ कर रह्यो। मैं तो भैया, गुड़ लाई नांय। कछू और भी कह रह्यो, बात कछू समझि में नाइ आयी।'

भोलानाथ बोले, 'अरी बहिन वह छोरा नहीं है, तेरे भतीजे की बहू है। तुझे पहचान नहीं पायी होगी। गुड़-गुड़ नहीं, उसने आपसे गुडमार्निग कहा होगा। उसे हिन्दी आती ही नहीं। शुरू से अंगरेजी स्कूल में पढ़ी है।'

पिछले सोमवार की बात है। हमारे पड़ोसी गणेशीलाल जी की मृत्यु हो गयी थी। उस समय घर में कोई था नहीं। बहू से मैंने कहा कि वहाँ जाकर शरीक हो जाए। तुरन्त चली गयी। कल गणेशीलाल का लड़का मिल गया था। उसने जो बताया, मैं तो सुनकर सकते में आ गया। कह रहा था कि आपकी बहू ने औरतों को अंगरेजी में झाड़ना शुरू कर दिया—'डोंट शाउट लेट, दी ओल्ड मैन डाई पीस फुली'। बाहर से रिश्तेदारी की काफी औरतें आयी हुई थीं, वे भी ताज्जुब में रह गयी ...और जाने क्या-क्या बकवास की।

मैंने उनसे क्षमा याचना की और कहा, 'भाई भविष्य में ऐसा कभी होगा तो मैं स्वयं ही आऊँगा।'

बुआ-सास ने भी सिर पर हाथ रखकर कहा, 'आँच लगे ऐसे अंगरेजी बोलबे पर, भैया छोरोवारे ने तो खूब धोखो दियो।'

कवि सप्लायर्स एण्ड कम्पनी लिमिटेड

अष्टग्रह योग के पुण्य नक्षत्र में कम्पनी की वार्षिक मीटिंग कवि सम्राट दानव प्रसाद 'खग्रेप' के सभापतित्व में सत्यानासी हाल में प्रारम्भ हुई। चेयरमैन ने कम्पनी के पिछले वर्ष का लेखा-जोखा प्रस्तुत करते हुए अपनी वार्षिक रिपोर्ट में कहा :



'सौभाग्यशाली भाइयों एवं बहिनो! मुझे आज यह बताते हुए अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि थोड़े ही समय में अपनी कम्पनी ने कितनी अधिक प्रगति की है। पिछले वर्ष भारतवर्ष में जितने भी कवि सम्मेलन हुए उनमें अपनी कम्पनी के डायरेक्टर्स ही प्रधान थे। आपको यह

जानकर खुशी होगी कि कई रेडियो कवियों तथा पत्रों के सम्पादकों ने कम्पनी के शेयर खरीदे। आज का युग सहकारिता का युग है। हमारी कम्पनी इसी सिद्धान्त पर आधारित है। हमारी कम्पनी ने किसी देहात में होने वाले कवि सम्मेलन तक में अपना अखण्ड राज्य स्थापित कर लिया है। आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि हमारे एक डायरेक्टर ने कवि-सम्मेलन की आय से कोठी तक बनवा ली है। इसी वर्ष रेडियो-मार्का कवियों से जो समझौता हुआ है उसमें यह शर्त डाल दी गई है कि रेडियो के विविध स्टेशनों पर होने वाले कवि सम्मेलनों में हमारी ही कम्पनी कवियों की सप्लाई करेगी। साथ में यह भी निश्चय किया गया है कि कम्पनी द्वारा 'पब्लिक सैक्टर' में आयोजित कवि-सम्मेलनों में रेडियो मार्का कवियों की सीटें सुरक्षित रहेंगी। भाइयो, समय कम था इसलिए इस समझौते पर विचार करने के लिए पहले मीटिंग न बुला सका। आशा है आप हमारे इस निश्चय का समर्थन करेंगे।' सभा में 'नहीं-नहीं' की आवाजें, हुल्लड़। एक व्यक्ति को बोलने की अनुमति।

व्यक्ति बहुत तेज आवाज से—'क्या आप यह बताने का कष्ट करेंगे कि जब हमको कम्पनी के शेयर बेचे गये थे उस समय यह कहा गया था कि हम कम्पनी की नीति का जनता में प्रचार करें तथा हमको वार्षिक लाभ का उचित हिस्सा मिला करेगा किन्तु मैं आपका ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ कि डायरेक्टरों की नीयत बिगड़ गई। (शेम, शेम की आवाज) वे अपने स्वार्थ में लवलीन हो रहे हैं। हमारे क्षेत्र में कवि-सम्मेलन हुआ, उसमें बड़ी दूर-दूर के कवियों को इसलिए बुलाया गया क्योंकि हमारे चेयरमैन एवं अन्य प्रमुख डायरेक्टरगण कुछ ही दिनों पूर्व उन कवियों द्वारा संयोजित कवि-सम्मेलनों में निमन्त्रित किये गये थे। वहां उनको 'चक्क' पारिश्रमिक भी मिला था। सभापति महोदय, मेरे पास इसके प्रमाण हैं और यदि पिछले वर्ष के रिकार्ड को देखा जाय तो यह सिद्ध हो जायगा कि सम्मेलन चाहे रामपुर में हो या कानपुर में हो, भोपाल में हो या नैनीताल में हो, आगरा में हो या जावरा में, मुरादाबाद में हो या

अहमदाबाद में, भरतपुर में या शिकारपुर में, राँची में हो या श॰
हर जगह आपका ही अंतरग ग्रुप नजर आता है। आलोचना के
होते हैं हम लोग जो कि किसी पाप-पुण्य में नहीं है। इसके पूर्व
लोग ही हमे भड़काया करते थे कि यह अन्याय है कि राजनी
कारणो से ही कवियों को बड़ा माना जाय। किन्तु आप लोग
मार्का कवियों की चिलम भरने में लगे रहते है। मुझे स्पष्ट
के लिए क्षमा किया जाय, यह तो डायरेक्टरगणों के स्वार्थ-साधन
कम्पनी है। एक-एक कविता लिखने वाले नाम-मात्र के कवि
को इसलिए बुलाया जाता है कि वे अपने यहाँ होने वाले
सम्मेलनों में हमारे कुछ डायरेक्टरगणों को बुला-बुला कर लम्बी र
दिलवाते हैं। दैनिक, साप्ताहिक तथा मासिक पत्रों के सम्पादकों
जिनको कवि के रूप में कोई नहीं जानता, केवल इसलिए बुलाया
है कि वे आपकी रचनायें धड़ाधड़ छापते है। 'चमक' पारिश्रमिक दिल
वाते है तथा आपके थर्ड क्लास आयोजनों की सचित्र रिपोर्ट छाप
है। रेडियो के स्वयंभू कवियों को इसलिए बुलाया जाता है कि
आपको अधिक से अधिक बुक करे ? क्या कम्पनी इसीलिए बनाई ग
थी ? प्रत्येक क्षेत्र में सैकड़ों प्रतिभायें बिना प्रोत्साहन के हतोत्साहि
हो रही है। क्योंकि आपका मैनेजिग ऐजेन्सी सिस्टम उनको पनप
नहीं देता। हास्यरस के नाम पर सिनेमा के गंदे गीतों के स्तर क
अश्लील कवितायें लिखने वाले कवियों को आपने अपने गुट में शामि
कर लिया है। क्या इससे जनता का स्तर नही गिर रहा है ? सर्कस के
जोकरों से वे किस दृष्टि से ऊँचे हैं ? क्या हिन्दी के नाम पर या
कलक नही है ? उर्दू के कवियों की नकल पर बनाये गये तथा सिनेम
टाइप गीतों के गाने वाले भाँड़ों को आपने कम्पनी में सम्मिलित करके
नैतिक अपराध किया है जिससे बड़ी बदनामी हो रही है। क्या इससे
हिन्दी का नाम बढ़ रहा है ? आपने अपनी रिपोर्ट मे यह खुशखबरी
बताई कि हमारे डायरेक्टरगण कवियों ने कोठियाँ तक बनवा लीं
मुझे इस बात में खुशी है तो क्या उन सैकड़ों 'ब्लेक' करने वाले को
जिन्होने एक नहीं पाँच-पाँच कोठियाँ बना ली है, आप समाज मे

आदर्श के रूप मे रख सकते हैं ? कई शेयर होल्डर्स ने यहाँ तक शिकायत की है कि हमे ठेके पर ले जाया जाता है क्योकि हम अलग-अलग क्षेत्रो का प्रतिनिधित्व करते है किन्तु यहाँ रकम नाम मात्र का मिलती है तथा लाभ का मुख्य भाग डायरेक्टरगण खा जाते है। (चार व्यक्तियो द्वारा जबर्दस्ती बैठाया जाना)

चेयरमैन, हाँ तो मैं कह रहा था कि हमारी कम्पनी दिन-दूनी रात चौगुनी प्रगति कर रही है। हमारे एक शेयर होल्डर भाई ने जो बातें कही हैं वे सम्भवत आवेश मे आकर कही हैं। मैं शीघ्र ही उनका पता लगाऊँगा। वे कृपया मुझसे एकान्त मे मिलकर अपनी शका समाधान कर सकते हैं।'

(कुछ आवाजें—जो कुछ कहना है सबके सामने कहिये)।

मैं उनकी यह बात अवश्य स्वीकार करता हूँ कि विभिन्न क्षेत्रीय सयोजको को हमे व्यापार की उन्नति की दृष्टि से ही अपने मे शामिल करना है और नीति भी तो यही कहती है। भविष्य मे आपके सुझावो पर अवश्य ध्यान दिया जायगा।

'आपके गुट मे हमे नही रहना' की सम्मिलित आवाज 'हमारे रुपये वापिस कर दो।' पुन सम्मिलित स्वर। इसी अव्यवस्था के मध्य मीटिंग का भग हो जाना।

परनिंदा

साहित्यशास्त्रियों ने रसों की संख्या दस मानी है। समय बदल गया है। पुरानी मान्यतायें 'आउट आफ डेट' होती जा रही हैं। एक साहित्य के विद्यार्थी से जब पूछा गया—तुम्हें सबसे अच्छा रस कौन-



सा लगता है ? उसने उत्तर दिया, गन्ने का रस। अध्यापक महोदय साहित्य में इस नये रस का नाम सुन कर चुप हो गये। इसी प्रकार यदि मुझसे पूछा जाये कि मुझे कौन-सा रस सर्वश्रेष्ठ लगता है तो मैं

कहूँगा निन्दा रस । सच पूछिये तो अपना तो यह हाल है, कि चाय न मिले, भोजन न मिले, सोने को न मिले, कोई नुकसान नही किन्तु यदि दूसरे की निन्दा करने का अवसर प्राप्त न हो तो हमारा जीवन वीरान हो जाए ।

महँगाई के इस जमाने मे यदि सबसे सस्ता एव सरल मनोरजन का कोई साधन बचा है तो वह है परनिन्दा । इसके लिए न किसी आडिटोरियम की आवश्यकता है और न किन्ही अन्य उपकरणो की, न निमत्रण पत्र छपवाने का झझट, न सभा सोसाइटी बनाकर चुनाव कराने की किल्लत, न मासिक चन्दा । कम-से-कम एक श्रोता अवश्य चाहिये । और आप निन्दा रस का पूर्ण आनन्द उठा सकते है । समय की इसमे कोई पाबदी नही है । ताश के पत्ते न हो, आप ताश नही खेल सकते, कैरम बोर्ड न हो आप कैरम नही खेल सकते, पर निन्दा खेल मे ऐसी कोई बाधा नही है ।

खेल मे राजा और रक का भेद नही माना जाता । अन्य खेलो मे कुछ बहुत महँगे है जिन्हे प्रत्येक व्यक्ति नही खेल सकता । परनिन्दा के खेल को सभी खेल नही सकते, खेलते है । सभी को अच्छा लगता है । परनिन्दा मीठी रोटी है जिधर से तोडो, उधर से मीठी, सुनने वाला भी मग्न है, निन्दक भी रसलीन है ।

निन्दा रस के उदगम तथा विकास पर कोई शोध-ग्रन्थ मेरे देखने मे नही आया । सुना है हाल ही मे किसी विश्वविद्यालय मे 'हिन्दी साहित्य मे निन्दा रस' शीर्षक से एक रूपरेखा प्रस्तुत की गयी है । इस रूपरेखा मे वैदिक काल से इसकी परपरा का सकेत मिलता है । कबीरदास जी सैकड़ो वर्षो पुराने कवि हैं । सन्त थे । मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि वे भी किसी निन्दक के सताये हुए थे । उन्होने लिखा—

निन्दक नियरे राखिये, आँगन कुटी छवाय,
बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करै सुभाय ।
तिनका कबहुँ न निन्दिये, जो पायन तर होय,
कबहूँ उडि आँखिन परै, पीर घनेरी होय ।

कबीरदास जी तो महात्मा थे। यदि उनका सिद्धान्त सब तो निन्दा पीठ-पीछे न की जाती। सच पूछा जाये तो निन्दा का आनन्द परोक्ष में ही होता है। आप क्या, कोई भी निन्दक को सादर आमंत्रित करके यह नहीं चाहेगा कि निन्दक द्वारा निन्दा सुनकर वह अपने मन को निर्मल करे। कबीरदास जी तो तिनके की निन्दा करने को भी बुरा समझते हैं किन्तु आजकल निन्दा के क्षेत्र में नये क्षितिज छुए जा रहे हैं। निन्दा करने में लोग अपने 'डैडी' को भी नहीं छोड़ते। गुरुजी तो किसी की गिनती में ही नहीं रहे। एक विद्यार्थी से जब परीक्षा में फेल होने का कारण पूछा गया तो वह बोला—हम तो अपने डैडी की लापरवाही के कारण फेल हो गये। हमने पूछा—सो कैसे। उसने बताया, हम तो परीक्षा दे आये। बाद में डैडी को परीक्षकों के पास जाकर हमारे अंक बढ़वाने थे, ये उन्होंने नहीं किया इसी का नतीजा यह है कि हम फेल हो गये। जिम्मेदार 'डैडी' हुए? हम उनके मुँह की तरफ देखते रह गये। विद्यार्थी वर्ग से कभी अपने गुरुओं के रेखाचित्र सुनिये, छिपकली मिस, तेज चलने वाली भेनजी फॉटियर मिस, मोटी बहिनजी, "डनलपिको मिस' आदि-आदि। इन्हीं उपाधियों से संबोधित किया जाता है।

एक घर में सास दिन भर के लिये कहीं गयी हुई थी। किसी पड़ोसिन को उस घर से कुछ लेना था। सास कभी किसी को कुछ दिया नहीं करती थी। पड़ोसिन चतुर थी। उसने सास की निन्दा करना प्रारम्भ किया। बहू ऐसी रसमग्न हुई कि उसे मीठाई ही नहीं दी बल्कि अपनी ओर से उसे अनेक उपहार भी दिये और शाम तक बिना कुछ खाये उस पड़ोसिन से सास की बुराई सुनती रही।

हमारे पड़ोसी भी मजेदार व्यक्ति है। उन्हे आप सदैव परनिन्दा में लीन पायेंगे। यदि परनिन्दा में कोई विश्व-प्रतियोगिता होती तो वे कई पुरस्कार प्राप्त करते। किसी की प्रशंसा सुनना वे पाप समझते है। आप किसी की तारीफ करें वे तुरन्त कहेंगे—अजी, आज चार पैसे हो गये हैं बाबूजी पर, भूखों मरते थे। कई बार तो इनकी माँ हमारे घर से आटा माँगकर ले गई। इनकी बहिन की बारात में

फजीते पड जाते अगर हमारे डैडी उन्हे रुपये उधार न देते।

एक दिन मैं और वे एक कवि-सम्मेलन मे गये। उन्होंने कई कवियों मुंह पर उनकी प्रशसा की। लौटते मे उन्होने सभी कवियो का भनदन करना शुरू किया। उनकी दृष्टि मे कोई बनता बहुत था, सी की आवाज रेंकने जैसी थी, किसी की सूरत पर बारह बज रहे किसी ने किसी दूसरे कवि के भावो का अपहरण किया था, वहर-ल उन्होंने जमकर सबकी निन्दा की। मैं अनुभव कर रहा था कि स समय वे निन्दा करने मे मग्न थे उन्हे ऐसा आनन्द आ रहा था तो बडी रकम की लाटरी उनके नाम से निकल आई हो।

उनकी बैठक एक प्रकार से परनिन्दा-भवन थी—शाम को अन्य न्दक भी वहाँ पधारते थे। एक सगीत-समारोह के सयोजक उनकी ठक मे आये। मैं भी उस दिन वही था। वे सयोजक से बोले—भाई स ससार मे सयोजक दुर्लभ हैं। धन्य हैं आप जो दूसरो के मनोरजन लिए ऐसा आयोजन करते है। आज जबकि व्यक्ति अपने मे ही समटता चला जा रहा है, आप एक अपवाद स्वरूप ही कहे जायेंगे। अवश्य हाजिर हूँगा और मेरे लायक कोई सेवा बताइये। उन्हे चाय पलाई। ज्यो-ही वे बैठक से बाहर निकले, फिर क्या था, कहने लगे धन्धा बना रखा है लोगो ने। ये सगीत के नाम पर 'सा रे गम' भी नहीं ानते लेकिन चल दिये सयोजक बन कर। न कभी चन्दे का हिसाब ते हैं। अजी उन्होंने तो इन कर्मों से अपनी हैसियत बनाई है।' मैंने उनको टोका—"भाई साहब उनके सामने तो आप उनकी इतनी तारीफ कर रहे थे और उनके जाते ही उन पर पिल पडे"—उन्होंने बडे भोलेपन से उत्तर दिया—'यार बुराई करने का मजा तो पीठ पीछे ही है। सामने तो मूर्ख कहते हैं। और हमारे कहने से क्या होता है। लोग मौज उडावें और हम जबान से भी न कहे, 'मैंने यह अनुभव किया कि वे जब किसी की निंदा करते हैं तो तटस्थ भाव से करते हैं। आवश्यक नही कि जिसको वे बुराई कर रहे हैं उससे वे नाराज हो। उनकी तो बुराई करने की आदत पड गई है। वे कला के लिए कला वाले सिद्धान्तो मे विश्वास करते हैं। वे बुराई के लिए बुराई करते हैं किसी

का दिल दुखाना उनका उद्देश्य नहीं। कई बार वे इस आदत कारण परेशानी में भी पड़ चुके हैं। अपने पड़ोस में रहने वाली प्रौढ़ बुआजी के बारे में उन्होंने ऐसे ही कुछ कह दिया। वे घर पर आई और लगीं इनको धमकाने। काफी आदमी भी जुड़ गये। जिन उन्होंने बुआजी की बुराई की थी वह भी साक्षी के रूप में उपस्थि थे। भाई जान, रंगे हाथों पकड़े गये थे। बचते तो बचते कैसे? बड़ मुश्किल से लोगों ने माफी मंगवाकर उनका पिंड छुड़वाया। कुछ दिनों तो सावधानी बरती फिर वही रफ्तार।

एक दिन ऐसा हुआ कि वे सार्वजनिक रूप से अपनी सास की निन्दा कर रहे थे। वे इनसे कितनी बेगार कराती हैं, उनका कैसा चिड़चिड़ा स्वभाव है, कैसी लोभिन हैं आदि-आदि। किसी ने सही कहा है कि दीवालों के भी कान होते हैं। बैठक में सभी प्रकार के लोग जमते हैं। किसी ने उनकी श्रीमती से सब बातें कह दीं, सुबह-सुबह मेरे घर आए और परेशानी की हालत में बोले, 'भाई, क्या बताऊँ, ऐसी बुरी आदत पड़ गई है। मैंने मजाक-मजाक में अपनी सास जी के बारे में कुछ कह दिया था। किसी भिड़ानेवाले ने और नमक-मिर्च लगाकर श्रीमती जी से कह दिया। कल दिन भर घर में खाना नहीं बना और शाम को उन्होंने सब सामान भी पैक कर लिया है और मायके जाने की तैयारी कर रही हैं। भाई, तुम्हीं चलो, कुछ हो सके तो इस मामले को समाप्त कराओ।'

मैंने कहा—'यार क्यों नहीं अपनी जबान पर काबू रखते? मन बहलाने के और भी अनेक साधन हैं, क्या दूसरे की निन्दा करने के अतिरिक्त तुम्हारा मनोरंजन और किसी साधन से नहीं हो सकता? भाई, मर्द का कोई मामला होता मैं चला चलता, मियाँ बीबी के झगड़े में पड़ूँ, इतने बाल मेरे सिर में नहीं है।' उनके बहुत मिन्नत करने पर मैं उनके साथ चला गया। श्रीमती जी के चेहरे पर ऐसी लाली थी जैसी कि जेठ मास की दोपहर में सूर्य की होती है। मैंने कहा—भाभी जी नमस्ते। उन्होंने बहुत ही औपचारिक रूप से नमस्ते कहा, मेरी हिम्मत नहीं पड़ रही थी। समझ में नहीं आता था कि

बातचीत किस ढंग से शुरू की जाये। खैर साहब, किसी प्रकार से मैंने साहस करके बातचीत प्रारम्भ की। वे तो भरी हुई बैठी ही थीं। उबल पड़ी, आखिर बूढ़े होने को आये, अब तक तो बाहर वालों की निन्दा ही किया करते थे। अब घर वालों का भी नम्बर आ गया। क्यों जी अपने माँ-बाप की बुराई कौन सुनेगा? और वह भी बिना किसी कारण के। भाई साहब, नित्य ही निन्दा करने के कारण इनकी दुर्गति होती है और ये है कि इस आदत को नही छोड़ते। अब तो पड़ोसियों ने बोलचाल बन्द कर रखी है। जिसकी देखो बुराई। मेरे बहुत समझाने-बुझाने पर उनका गुस्सा उतरा। उन्होने श्रीमती जी के सामने प्रतिज्ञा की कि वे किसी की निन्दा नही करेंगे। लेकिन मुझे पूर्ण विश्वास है कि वे शीघ्रातिशीघ्र किसी की निन्दा करेंगे क्योंकि वे निंन्दा को ही रसराज मानते है।

संगीतकार पत्नी भी मुसीबत है

जीवन को स्वर्ग बनाने के लिए पत्नी-भक्ति आवश्यक मानी है। हमारे पूर्वज भी कह गये हैं। 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते देवता।' इससे प्रमाणित होता है कि देवता लोग भी देवियों के भक्त रहे हैं। नारी माहात्म्य अनन्त है।



वे पति धन्य है जिनकी पत्नियाँ संगीतकार है। उन पतियों ने अवश्य ही अपने पूर्व जन्म में बहुत पुण्य किये होंगे तभी उनको वरदान मिला है। हमारे पड़ोसी मिस्टर चोपड़ा की पत्नी संगीत हैं। उनके घर पर सभी लोग उषाकाल से ही जाग जाते हैं। बड़ों बात छोड़िये, छोटे बच्चे भी सूर्योदय का आनन्द लेते हैं। न यहाँ प्रातः जागने के लिए कोई घण्टी बजती है और न अलार्म खरीदने में ही उन्होंने रुपया खर्च किया है। इस सबका श्रेय

चौपड़ा को है जो सुबह जल्दी उठ कर [illegible] शब्दों मे इसे 'रियाज' कहते हैं। जिस समय [illegible] सुबह भैरवी का अलाप लेती है—उसके घर वाले ही क्या सारी कालोनी में एक हड़कम्प मच जाता है। लोग अपने-अपने किवाड़ और खिड़कियाँ बन्द कर लेते है। ताल देने को तबलावादक भी सुबह आ जाया करता था। खर्च अधिक पड़ने के कारण उसे बन्द कर दिया है। कुछ दिनों तो चौपड़ा साहब ही तबले पर बैठते थे किन्तु अब तो बारी-बारी से अन्य लड़के लड़कियों ने भी ताल देना शुरू कर दिया है। यह व्यवस्था इसलिए करनी पड़ी चूंकि चौपड़ा जी को उषाकाल में दूध की लाइन में लगना पड़ता है।

दूसरी मुसीबत है बच्चों के पढ़ने की। श्रीमती जी की संगीत साधना तथा बालकों की पढाई का एक समय पड़ता है। चौपड़ा जी श्रीमती जी से तो कुछ कह नही सकते, बच्चों की पढाई का इन्तजाम एक पड़ौसी मित्र के गैरेज में कर दिया है। श्रीमती चौपड़ा की आवाज मे कितनी मधुरता है इसके लिए शोध की आवश्यकता है। किन्तु वे अपनी आवाज की मधुरता पर इतनी मुग्ध है कि उसका जिक्र करने पर इतनी लज्जित हो जाती है कि उनका मुंह लाल हो जाता है।

जनवरी का महीना है। दूसरे किसी नगर में एक संगीत सम्मेलन का आयोजन किया गया है। श्रीमती चौपड़ा को भी निमन्त्रण आया है। चैरिटी शो है। भाग लेने के लिए पूरा खर्च इन्हीं को उठाना है? चौपडा जी को आदेश मिलता है कि उस नगर की बर्थ रिजर्व करा दें। दफ्तर जायं कि सीट रिजर्व करावें? मिसेज चौपड़ा तबलावाला अपना साथ ही रखती हैं। दूसरे तबले वाले से उसकी संगत नही बैठती। चौपड़ा जी तान पूरा पर संगत देते है। कैसा मनोरम दृश्य है। कड़ाके की ठंड, चौपड़ा जी अपने कर कमलों में तानपूरा लिये हुए स्टेशन की ओर कूच कर रहे हैं। हवा है कि कानों में घुसकर ही रहेगी। स्टेशन पर पहुँचते हैं तो पता चलता है कि आकस्मिक कारणों से गाड़ी लेट है। चौपड़ा जी सर पर हाथ मारते अपने पूर्वजों का स्मरण करके समय व्यतीत कर रहे है। चौपड़ा जी को 'केजुअल लीव'

का कोटा तो फरवरी तक ही समाप्त हो जाता है । बाकी
'मैटोकल' तथा 'अजित अवकाश' के सहारे ही व्यतीत होता है।
मिसेज चोपड़ा को किचन में समय देने का समय ही नहीं मिल
कुछ दिनों से तो अभ्यास यहां तक बढ़ गया है कि रात को सोते
रे, ग, म, प, ध, नी, सा कहते-कहते उठ बैठती है। टेलीविजन
अथवा रेडियो, जब शास्त्रीय संगीत का कार्यक्रम होता है तो श्रीम
चोपड़ा पूरे कार्यक्रम को बड़े मनोयोग से सुनती हैं। अलाप
बारीकियों को समझने के लिए वोल्यूम जरा जोर का कर देती है
शास्त्रीय संगीत में पूर्ण आनन्द लेना हर एक के भाग्य में नहीं लिखा
मिसेज चोपड़ा बालकों में संगीत के प्रति रुचि उत्पन्न करने के ख्या
से जबर्दस्ती बालकों को इन कार्यक्रमों को सुनवाती हैं। चोपड़ा जी
कुड़कुड़ाते रहें, कौन परवाह करता है ।

घर पर भी अन्य संगीतकार आते रहते हैं। छोटी-छोटी संगीत
गोष्ठियां घर पर भी आयोजित होती रहती हैं। इस सब खर्च से
चोपड़ा जी का दिवाला निकला जा रहा है। निकल जाये कौन पर-
वाह करता है ? यह क्या कम गौरव की बात है कि उन्हें एक संगीत-
कार पत्नी का पति होने का गौरव प्राप्त है ।

ये तो रही कार्यक्रमों की बात । जब साज खराब होते हैं तो एक
मुश्किल और खड़ी हो जाती है । एक बार तबला खराब हो गया।
कालोनी में कोई तबला ठीक करने वाला नहीं था। चोपड़ा जी की
ड्यूटी थी कि उसी शाम तक तबला ठीक हो जाना चाहिए। बेचारों
ने 'कैजुअल लीव' ली । पता चला कि केवल पांच किलोमीटर पर
तबला ठीक करने वाले की दुकान है। बस में बैठे कि ठोकर लग
गई । तबला और भी क्षत-विक्षत हो गया। जैसे-तैसे करके उसकी
दुकान पर पहुंचे वह बोला, 'आप छोड़ जाइए साहब, ये साज का
मामला है । छाती पर खड़े होने से ठीक नहीं हो सकता ।' तीन दिन
बाद आइये । चोपड़ा जी ने पहले तो उनकी खुशामद की और बाद
में जब वह नहीं माना तो उसके पैर पकड़ लिए ।
शाम को ६ बजे उसने तैयार करके दिया । बिना खाये-पिये बेचारे

उसकी दुकान पर बैठे रहे। तीस रुपये उसे देकर तबला ठीक करा के लाये। घर पर आकर देखते हैं कि छोटे बच्चे ने तानपूरा गिरा दिया है। श्रीमती जी कोप भवन में बैठी थी। उनके प्रति सहानुभूति के दो शब्द कहना तो दूर बल्कि तानपूरा ठीक कराने की ड्यूटी उनकी ओर लगा दी गई। मिस्टर चोपडा रात को सो भी नही पाये। दूसरे दिन उस तानपूरे को ठीक कराने मे लगे रहे।

अब तो वे अधमरे हो गए हैं। करें भी तो क्या करें? जब घर में रहना है तो श्रीमती जी की संगीत साधना मे उन्हें त्याग करना ही पड़ेगा। परमात्मा आपको भी एक संगीतकार पत्नी दे।

मैंने सचमुच अख़बार निकाला

बैठे विठाये मुझे अखवार निकालने की क्यों सूझी ? अमर चाहता था। अमर होने के कई उपाय है—धर्मशाला बनवाना, नाम का कालिज खुलवाना, तिकड़म लगाकर किसी मौहल्ले के में अपना नाम घुसेड़ देना आदि आदि। अपनी दाल इन किसी मामलं नही गली थी। सोचा, लेखक तो हैं ही, अपनी लाइन का काम है निकला तो विवटलों यश मिलेगा और धन तो इतना मिलेगा कि प नही इतने सारे धन को रखा कहाँ जायगा ?

सोचा था, पत्र निकालने के बाद घर पर लेखकों का दरवार लग करेगा, प्रेजेन्ट्स की एक अच्छी खासी नुमाइश लग जायगी, बाजा में इतने लोग नमस्ते करेंगे कि चलना मुश्किल पड़ जायेगा, नवयुवक लेखक, नवयुवती लेखिकाओं को निर्देश देने का सुअवसर प्राप्त होगा, नवयुवतियो से व्यवहार करने में सावधानी बरतनी पड़ेगी, समय खराब है, श्रीमती जी एक वार माफ भी कर दें किन्तु 'जे बिन काज दाहिने बायें', टाइप लोग आनन-फ़ानन में स्केण्डल कर देंगे। कई सम्पादक वदनाम हो चुके हैं मुझे पता था।

पुरखे कह मरे हैं कि अच्छे काम करने से पहले मित्रों की सलाह अवश्य ले लेनी चाहिए—पहले अपने मित्र रमेश के यहाँ गया, बातचीत की, योजना रखी। उन्होंने कहा—भाई बड़ा अच्छा विचार है, यश और धन दोनों एक साथ प्राप्त करने के लिए यही स्वर्ग मार्ग है, अच्छे काम में देरी मत करना, शीघ्र प्रारम्भ कर दो। तुम्हें कौन नहीं जानता ? पेपर चल निकलेगा, संदेह मत करो, 'साहित्य की सेवा और साथ में मेवा' ये तो आपसी वात है। औरों से तो आदर्शवाद की वातें करो, कहो पत्रकारिता के क्षेत्र में यह एक क्रान्तिकारी प्रयोग है, आस्था

अनास्था, प्रतिबद्धता चिन्तक की लाचारी, अनुभव की प्राथमिकता, भोगा हुआ सत्य आदि आदि। शब्दों का प्रयोग बातचीत में करो, आधुनिकता का रौब पड़ेगा, लोग समझेंगे कि 'न भूतो न भविष्यति' टाइप पत्र निकलने जा रहा है। उनकी बातचीत से उत्साह मिला। रामदास जी के यहाँ भी गया उनसे कुछ अर्थ सम्बन्धी सलाह लेनी थी, बोले विज्ञापन खूब मिलेंगे, ग्राहक बनाना, ऐजेंटों से बिक्री कराना चारों तरफ से पैसा बरसेगा। उत्साह बढ़ा। घर लौटा, पंडित जी के यहाँ गया। भेंट दी, मुहूर्त निकलवाया, शुभारम्भ के दिन कुछ मित्रों को चाय पार्टी दी।



जैसे बच्चे होने पर उसका नामकरण होता है उसी प्रकार अखबार का भी। 'डिक्लेरेशन' लेना पड़ता है, कई नाम लिखकर भेजे : साधारण प्रेयसी का उत्तर शीघ्र मिल जाता है, डीलक्स प्रेयसी काफी

टाइम उत्तर देने में लेती है, सरकार तो ठहरी एक 'एयर कंडीशं प्रेयसी । लगभग एक वर्ष बाद एक पत्र मिला जिसमें लिखा हुआ था कि हमारे भेजे हुए नामों में से किसी को स्वीकार नहीं किया जा सकता, नये नाम भेजिए, फिर नये नाम भेजे, सालभर बाद एक नाम आया, समझ लीजिए वह नाम 'बन्दर' था खुशी हुई ।

शादी के समय के मिले हुए कुछ रुपये पोस्ट आफिस में जमा थे बन्दर का टाइटिल पेज का ब्लाक बनवाया । बड़े शौक से कागज खरीदा गया । प्रेस में कागज दिया । इधर उधर से लेख एवं कविताएँ इकट्ठी कीं छपाई शुरू हुई । चार पृष्ठ छप चुके थे कि कम्पोजीटर अपना ब्याह कराने चला गया । आठ दिन में लौटकर आया; चार पृष्ठ फिर छपे मशीनमेन को निमोनिया हो गया, दस दिन में वह लौटा । काम फिर शुरू हुआ । तीन दिन शहर में बिजली चली गयी, काम फिर शुरू हो गया । एक जनवरी को अखबार का दर्शन जनता जनार्दन को कराना चाहते थे, किन्तु उस दिन तक केवल आठपृष्ठ छप पाये । मर-गिरकर फरवरी के अन्त तक पूरी छपायी हो गयी ।

रिक्शे में रखकर अखबार घर ले आये, पास पड़ोसियों को दिए ग्राहक बनने की सुनकर कहने लगे—पहले नमूने की प्रति दीजिए और बात बाद में करना । श्रीमती जी ने कुछ प्रतियाँ अपनी सहेलियों को बाँटी । जिस दफ्तर में काम करती हैं उसके कुछ मित्र प्रतियाँ ले गये, एजेन्टों की लिस्ट बड़ी मुश्किल से एक स्थान से लाये, उन्हें डाक से भेजी । साथ में अलग से पत्र भेजे । सबका मजमून एक ही था । आप देश के सर्वमान्य न्यूजपेपर ऐजेन्ट हैं । हमारी पत्रिका आपकी सेवा में भेजी जा रही है । कमीशन काटकर बिक्री की रकम भेज दीजियेगा और सूचित कीजिएगा कि अगले महीने कितनी कापियाँ भेजी जायें । प्रेस वाले के तकादे नित्य आने लगे, एक दिन उसका हिसाब चुकता कर दिया, सौगन्ध खाने को भी ऐजेन्ट ने पैसा नहीं भेजा, एक पोस्टकार्ड भी नहीं भेजा कि उन्हें प्रतियाँ मिल गई हैं ? सब रकम डकार गये । दूसरा अंक निकालने का समय आ गया, कुछ समझ में नहीं आता था ।

एक मित्र ने सलाह दी कि विज्ञापन जुटाओ, ग्राहक तो धीरे-धीरे बनेंगे। सरकारी विज्ञापन भी मिलेंगे।

विज्ञापन लेने निकला, कई स्थानों पर गया, प्रेम खूब मिला। विज्ञापन के नाम पर टालू मिक्सचर मिला। चार स्थानों से उत्साह-वर्धन के रूप में विज्ञापन मिले बहुत खुश हुआ। नये अंक को छपाने में जुट गया। खुद ही कई नामों से लेख भी लिखने पड़े। अधिकतर मित्र लेखकों ने सम्मितियाँ भेजने के बाद उत्तर देना बन्द कर दिया। दूसरा अंक भी छप गया, किसी ने तो कहा कि मुनीम जी नहीं है। एक हफ्ते बाद आना। एक साहब ने कहा कि आपको विज्ञापन जिस साहब ने दिया था वह बाहर गये हैं। उनके आने पर वे ही भुगतान करेंगे। एक विज्ञापनदाता ने गिनकर पच्चीस चक्कर लगवाये। कभी मना नहीं किया। रुपया भी नहीं दिया। हम शान्ति के साथ सतोष करके बैठ गये। चौथे बाकी रह गये थे। जब उनके यहाँ गया तो लड़ने को आमादा हो गये उनका टेलीफोन न० कम्पोजिटर की गलती की वजह से गलत छप गया था, बोले—आपने तो हमारा हजारों का नुक-सान कर दिया, क्यो न आप पर कचहरी में दावा कर दिया जाय, हम अपना पिंड छुड़ा कर भागे। विज्ञापन के नाम पर नया पैसा भी नहीं मिला।

एक हितैषी की सलाह पर अखबार के तीन प्रतिष्ठित अंकों को रद्दी वाले को दे आये। शादी वाले रुपये भी खर्च हो चुके थे। रद्दी से मिले पैसों से अखबार का समापन समारोह कर दिया और प्रतिज्ञा की 'अब खाई सो खाई अब खाऊँ तो राम दुहाई'।

मनोरंजक संस्मरण

१—ट्रेनिंग कालेज हाय तुम्हारी यही कहानी......

सन् १९४६ की जुलाई में मैं इलाहाबाद स्थित गवर्नमेन्ट ट्रेनिंग कालेज में दाखिल हुआ, दूसरे शब्दों में वहाँ एल० टी० करने गया था। एल० टी० करना और पाल्सन लगाना पर्यायवाची माने जाते हैं। उस समय (अब स्वर्गीय) डा० आई० आर० खान कालेज के प्रिन्सिपल थे वहाँ का वातावरण बहुत ही आतंकपूर्ण था। मैं होस्टल में रहता था। वहाँ के वातावरण से प्रेरित होकर मैंने कमरे के किवाड़ों पर ये लाइनें लिखीं—

'ट्रेनिंग कालेज, हाय तुम्हारी यही कहानी
कर में लैसन नोट्स और आँखों में पानी।'

इसी दौर में मैंने अन्य व्यंग्य कविताएँ लिखीं तथा उन्हें 'बहारें ट्रेनिंग कालेज' के नाम से प्रकाशित कराया, तब जबकि मैं कालेज से कोर्स समाप्त करके निकल आया था क्योंकि बाद में डिवीजन बिगड़ जाने का कोई डर नहीं था।

वर्ष के उपरान्त मैंने होस्टल छोड़ा तो दूध वाले के आखिरी महीने के पैसे नहीं चुकाये। उसने डॉ० खान और चतुर्वेदी जी से मेरी शिकायत की। ज्योंही मैं चतुर्वेदी जी (भैया साहब) के यहाँ गया, वे दूध के पैसे नहीं देने वाली बात पर बरस पड़े।

मैंने अति विनम्र भाव से कहा—भैया साहब दूध के दाम चुकाये, पानी के अवश्य नहीं। क्या साल भर में उसने इतना भी पानी नहीं मिलाया था। फिर क्या था। हँसी से भैया साहब का दारागंज वाला सारा कमरा गूँज उठा और हम साफ बच गये।

२—साहित्य के डाक्टर

लगभग १५ वर्ष हुए, व्रज साहित्य मण्डल का अधिवेशन दिल्ली मे हुआ था। निराला जी भी पधारे थे। उन दिनों निराला जी साहित्य के डाक्टरो से बेहद नाराज थे। कारण यह था कि कुछ ही दिनो पूर्व किसी हिन्दी विरोधी पी० एच० डी० ने हिन्दी काव्य पर व्यंग्य कस दिया था—बड बेहूदे किस्म का। इसलिए निराला जी हिन्दी रूपी मत को डाक्टर विहीन कर देने पर तुले हुए थे। उस गोष्ठी मे मथुरा के एक साहित्य-प्रेमी होम्योपैथिक डाक्टर भी उपस्थित थे। ज्यो ही गोष्ठी समाप्त हुई निराला जी ने अग्रेजी मे पूछा 'इज देयर ऐनी डाक्टर हियर।' क्या यहाँ कोई डाक्टर है। मैंने तुरन्त उन डाक्टर साहब की ओर सकेत कर दिया। निराला जी ने उनकी ओर मुखातिब होकर उनसे अग्रेजी मे हिन्दी काव्य पर शास्त्रार्थ छेड दिया। उधर बेचारे वे डाक्टर अपने को इस अप्रत्याशित परिस्थिति मे



पाकर बडे परेशान हो रहे थे। भला हो बाबू गुलाबराय जी का जिन्होंने निराला जी को समझाया कि ये तो होम्योपैथिक डाक्टर है, साहित्य के डाक्टर नही और तब जाकर कही उनका पिंड छूटा।

३—बूफे

कुछ वर्ष हुए नौचंदी के अवसर पर मेरठ में एक अखिल कवि सम्मेलन हुआ था। प्रसिद्ध साहित्यकार श्री भगवतीचरण सभापति थे। आगुन्तक कवियों के सम्मान में सुप्रसिद्ध कहानी ले श्री कमला चौधरी के निवास-स्थान पर जलपान का आयोजन कि गया था। उस कवि सम्मेलन में मथुरा से ब्रज भाषा के कवि श्र रामलला और मैं सम्मिलित हुए। जलपान का आयोजन 'बूफे शैली में किया गया था। जब लोग वहाँ इकट्ठे हुए तो 'बूफे' प्रणाली की चर्चा भी वहाँ ऐसे ही चल गई। रामलला जी ने भी इस शब्द सुना था। एक टेबल के किनारे हम लोग खड़े थे। टेबल पर एक बड़ी प्लेट में 'पेस्ट्रियाँ रखी थीं। जब प्लेट को लोग दूसरी ओर उठ ले जाने लगे तो रामलला जी ने चुपके से मेरे कान में कहा भइया—एक दो 'बूफे' उसमें से और उठा लो बड़े ही स्वादिष्ट हैं। वहाँ उपस्थित लोगों को जब यह पता लगा कि ब्रजभाषा के भोले भाले कवि ने 'पेस्ट्री' को ही 'बूफे' समझा तो हँसते-हँसते लोगों के पेट फूल गये।

४—पुलिस का बुलावा

लगभग पाँच वर्ष हुए। रविवार का दिन था। मैं बाजार घूमकर भोजन के वक्त करीब ११ बजे घर लौटा। घर वाले परेशान थे। पूछा क्या बात है? बोले, तुम घर से तुरन्त चले जाओ। पुलिस वाले कई बार चक्कर लगा गये हैं। अच्छा हुआ उस वक्त तुम घर पर नहीं थे। मैंने कहा 'भाई मैंने तो अपनी जानकारी में न कहीं चोरी की है न कहीं डाका डाला है। कोई भी गैर-कानूनी काम नहीं किया, पुलिस मेरे यहाँ क्यों आई?' घर वाले पुनः आग्रह करने लगे—देखो इस समय बहस का वक्त नहीं है, तुम चले जाओ न मालूम वे लोग कब आ जायें। मैंने कहा—'भाई कम-से-कम खाना तो खा लेने दो, तुम लोग जिद् करते हो तो चला जाऊँगा। बस यह बहस चल रही थी कि दो सिपाही पुनः आ गये, और दरवाजे पर मेरा नाम लेकर पूछने लगे कि मैं घर पर वापस आ गया कि नहीं। फिर क्या था घर वालों के होश उड़

। पूर्व इसके कि बाहर जाकर मना करे, मैं स्वयं दरवाजा खोल-र बाहर आ गया और उनसे पूछने लगा—क्या बात है ? वे सिपाही ले—"हुजूर कोतवाल साहब ने सलाम बोला है। कप्तान साहब ने लाम बोला है। कप्तान साहब की बदली हो गई है, उनके लिए म को पुलिस लाइन पर पार्टी दी जायेगी। हुजूर कुछ लाइनें उनकी दाई के वक्त पढने को लिख दे तो बड़ी मेहरबानी हो। हुजूर चौथी र आये हैं, बड़े साहब कहते हैं कि जब तक उनसे मिल न लो, लौट-र मत आना। तकलीफ माफ हो।" मैंने उनसे शाम को ४ बजे कर कविता ले जाने के लिए कहकर छुट्टी ली। घर में सबके हरों पर रौनक ही नही आ गई बल्कि कवि होने का रोब भी घर लो पर उसी दिन पड़ा, लेकिन पुलिस वालो का ड्रेस में घर पर धारने का क्या अन्जाम होता है, उसका भी अनुभव उसी दिन आ !

घर में टेलीविजन उर्फ 'टी० वी०' होना भी मुसीबत है!

बुरे ग्रह जब ग्राते हैं कहकर नही ग्राते। मेहमान ग्राते है, ब खुशी होती है किन्तु क्या सचमुच की खुशी होती है, ऊपर से क जाता है 'ग्राइए पधारिए, मुँह पर फीकी मुस्कान भी लाई जाती किन्तु ग्रन्दर-ग्रन्दर परेशानी की एक्सप्रेस चलती रहती है। ग्राते साथ इस बात का पता लगाया जाता है कि ग्रादरणीय ग्रतिथि महोद कब ग्रौर किस गाड़ी से ग्रपनी तशरीफ का टोकरा ले जा रहे है। परे शानियों की कुछ न पूछिये, एक जाती है दूसरी ग्राती है। एक बा दिमाग में फितूर उठा कि टेलीफ़ोन लगवाया जाये, लग गया, उसर जो परेशानियाँ बढ़ी उनके बारे में सुनाने लगूं तो एक महाकाव्य नहं तो खंडकाव्य ग्रवश्य बन जायेगा। पहले ही कोई समझदार शाय कह गये है—'परेशानियाँ मेरी उनसे न कहना सुनेंगे ग्रगर वे परेशा होंगे'।

जाने कौन-सी शुभ घड़ी थी कि टेलीविजन खरीद लाये। घर मे बड़ी खुशियाँ मनाई गई। हमारे ब्रज में कृष्ण जन्म को एक गीत गाय जाता है नन्द घर ग्रानन्द भये, जय कन्हैया लाल की, हाथी घोड़े दिये ग्रौर दीनी पालकी। बच्चे खुश, बीबी खुश। खैर ये सब खुश हुए, ये तो समझ में ग्राया कि बच्चे ग्रधिक खुश नजर ग्रा रहे थे। बाद में यह रहस्य उनकी सत्प्रेरणा से ही श्रीमतीजी ने बड़े मधुर शब्दों में हमसे प्रकट किया था खर्च तो सभी करने पड़ते है एक खर्च यह भी सही ग्राँटी जी का ऐट देखा कितना ग्रच्छा था, मिसेज ग्ररोड़ा के हम उस दिन पार्टी में गये थे 'ड्राइंग रूम' टी० वी० के कारण जगमगा रह या। ग्राप तो मनोविज्ञान के पंडित है, इन बच्चों के साथी जब इनसे

गी० वी० पर देखे नये-नये कार्यक्रमो के बारे मे कहते है तो इनमे 'इन-
फीरीयोर्टी कम्लैक्स' ग्राता है। पूरे रुपये नही हैं तो किस्तो पर ही ले
प्राइये। फिल्म देखने के लिए इधर उधर भटकना पडता है। मैं सुनता
रहा दफ्तर चला गया लौटकर देखा कि श्रीमती जी तथा बच्चो ने मुझ
से ऐसा व्यवहार करना प्रारभ कर दिया है मानो मैं एक बहुत ही
'यूजलेस' व्यक्ति हूँ। सबकी निगाहो मे ऐसा लगता था मानो ये सब
मुझे धिक्कार रहे है। वैसे खाना भी बना था सब लोग मौजूद थे बच्चे
अपना होम वर्क कर रहे थे किन्तु वातावरण ऐसा लग रहा था कि मैं
किसी होस्टल के कमरे मे हूँ जहाँ सुख-सुविधा सब है। किन्तु
आत्मीयता नाम की वस्तु नदारद है। समझ मे नही ग्रा रहा
था क्या करूँ। तुलसीदास याद ग्राये 'धीरज धर्म मित्र ग्रह नारी
आपतकाल परखिए चारी, । हमने धैर्य धारण किया। उस दिन चुप-
चाप भोजन करके सो गये। नीद उचटी-उचटी ग्रायी। सपना देखा।
ऐसा दृश्य देखा मानो घर मे महाभारत हो रहा है, जब शस्त्रो का उप-
योग पूरी तरह से होने लगा तथा एक लाठी हमारे सर मे लगी, तुरत
हमारी ग्राँख खुली। रात के २ बजे थे। हम सो गये। दूसरे दिन दफ्तर
जाकर पहला काम प्राविडेंट फड से लोन लेने की दरख्वास्त दी ग्रौर
सबधित ग्रधिकारियो की खुशामद कर शीघ्र कर्जा मन्जूर करवा लिया।
टी० वी० खरीद कर ले ग्राये। उस दिन श्रीमती जी सचमुच कमल
की भाँति खिली हुई थी। बच्चो का तो कहना ही क्या। दूसरे दिन जब
हम दफ्तर से घर लौटे तो क्या देखते है कि हमारा घर धर्मशाला का
रूप धारण किये हुए था। पता लगा 'चित्रहार' का कार्यक्रम चल रहा
है। ग्राते ही पडोसियो के बच्चे बोले, ग्रंकिल जी ग्रब तो मुँह मीठा
कराइए, ग्रापके घर मे कैसी चहल-पहल हो रही है। हम दिन भर
ग्राफिस मे पिसकर तथा दो बसो मे 'सैन्डविच' होकर लौटे थे। शरीर
हलुआ बना हुग्रा था। समझ मे नही ग्रा रहा था कि कहाँ कपडे
उतारूँ कहाँ बैठूँ। मैंने धैर्य नही छोडा। श्रीमती जी तो नयी साडी पहन-
कर पडोसियो की ग्रावभगत करने मे लगी हुई थी। हम बहुत देर
तक एक ग्रजनबी की तरह इन्तजार करते रहे कि शायद उनकी

नजर हमारी तरफ भी पड़ जाय। जिस दिन पिक्चर होती है उस दि
तो घर में कुम्भ के मेले का दृश्य नजर आता है। उस दिन अम्मा जी क
बुखार आया हुआ था, ७० वर्ष की उम्र है उनकी भी खाट खड़ी क
दी गयी। कुल एक तो कमरा है दफ्तर के एक साथी अपने बहु
जरूरी काम से आये हुए थे बहुत ही जोरदार फिल्म आयी हुई थ
जैसे ही उन्होंने दरवाजा खटखटाया, । मैं गया उनको अन्दर लाया
घर में तो दर्शकों का समूह लगा था बाहर बालकनी में ही उनसे बा
चीत करके बिदा किया उस समय उनके लिए चाय वगैरह बनाने
तो सवाल ही नहीं उठता था, घर में जो नौकर है वे भी टेलीविज
देखने के प्रेमी हैं। प्रेमी ही नहीं है उनके लिए तो नियमित दो घ
टेलीविजन देखना जीवन मरण का प्रश्न हो गया है। श्रीमती जी
इसी मत की हैं कि मानवता के नाते उन्हें भी मनोरंजन करने का पू
अधिकार है, कैसा भी जरूरी कार्य हो, उस समय वे टस से मस नह
हो सकतीं। एक बार बड़ा फजीता हुआ। लड़की देखने को कुछ लो
आये थे। उनकी खातिरदारी हो रही थी। टेलीविजन खुला हुआ थ
देखते देखते उनकी तस्वीरें ऊपर नीचे होने लगीं। ज्यों ज्यों उसे ठीं
करने का कोशिश की त्यों त्यों उसने कबड्डी करना शुरू किया। कभ
एक एक चेहरा तीन तीन रूपों में नजर आ रहा था। कभी कभ
किसी का सर तो कभी किसी के केवल पैर। हमारी श्रीमती जी कहं
लगीं नया सेट है न मालूम आज क्या हो गया। शायद स्टूडियो वे
खराबी मालूम पड़ती है इस पर समधिन जी बोलीं—अजी सेट ही
खराबी है हमारा सेट तो कभी ऐसा नहीं बिगड़ता। सस्ते सेटों में यहं
आफत है। एक नई परेशानी और आयी। श्रीमती की दृष्टि से उस दिन
टेलीविजन सेट ने उनकी काफी इंसल्ट करा दी। दूसरे ही दिन दफ्तर
से छुट्टी ली। टी० वी० को ठीक कराया तब कहीं नया खरीदने के
नये सर दर्द से निजात पायी।

बच्चों की सालाना परीक्षाएं चल रही थीं। टेलीविजन परीक्षाकाल
में बंद रखने का निर्णय सर्वसम्मति से लिया गया था किन्तु जैसे ही
मुन्नी को ड्रामा की खबर मिली वह बोली डैडी कल का पर्चा तो हमने

दिन मे ही तैयार कर लिया था, ड्रामा देख लेंगे तो दिमाग ताजा हो जायेगा । कल का पर्चा भी अच्छा हो जायेगा । बहरहाल यह प्रतिज्ञा भी टूटी । परीक्षा के दिनो मे भी टी० वी० का नियमित दर्शन बन्द नहीं हुआ । जिस दिन आपका मूड न हो उस दिन भी कोई न कोई आ टपकता है । एक साहब को यह भ्रम था कि वे एक सभा मे गए थे उसकी टी० वी० रिपोर्ट शायद उस दिन दिखलाई जायेगी, वे आगे बैठे थे उनको पूरा विश्वास था उनके मुख कमल की एक झलक उन्हे स्वय अवश्य दिखलाई पड जायगी । वे अपनी झलक देखने को बैठे हैं और हम उनकी झलक देख रहे है।



'टैस्ट मैच' के दिनो मे तो अखड कीर्तन का मनोरम दृश्य घर पर नजर आता था । कभी-कभी तो ऐसा लगता था कि मानो हमारा कमरा ही स्टेडियम हो । खाना-पीना-सोना सब ही स्थगित कर दिये गये थे । हमारे घर मे एकादशी व्रत इत्यादि करने को कम ही मानने वाले थे किन्तु धन्यवाद है टी० वी० का कि वर्ष मे दो-चार दिन ये

धार्मिक अनुष्ठान अवश्य करवा देता है। २६ जनवरी, १५ अगस्त तो टी० वी० के कारण घर में टी० वी० दर्शन के प्रेम में इत्यादि को भी तिलांजलि दे दी जाती है। यही नहीं अतिथि का खर्च भी उन्नति के मार्ग पर अग्रसर है। पिक्चर वाले दिन विशेषकर सर्दी के मौसम में पकौड़ियाँ अनिवार्य मानी गयी है। को अकेली चाय से काम चलाया जा सकता हैं। घर में कभी रुचि विभिन्नता के कारण युद्ध के दृश्य भी उपस्थित हो जाते हैं। कार्यक्रम में बेबी को रुचि है तो साहबजादे को दूसरे कार्यक्रम देखने श्रीमती जी गृह संसार मे दिलचस्पी रखती है। बहरहाल परिण यह होता है कि प्रारम्भ से अंत तक टी० वी० दर्शन का लाभ लेते है। और किसी ने सच कहा है कि परेशानियाँ भी आदत में जाते आसान हो जाती है। सच पूछिए तो टी० वी० के आने पर घर में परेशानियाँ बढ़ जाती ।।है पर वे वास्तव में मधुर और मजेदार ह होती हैं।

श्री मुफ्तानन्द जी से मिलिये

भगवान ने इस संसार रूपी अजायबघर में भाँति-भाँति के जीव-जन्तु छोड़े है। कुछ काले, कुछ गोरे, सुन्दर, असुन्दर, भोले और जल्लाद। अलग-अलग स्वभाव, अलग-अलग चाल-ढाल। मेरे पड़ोस मे एक सज्जन रहते हैं, नाम है उनका मुफ्तानन्द जी। यथा नाम तथा गुण। 'माले मुफ्त दिले बेरहम' क्या मजाल, कि कही दावत का झूठा भी निमन्त्रण मिल जाय और वह जाने से रुक जाए—चाहे बीमार ही क्यों न हों, और चाहे बाद मे, कुछ भी क्यों न भुगतना पड़े। ऐसे ही एक अवसर पर वह दावत मे जा रहे थे। मुझसे बोले भाई, अरे दो ढाई रुपये का खाऊँगा, बारह आने का मिक्सचर पीलूगा, तब भी फायदे मे ही रहूँगा।

'मुफ्त का चन्दन घिस मेरे नन्दन' ब्रजभाषा की लोकोक्ति है। श्री मुफ्तानन्द जी इसके ज्वलंत उदाहरण हैं। शौक सब करेंगे। पान का भी शौक जान-पहचान वालो की जेब से ही होता है। आप पान खा रहे है, आपसे नमस्कार किया और पान पर हाथ बढ़ाया। आप सिगरेट पी रहे है, आपसे सिगरेट झपटी यही तक नहीं, यदि आप ट्रेन में सफर कर रहे हैं, तो किसी अजनबी से भी निसंकोच रूप से, अपने आवश्यक शौक पूरा कर लेते हैं।

उनका सिद्धान्त है, कि ऐसा करने से दुर्व्यसन अपनी सीमा पार नहीं कर पाते है, उनकी यह भी मान्यता है, कि जो स्वाद मुफ्त का पान खाने, मुफ्त की सिगरेट पीने में आता है, वह पैसा खर्च करने पर कहां ?

एक दिन मैं बाजार मे लौटा। देखा कि श्रीमान मुफ्तानन्द गली में एक फटी पतंग लूटने को बेतहाशा दौड़े जा रहे है। यदि वह उन्हें

मिल गई तो वे उसे प्राप्त करके कृतकृत्य हो जायेंगे। यद्यपि उड़ाने की अवस्था बहुत पीछे छोड़ चुके है, तथापि उस मुफ्त को कैसे छोड़ दें।

मेरे घर दो दैनिक पत्र रोजाना आते हैं मुझे उनकी प्रसादी मिल पाती है, जब श्रीमान मुफ्तानन्द भोग लगा लेते हैं। मोहल्ले कौन कौन लोग अखबार मँगाते है, उनकी नामावली उन्हें कंठस्थ समय-समय पर सब पर कृपा करते हैं। उनका कथन है, कि प्र मनुष्य को अपने ज्ञान वर्द्धन के लिए, अधिक से अधिक समाचार पढ़ने चाहिये, किन्तु पैसा खर्च करके समाचार पत्र पढ़ना वह गौ समझते हैं।

उन्होंने भारतवर्ष की जनसंख्या बढ़ाने में काफी योग दिय ईश्वर की कृपा से उनके छः लड़के और चार लड़कियाँ हैं। सबको देना,वह अपना पावन कर्त्तव्य समझते हैं। इसके लिए सदैव फीस माफ कराने के चक्कर में स्कूलों के मैनेजर और प्रिंसिपलों घर पर धरना देते रहते हैं। अपने इस लक्ष्य की सिद्धि के लिए दाम, दंड ,भेद सबका प्रयोग करते है, उनकी तिकड़म से चाहे और गरीब विद्यार्थी रह जाएँ लेकिन वह अपने किसी बच्चे की नहीं देंगे।

एक दिन सुबह ही मेरे घर पधारे, बोले—भाई, जरा कालि ग्रन्थावली दे दो। 'मैंने कहा, आपको उसकी क्या आवश्यकता गई? उत्तर दिया—मेरे एक मित्र को चाहिए, उससे मेरा लाभ वाला है। अब आप बताइए लाभ होगा उनका, और पुस्तक चा मेरी। मैंने कहा 'डीयर मुफ्तानन्द पुस्तकें देने के बाद बहुत कम वा आती हैं। यदि आप दो दिन में लौटा दें, तो ले जाइये।' सारांश है कि वह पूरा वायदा करके ले गये। आज दो वर्ष हो गए, पुस वापिस करने का नाम नहीं लेते। इस प्रकार अनेक पुस्तकें अलमारी बन्द रखते हैं, क्या मजाल कि आपकी दृष्टि भी उन पर पड़ जाय।

सिनेमा देखने का भी उनको शौक है। 'फ्री पास' प्राप्त करने वह अत्यंत कुशल है। उन्हें यह किसी प्रकार पता लगना चाहि

कि आप सिनेमा जा रहे हैं, तुरन्त आपके साथ। जेब खाली। टिकट तो आप लेंगे ही और वह सिनेमा देखकर कृतार्थ करेंगे ही। एक दिन मुझ पर कृपा दृष्टि हुई। कहीं से एक थियेटर के पास ले आये थे। थियेटर रात्रि के १ बजे समाप्त हुआ। मैंने बीच में कई बार उनसे घर वापिस चलने को कहा, लेकिन बराबर यही दोहराते रहे 'मुफ्त मे क्या बुरा है'। उनका विचार है, कि मुफ्त देखने को मिले तो रात भर की नींद एक रद्दी से रद्दी थियेटर देखने के लिए बलिदान की जा सकती है।

नगर मे पानी के बरफ की फैक्टरी खुली। अपने विज्ञापन के लिए फैक्टरी के मालिक महोदय ने दो दिन तक मुफ्त बरफ बांटने का ऐलान शहर में करवा दिया। मुफ्त खोरों के सरताज, हमारे मुफ्तानन्द जी भी वहां घंटों समाप्त करके 'क्यू' मे योगी की तरह साधना कर के एक एक टुकडा बरफ का दोनों दिन लाए। पहले दिन अपनी जूती वहां खो आए और दूसरे दिन नई कमीज वहां फड़वा आए, किन्तु मुफ्त मे मिले उस बरफ के आगे यह नुकसान नगण्य था।



श्री मुफ्तानन्द की तबियत कभी खराब न हुई हो, यह बात नहीं है, किन्तु आज तक दवा तो क्या शीशी के पैसे तक भी उन्होंने अपनी

जेब से खर्च नहीं किए। डाक्टर, वैद्य, हकीम सभी से दोस्ती है और आखिर में सलामत रहे सरकारी अस्पताल। आप पूछेंगे कि डाक्टर तो किसी के दोस्त नहीं होते बस यही तो कबीर का रहस्यवाद है। मुफ्ता नन्द जी बड़े उस्ताद हैं। डाक्टर तो दुनिया की नब्ज टटोलते हैं, और मुफ्तानन्द जी डाक्टरों की। किसी डाक्टर को अपनी खुशामद पसन्द है, तो उसकी खुशामद। वैद्यजी कीर्तन के शौकीन हैं, तो उनके यहां कीर्तन। गरज यह कि किसी न किसी प्रकार पहले उनसे मित्रता औरफिर मुफ्त में दवाई।

वैसे यह बारह महीने बीमार न भी हों तो अस्पताल से टॉनिक तो नित्य भरवा ही लेते है। मैंने एक दिन कहा, कि व्यर्थ में दवाइयां मत पिया कीजिए। बोले—यार पैसे तो नहीं खर्च होते। मुफ्त की चीज कभी नुकसान नहीं करती। इहलोक को मुफ्त में सुधारकर मुफ्तानन्द जी, अब परलोक में भी मुफ्त जीवन-यापन करने की टोह में रहते हैं। उनका दृढ़ विश्वास है कि जब भगवान ने ही इस प्रकार आनन्द से निभा दी, तो स्वर्ग का टिकट खरीदने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। भगवान मुफ्त में ही उनकी मुक्ति कर दें, यह प्रार्थना करते हुए मुफ्ता नन्द जी को हम साष्टांग दंडवत करते हैं।

मजे बस के सफर मे

क्या आपने बस मे यात्रा की है ? आपने की हो या न की हो। हम तो बस की नस-नस को जान गये हैं। बस मे बैठ-बैठकर बस से मोहब्बत हो गई है। सचमुच बस मे रस है। वह भी एक नही, साहित्य शास्त्र मे वर्णित दसो रसो की अनुभूति बस मे होती है। विद्यार्थियो को भी बसो के माध्यम से रसो का ज्ञान कराया जा सकता है।

शृगार रसराज माना जाता है। बस मे इस रस की अनुभूति भी प्राप्त होती है। आप जहां बैठे है उसके आगे ही केवल महिलाओ के लिए खाली सीट पर दो लडकियाँ जूडो मे फूल लगाए विराज रही हैं और आप उस सुगन्ध से मन मे आनन्द का सचार अनुभव कर रहे हैं। इसी प्रकार कभी ऐसा भी हो जाता है कि आपको सीट नही मिली, आप खडे-खडे चल रहे हैं। एक युवती आपके पास सटकर खड़ी हो जाती है। किसी कारण से ड्राइवर 'ब्रेक' मारता है और ऐसा धक्का लगता है कि वह युवती आपके बिना प्रयास किए ही आपके वक्ष स्थल पर आकर लग जाती है। ये शृगार रस अनुभव करने की स्थितियाँ हैं जो बस मे अनायास ही प्राप्त हो जाती हैं। नारियां तो पुरुषो की सीट पर बैठने का भी अधिकार रखती हैं। आपकी सीट पर ही बेझिझक युवती आकर बैठती है, आप वृद्ध हैं कि सरक रहे हैं। वह प्रगतिशील है कि आपसे कोई दुराव नही रखना चाहती और स्पर्श-सुख देने मे उदार दृष्टिकोण अपनाती है। इस प्रकार बस मे रसराज शृगार का वर्चस्व प्राय. दृष्टिगोचर होता रहता है।

हास्य रस की अनुभूति तो बस मे आदि से अत तक होती रहती है। उद्धव जब कृष्ण के भेजे हुए गोकुल पहुँचे तो प्राय. सभी गोपियाँ एक-एक करके पूछने लगी, "हमको लिख्यो है कहा, हमको लिख्यो है

कहा, कहन सबै लागी।" इस प्रकार के दृश्य बस आते ही उपस्थित हो जाते हैं। यह कश्मीरी गेट जाएगी, यह नेताजी नगर जाएगी। यह राजेन्द्र नगर जाएगी इन दृश्यों को देख हास्य का उद्रेक होता है। एक मोटे ताजे लाला जी ड्राइवर की सीट के पास वाली सीट पर बैठे है। उनका उतरने का स्थान आ गया है। बस ऐसी भरी हुई है मानों बैलगाड़ी में कूट-कूटकर भुस भर दिया हो। लालाजी भीड़ को चीरकर निकलना चाहते हैं। कंडक्टर चिल्लाता है और किसी को उतरना है, और लाला जी की मुख मुद्रा से यह पंक्ति निकल रही है, 'कहा भी न जाए चुप रहा भी न जाय।" और इस दृश्य का अवलोकन कर सहृदय गणों के अन्दर हास्यरस का संचार हो रहा है।



करुण रस का उद्रेक भी बस में हो जाता है। बस का स्टाप नहीं है, बस तीव्र गति से बढ़ रही है। उन्हें तो उतारना है वे उत्साही है-। जवानी का जोर है कुछ हौसले भी है। वे चलती बस से हिम्मत के साथ कूद जाते हैं। उधर से एक ट्रक आता है और उन पर से होता हुआ निकल जाता है। वे सीधे बैकुण्ठ धाम पहुँचे जाते है और इधर करुण रस की निष्पत्ति हो जाती है।

वीर रस का स्थायी भाव उत्साह है। बिना उत्साह के कोई बस की ओर क्यों जाएगा? बस के इन्तजार में बस स्टैंड पर सन्तों की भीड़ लगी हुई है। बस रूपी प्रेयसी को सब लोग टकटकी लगाकर देख रहे है और गुनगुना रहे हैं 'आ जाओ -आने वाली आजा' वे पधारती हैं, पूर्व इसके

कि उतरने वाले उतर सकें बाहर खड़े हुए नर-नारी उत्साहपूर्वक दरवाजे में घुसने का एक साथ प्रयास करते हैं जोर आजमाते हैं, शक्ति प्रदर्शन का यह स्वर्ण अवसर होता है। यदि आज महाकवि भूषण होते तो 'शिवा बावनी' के स्थान पर 'बस भवानी' काव्य का सृजन करते। कभी-कभी बलवान निर्बल की गर्दन पकड़कर उसे बाहर निकालते हुए स्वयं प्रवेश करते हुए विजय की भावना का अतुलित आनन्द प्राप्त करता है। ऐसे अवसरों पर वीर रस की निष्पत्ति हो जाती है।

भयानक रस की अनुभूति भी बस के माध्यम से हो जाती है। आप बस में बैठ चुके है। बस चल देती है। आपको रास्ते में समाचार मिलते हैं कि विद्यार्थी बसों को 'हाईजैक' कर रहे है। आप के हृदय में भय का भाव उदय हो जाता है। आपको आशंका है कि आप अपने गन्तव्य स्थान पर पहुँच पायेंगे या नहीं ? आपको वहीं उतर जाना है जहां विद्यार्थियों का दल मिल जाये। यह लीजिये विद्यार्थी गण आ गए। सब नर-नारी बाल-वृद्ध यात्रा के ही मध्य उतर रहे हैं और इस प्रकार भयानक रस की निष्पत्ति हो रही है।

वीभत्स रस भी कभी-कभी बस मे अपना स्वरूप ज्ञात करा देता है। आपके पास की सीट पर एक जुकाम खांसी से पीड़ित विराज रहे है। प्राचीन परम्परा के पोषक है। रूमाल रखना अनावश्यक समझते हैं उन्हे बार-बार छींक आ रही है और वे नासिका से निकलने वाले तरल पदार्थ को आप वाली सीट की ओर अग्रसरित कर रहे हैं जैसे दफ्तरों मे फाइलों को अग्रसरित किया जाता है। उन्हे खांसी आती है। और वे प्रेमवश आप को सम्बोधित करते हुए खांसते हैं यही नहीं वे अपने-मुख से भी अनावश्यक पदार्थ खिड़की से बाहर निकालते हैं जिसके छीटे आप पर भी पड़ते हैं और इस प्रकार वीभत्स रस का उद्रेक हो जाता है।

अद्भुत रस की प्रतीति भी बस मे समय-समय पर होती रहती है। आप बस स्टेंड पर खड़े हैं। जिस नम्बर की बस आप चाहते है उसे छोड़कर अन्य नम्बरों की बस बरावर आ रही है। लेकिन आपकी प्रेयसी बस के दर्शन बहुत समय से नहीं हो पा रहे है और आपको

अचम्भा हो रहा है और इस प्रकार आपको अद्भुत रस का भास होने लगता है।

रौद्र रस भी बस में उत्पन्न हो जाता है। बस स्टाप पर रुकी हुई है, 'आगे बढ़ो आगे बढ़ो' रूपी शंखनाद आपको आगे बढ़ने के लिए उत्साहित कर रहा है। आप हैं कि भीड़ को चीरते हुए आगे बढ़ रहे है। आपकी चरणपादुका से एक व्यक्ति का पैर कुचल जाता है और क्रोध के वशीभूत होकर आपको सूरदास कहकर सम्बोधित करने लगता है। इधर कुचलने वाला कहता है ऐसे ही रईस हो तो अपनी कार खरीद लो, बस में क्यों बैठते हो और इस प्रकार रौद्र रस की अनुभूति प्राप्त होती है? सचमुच बस में सब रसों की अनुभूति हो जाती है।

क्या आप शादी करने जा रहे हैं ?

शादी वह लड्डू है जो खाता है वह भी पछताता है जो नही खाता वह भी पछताता है। प्रसिद्ध दार्शनिक सुकरात से जब किसी ने पूछा 'अविवाहित व्यक्ति अधिक सुखी है अथवा विवाहित' तो उसने उत्तर दिया दोनो स्थितियो मे अन्त मे पछताना पडेगा, एक पुरानी कहावत है, "फूले फूले फिरत है आज हमारो व्याहु। ढोल बजाय-बजाय के देत काठ मे पाँव।" सचमुच होना यही, है हमारी जिस दिन शादी हुई थी हम फूलकर कुप्पा हो गये थे। उस नाटक के हम ही तो हीरो थे। हमको ऐसे सजाया गया था जैसे आजकल ड्रामा मे लोगो को सजाया जाता है। बहन आरती उतार रही थी, आगे-आगे बाजे बज रहे थे, मम्मी डैडी तो फूले नही समा रहे थे। हमारी तरफ ही सबकी आखे लगी हुई थी। घोडे पर बैठने से पहले हमारे शरीर की त्वचा को उबटन करके और मुलायम बनाया गया था। बहरहाल यही सब तमाशा 'होल सेल' मे आयोजित कियागया था। सासूजी ने हमारी न्यौछावर की थी।

यह तो था विवाह का शुक्ल पक्ष। अब आइए कृष्ण पक्ष पर। ईश्वर झूठ से बचाए, यदि हमारा विवाह न हुआ होता—तो ये कि 'ब्याह ने हमको निकम्मा कर दिया वरना हम भी आदमी थे काम के'। श्रीमती जी के नखरे उठाते सारी उम्र निकल गई है, बुड्ढी होने को आई किन्तु नखरे जवान होते जा रहे है। उनकी खुशामद करने मे इतने माहिर हो गए है कि वे लोग जिनकी बीवियाँ नाराज हो जाती हैं हमसे सलाह लेने लगे कि भाई वह नुसखा हमे भी बताइये। दफ्तर मे अफसर और घर मे बीवी, इन दो पाटो मे पिस के रह गए। अगर शादी न करते' तो नौकरी ही क्यो करते ? सांड का जीव

आदर्श होता और मस्त घूमते। जो मिल गया खा लिया जहाँ चाह पड़े रहे। हम क्यों सुबह से ही बस के क्यू में नम्बर लगाते। जितनी खुशामद अफसर की और बीवी की अब तक की, इतनी भगवान की करते तो संसार सागर से बेड़ा पार हो जाता।

कभी-कभी तो यह मन करता है कि उस पंडित जी को पकड़कर कहूँ कि महाराज मुझको तो बख्श देते। आप तो भाँवर डलवाकर और अपनी फीस लेकर चलते बने लेकिन हमारे गले में यह ढोलक बाँध गए जो दिन-रात बजती रहती है। अपने कई साँड मित्रों को देखता हूँ तो बड़ी ईर्ष्या होती है। काश इनका सत्संग शादी से पहले हो गया होता तो हम इस जंजाल में क्यों पड़ते? शादी से पूर्व अपने को महाराणा प्रताप एवं शिवाजी से कम वीर, निर्भीक एवं साहसी नहीं समझते थे, लेकिन शादी के बाद तो चूहे हो गए। औरों के सामने तो जबान चलाने का प्रश्न ही नहीं उठता जब श्रीमती जी के सामने ही भीगी बिल्ली बनकर खड़े रहना पड़ता है। रोमांस कौन नहीं करना चाहता। जिन खोजा तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैठ। भगवान दयालु हैं। मौके आते ही रहते हैं किन्तु रोमास का श्रीगणेश होते ही बीवी का ध्यान आता है और सर के बालों पर दया आती है और मन मार कर रह जाना पड़ता है। विवाह से बाद तो प्रेम क्षेत्र में आजमाइश की भी तो गुंजाइश नहीं रहती। यह किसका पत्र है? यह रोज किसका फोन आता है? उस दिन सिनेमा हाल में मुस्कराकर किसने नमस्कार किया था। इन्कमटेक्स अफसर भी इतने प्रश्न नहीं करता जितना कि बीवीजी करती है। कदम-कदम पर सावधानी बरतनी पड़ती है? जहाँ चूके कि जहन्नुम रसीद हुए। मैं ही क्या, अपने कई मित्रों को जानता हूँ जो बड़े अफलातून बनते हैं बड़े तीसमारखाँ बनते हैं, दफ्तर में अपने मातहतों पर सदैव रौब रखते है। उन्हीं को मैंने घर में बीवी के सामने इस दयनीय स्थिति में देखा है कि उन पर तरस आ जाता है। हम भी ऐसे ही लोगों की दुर्दशा देखकर अपने मन को समझा लेते हैं कि भाड़ मे कहीं ठंडक नहीं जहाँ देखो वहाँ मामला गरमागरम है।

समझदार लोगों ने ठीक ही कहा है कि बीवी से आर्थिक मामलों

पर कभी वाद-विवाद न करो किन्तु हम आदत से मजबूर हैं। उनके लिए पैसे का कोई महत्व नही। ऐसे खर्च करती हैं जैसे ,चेनस्मोकर' लगातार सिगरेट पीते रहते है। शादी करके एक बात का तो आराम हुआ कि बैंक जाने के झंझट से बच गए, कुछ बचता ही नही कि बैंक मे जाया जाए।

हवा चलती रहती है किन्तु दिखलाई नही देती उसी प्रकार श्रीमती जी का गुस्सा अन्दर ही अन्दर रहता है किन्तु मालूम नही देता। वे शीत युद्ध में विश्वास करती हैं। आपके कार्य सब हो जाएंगे। आप स्वयं मानसिक रूप से इतने परेशान हो जाएँगे कि स्वयं शरणागत



होने को तैयार हो जाएँगे और कहेगे कि देवी, इस शीत युद्ध को समाप्त करो। मैं हार स्वीकार करता हूँ। मैं एक सौ बार बिना कसूर किए ही क्षमा मांगता हूँ कुछ भी दण्ड दे दो किन्तु अब कृपा करो। अब तक की जिन्दगी मे कितने अमूल्य घण्टे इस मनावन-समारोह मे खर्च हुए होगे कि उनकी गिनती भी मुश्किल है। श्रीमती जी का यह शस्त्र इतना कारगर है कि जब वह देखती है कि उनकी इच्छा का कार्य नही हो पा रहा है वे तुरन्त कोप-भवन मे चली जाएंगी और क्या

मजाल जब तक उनकी इच्छा की पूर्ति न हो जाये, वे कोप भवन से नहीं निकल सकतीं। हम भी क्या करें?

मोलियर फ्रांस का प्रसिद्ध हास्य नाटककार हुआ है। एक बार किसी ने मोलियर से पूछा 'कुछ देशों में राजकुमार १४ वर्ष की आयु में विवाह नहीं कर सकता।' मोलियर ने उत्तर दिया, कारण स्पष्ट है। एक राज्य पर शासन करने से एक स्त्री पर शासन करना कहीं अधिक मुश्किल है। ऐसी कहानियों से अपने दिल को सन्तोष देते रहते हैं कि हम किस खेत की मूली हैं। विश्वास कीजिए, लिखते-लिखते थक गए थे। पास के एक रेस्तरां में चाय पीने चले गए। एक टेबिल पर नवयुवकों का एक दल बैठा हुआ चाय पी रहा था। बातचीत भी चल रही थी। 'शायद एक नवयुवक के घरवाले उससे शादी करने का आग्रह कर रहे थे और वह कुछ मूड में नहीं था। और जब उसके मित्र शादी कर लेने की सलाह दे रहे तो उसने गुस्से में कहा, 'शादी के वक्त तो वी० आई० पी० बना देते हैं चाहे बाद में छोले-भटूरे बेचने पड़े' मैं सुन रहा था। सोचने लगा इस नवयुवक के ग्रह कुछ अच्छे मालूम पड़ रहे हैं लेकिन क्या पता नाटक का अन्त क्या हो?

प्रेम मार्गी नवयुवक एवं नवयुवतियों को भी रोमांस का मजा विवाह पूर्व ही मिल पाता है, विवाह होते ही नौन तेल लकड़ी की फिक्र पड़ती है। विवाह से पूर्व के प्रेम पत्र तो अतीत की मधुर मूर्तियाँ बनकर रह जाते हैं। विवाह से पूर्व प्रेयसी के कर कमलों का स्पर्श ही प्रेम होता है। बाद में प्रेमी प्रेयसी के कोमल हाथों से अपनी आत्म-रक्षा ही करता दिखलाई देता है।

शादी के बाद सेवा करने के लिए क्षेत्र विस्तृत हो जाता है। सास जी, ससुर जी, साले जी तथा साली जी की हाजिरी लगाना जरूरी होता है। मम्मी-डैडी को इग्नोर भी किया जाता है। किन्तु ससुराल की बिल्ली का भी ख्याल करना पड़ता है। अब आप ही बताइए साली के भइया का रिश्ता होने पर है और आप है कि दफ्तर से 'फ्रेंचलीव' लेकर बेतहाशा भाग रहे है। माने न माने, इन सब करसतों के पीछे श्रीमती जी का डर ही कार्य करता है। हम तो पापड़ बेलते-

बेलते उस दिन को याद किया करते है जिस दिन शादी रूपी पिजरे मे बडे जोश के साथ खुद घुसकर बैठ गये और पिजरे के तोता हो गए। आप कितने ही विद्वान है, कलाकार है, कवि है, आर्टिस्ट है किन्तु उनके सामने तो आप जिन्दगी भर छटकी ही रहेगे।

कुछ दिनो कीर्तन मे जाने लगे। भगवान मे मन लगने लगा। प्रवचन सुनने लगे। प्रवचन मे बताया कि ससार की मोह-माया छोडने से ही भगवान की प्राप्ति हो सकती है। हमने निश्चय किया कि यदि मौत मिल गई तो आवागमन के चक्कर से छूठ जाएगे तो इस जन्म मे फँस गए, अगला जन्म ही जब नही होगा तो शादी के चक्कर से ही बच जाएगे। ज्योही हमने सन्यास लेने की आज्ञा श्रीमती जी से मागी तो वे बहुत ही नाराज हो गई और बोली, 'श्रीमान् जी मैं तो स्वय ही गृहस्थी से परेशान हूँ आप अपने बाल बच्चो को सभालिए मैं तो समाज सेवा करूँगी और मौका लग गया तो चुनाव लडकर देशसेवा करूँगी। कहिए आप कब से घर गृहस्थी का कार्य सम्भाल रहे हैं ?' हमारे होश उड गए और बडी मुश्किल से उन्हे रास्ते पर लाए। उस दिन से हमने तो कीर्तन मे जाना छोड दिया। इसलिए यदि आप विवाह करने जा रहे हो तो पुन एक बार सोच लीजिए। यदि कर चुके है तो, 'अब पछताए होत क्या जब चिडिया चुग गई खेत'।

टालू टेब्लेटस

आप किसी के काम को करना नहीं चाहते, उस व्यक्ति से मना भी नहीं करना चाहते, ऐसी स्थिति में टालू टेब्लेट्स का इस्तेमाल किया जाता है। आप पूछेंगे कि ये टेब्लेट्स किस कम्पनी ने बनाई हैं ? किस दुकान पर मिलती हैं ? इन प्रश्नों का उत्तर है कि ये गृह उद्योग के रूप में हर व्यक्ति बना लेता है। हवा दिखाई नहीं देती, चलती रहती है। टालू टेब्लेट्स भी दिखलाई नहीं देते किन्तु अहर्निश इनका प्रयोग होता रहता है।

टालने की कला का इतना विकास हो गया है कि लोगों ने टेब्लेट्स बनाकर रख लिए हैं। हमारे एक मित्र हैं। वे इसका देसी नाम 'गोली देना' का प्रयोग करते है। धनवान व्यक्ति हैं। साहित्यिक रुचि के हैं। कल मिले तो मैंने पूछा—साहित्य परिषद वाले कल आये होंगे। बोले—डाक्टर साहब, हमने तो गोली दे दी। किस-किस को चन्दा दें। नित्य ही कोई न कोई आ जाता है। पहले तो में भड़का कि क्या सचमुच इन्होंने गोली मार दी ? अरे, चन्दा न देते, गोली मारने की क्या आवश्यकता थी ? अब तो मै समझ गया हूँ वे दिन भर गोली देते रहते हैं। कभी कभी तो अपने बारे में भी उनसे पूछ लेता हूँ कि यार गोली तो नहीं दे रहे ? वे मुस्कराते है और विश्वास दिलाते हुए कहते है, 'चतुर्वेदी जी, गोली देने को और ही बहुत है क्या आप ही रह गये हैं और मैं आश्वस्त हो जाता हूँ। किस्सा चन्दा माँगने का चल रहा था। इस मामले में बड़े बड़े लोग भी टालू टेब्लेट्स का प्रयोग करते हैं। 'देखिए साहब, मैं तो सिर्फ दुकान पर समय काटने चला आता हूँ। दुकान से मेरा कोई लेना देना नही। लड़का 'टूर, पर गया हुआ है। वही सब काम देखता है। आप लोग उससे ही मिलियेगा।' उन्होंने

टालू-टेब्लेट्स दे दी और वे कारगर भी हो गई। वे सज्जन दुकान के सौ नये पैसे मालिक थे. आप कुछ जमा कराना चाहे तुरन्त जमा कर लेंगे किन्तु चन्दा देने के लिए लडके की उपस्थिति आवश्यक है। हम चन्दा लेने का कार्य करते रहे हैं। हमको इसके विपरीत भी अनुभव हुए। कही ऐसा भी मिला कि लडका दुकान पर है। वह कहता है जो चन्दा वगैरह देने का कार्य तो पूज्य पिताजी करते है, हम तो दुकान का काम। पिताजी हरिद्वार गये हैं, वे लौट आवे तो आप लोग आइए। वे कब आयेंगे कोई पता नही। टालू-टेब्लेट्स का डबल उपयोग किया गया। बाप ने भी किया और बेटे ने भी।



टालू मिक्स्चर दे देना नई कला नही है। रामचन्द्र जी से मैडम शूर्पनखा विवाह करने का प्रस्ताव लेकर आई थी 'तुम सम पुरुष न मो सम नारी, यह सजोग विधि रचा विचारी'। रामचन्द्र जी ने उसे लक्ष्मण की ओर टाल दिया। लक्ष्मण न फिर रामचन्द्र जी की ओर टाल दिया। अत मे शूर्पनखा की नाक और कान लक्ष्मण जी ने काट लिए। आजकल टालने की कला मे, अधिक सहनशीलता का समावेश हो गया है। टालू-मिक्स्चर खिलाने वाला तो समझ ही रहा है कि वह इस कला का प्रयोग कर रहा है किन्तु जिसको टाला जा रहा है वह भी समझने लगा है। इसलिए अब इतनी तीव्र प्रतिक्रिया नही

होती कि नाक कान काट लन की नौबत आ जाय। हाँ, विवाह इत्यादि जब तय किये जाते हैं, उन दिनों 'टालू टेब्लेट्स' की खपत बहुत बढ़ जाती है। लड़के वाले 'टालू-टेब्लेट्स' के सहारे मामले को बरसों तक लटकाते रहते है। साफ तौर पर मना भी नहीं करेंगे और स्वीकृति भी नहीं देंगे। लड़का स्वतन्त्र है बिना उसकी मर्जी हम कुछ नहीं कर सकते। लड़का कुछ बोलता ही नहीं है। लड़के के नानाजी बद्रीनाथ की यात्रा पर गए है, वे जरा लौट आवें। लड़के की मौसी अमरीका में है। इस लड़के को बचपन से उन्होंने ही पाला था, बिना उनकी मर्जी हम कुछ जवाब नहीं दे सकते। ये वाक्य ही टालू-टेब्लेट्स है। इस तरह सैकड़ों टालू-टेब्लेट्स शादी के सम्बन्ध तय करते समय प्रयोग में लाये जाते हैं।

काश हम अभिनेता होते!

एक कहावत है 'मेरे मन कछु और है, वाके मन कछु और' हमारे दिल मे तो बचपन से ही यह लगन थी कि भगवान हमे अभिनेता बना दे। मैं वैसे भाग्यवादी नही हूँ किन्तु मुझे अनुभव हुआ है कि जब तक तकदीर साथ नही दे आप कितनी भी तदबीर करें, सब बेकार जाती हैं।

मैं कालिज मे पढता था। साथ का एक विद्यार्थी जो अनेक वर्षों से फेल हो रहा था, अभिनेता बन गया। कुछ मित्र उसके चित्र ले आए। एक पान की दुकान पर उसे टाग दिया गया। आप यकीन करेंगे कि सारे कालिज के विद्यार्थी जिनमे लडकियाँ भी शामिल थी, जब तक उस दुकान पर एक झाँकी उस अभिनेता के चित्र की न करते तो क्या मजाल कि वे कालेज के अन्दर घुस जाए। यही नही, वी० पी० द्वारा अनेक फोटो मॅंगवाए गए तथा उन्हे होस्टल के कमरो मे टाँगा गया। अभिनेता के एक भक्त तो इतने रस विभोर हो गए कि उसे हाल मे टाँग आये। प्रिन्सिपल को पता लगा तो उसने उसे हटवाने का आर्डर दे दिया। लडको मे यहाँ तक निश्चय हो गया कि यदि यह चित्र यहाँ से हटाया गया तो हम हडताल कर देंगे। ये हमारे अराध्य देव का चित्र है। जो इसे हटायेगा वो इस दुनिया से हट जायगा। इस कालिज मे हमारा यह भी अधिकार नही कि हम अपने पूज्य, आदरणीय, आदर्श चरित्र का चित्र लगा सकें। ताकि समय-समय पर उनके चरित्र से हम प्रेरणा प्राप्त करें और अपना जीवन सफल बना सकें। मामला बढता चला गया। प्रिन्सिपल ने शान्ति भग के खतरे से कालिज एक हफ्ते को बन्द कर दिया। समझौते की वार्ताए चली और अ त मे इस बात पर हड-ताल तोडी गई कि कालिज के हालसे हटाकर उस चित्र को होस्टल के

'कामनरूम' में लगा दिया जाय। आश्चर्य तो इस बात का रहा है कि हड़ताल शत प्रतिशत सफल रही। लड़कियों का जो प्रायः हड़ताल में साथ नहीं देती थीं उनका भी पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ।

मैं पढ़ने में बहुत दिलचस्पी लेता था। प्राय कक्षा में प्रथम या द्वितीय रहता था। मेरे-मन पर ऐसा प्रभाव पड़ाकि इन किताबों से सर मारना जीवन को नष्ट करना है। पढ़ो, इम्तहान पास करो, नौकरी के लिए भटको, किसी की खुशामद करो, सिफारिश कराओ और फिर नौकरी भी मिल जाय तो वहां भी जमाने भर के, दुनिया भर के, किस्से करते फिरो, यदि आप नेता हो जाओ तो सोने के दिन और चाँदी की रातें हो जाँय। 'हर्द लगे न फिटकरी, रंग चोखा आवे।' चुपचाप कालिज के पास के एक ज्योतिषी के यहाँ पहुंचे। ज्योतिषी जी के सामने स्लेट और पास में पत्रा आदि विराज रहे थे। अन्य भक्त लोग भी बैठे हुए थे। ज्यों ही मेरा नम्बर आया मैंने उनके चरणों में भेंट रखी। छूटते ही बोले बेटा, तुम अभिनेता बनना चाहते हो क्यों है न यह बात।' मैंने तुरन्त ज्योतिषी जी के चरण छू लिए और कहा 'महाराज आप तो घटघट के जानने वाले है। अब तो ऐसा मुहूर्त निकालें कि जाते ही मेरा कार्य हो जाय। वे बोले, बेटा, एक प्रश्न का उत्तर तो मिल गया, दूसरे प्रश्न की फीस अलग से देनी पड़ेगी। मेरे बटुए में जो कुछ भी बचा था, वह नये पैसे भी उनके चरणों में रख दिये और कहा 'महाराज अब मेरे पास देने को कुछ भी नहीं है, अब आप ऐसा फिट मुहूर्त बता दें कि जाते ही काम हो जाय। उन्होंने मुझसे किसी भी पुष्प का नाम लेने को कहा, मेरा हाथ देखा और बोले इतवार को रात के १२ बजे होस्टल से बिना किसी से बात किए निकल जाओ। इस योग में तुम्हारी तकदीर वृहस्पति, शुक्र के सिर पर बैठजायगी और राहू और केतू उस समय किसी रेस्तरां में चाय पीने चले जायेंगे। तुम्हारा कार्य सिद्ध हो जाएगा। हमने वैसा ही किया। दिल में अभिनेता बनने के सपने जोर मार रहे थे। कुछ और सूझता ही न था।

बम्बई अभिनेताओं का गढ़ है। ड्रामा के, सिनेमा के और जीवन के अनेक प्रकार के अभिनेता वहाँ मिलते हैं। पिताजी का मनीआर्डर कुछ

दिन पहले ही आया था। उसमे इम्तहान की फीस के रुपये थे और गम कपडे बनवाने के। बम्बई मे जाडा पडता नही, इम्तहान तो देना ही नही था। ड्रेन पाइप टाइप टेरालिन की नई शर्ट और एक 'फूल छाप' बुशर्ट रेडीमेड से खरीदी और अपने इष्टदेव का ध्यान करके बम्बई की टिकट कटाई। 'नगरी नगरी द्वारे द्वारे ढूंढूं रे सांवरिया।' पाठ करते करते डायरक्टरो का पता लगाना शुरू कर दिया। एक सज्जन मिल गये थे। उन्होंने कुछ उपदेश दिया। बोले बेटा, 'प्रेमी का पार्ट, वीर का पार्ट, चोर का पार्ट, डाकू का पार्ट, सभी तरह के पार्ट करने का अभ्यास करो। तुम तुरन्त सफल हो सकते हो ? यदि हो न सके तो "ग्लेसरीन या पीपरमैंट' रूमाल मे लगा लेना और आवश्यकता पडने पर उन्हें आंखो मे लगा लेना। आंसू तुरन्त निकलने चाहिए। ऐसा भी हो सकता है तुरन्त हँसना भी पड, तो ठहाका मार कर हँसना भी शुरू कर देना किन्तु ध्यान रहे आंसू निकलें तो उनको पोंछ लेना। एक 'आदमकद' शीशा खरीदकर लाये और होटल मे प्रेक्टिस करने लगे। उस सज्जन ने कुछ 'डायलॉग' भी दिये थे। उसमे एक वीर रस का डायलॉग था।



9988
28.4.88

मैंने उसका अभ्यास प्रारंभ कर दिया। थोडी देर मे ही मैनेजर तथा साथ ठहरे हुए यात्री इकट्ठे हो गये। मैंने किवाड खोले तो मैनेजर महोदय ने तुरन्त कमरा खाली करने का आदेश दिया। मैंने उन्हे बहुत

समझाया कि मैं अभिनेता बनने का रिहर्सल कर रहा हूँ किन्तु वे नहीं माने। अंत में एक धर्मशाला में जाकर शरण ली, आखिरकार वह शुभ दिन आया जिस दिन हमारा डाइरेक्टर महोदय के आगे साक्षात्कार होने को था। वहां सैकड़ों नर-नारियाँ इसी धनुष यज्ञ के लिए गये हुए थे। दो-एक प्रत्याशी जो साक्षात्कार देकर लौट रहे थे उनसे पता लगा कि वहां तो ट्रेनिंग लेने के उल्टे रुपये मांगे जा रहे हैं। यहाँ जेब खाली थी। हमने बिना साक्षात्कार किए वहाँ से टिकट कटाई। अन्य स्टूडियो में गये, किन्तु कहीं किनारा नजर नहीं आ रहा था।

इधर घरवालों ने हमारा फोटो अखबार में निकलवाया था और उसमें लिखा था, 'प्रिय पुत्र तुम जहाँ हो, तुरन्त चले आओ। मम्मी और पापा बहुत याद कर रहे हैं। एक लड़का जिसकी उम्र लगभग २० वर्ष है, रंग साफ, बालों में तेल नहीं डालता, उड़े-उड़े से रहते हैं, बुशर्ट और पैन्ट पहनता है। पता देने वाले को १०००) रु० इनाम मिलेगा।'

जब यह विज्ञापन हमारी निगाह में आया तो बड़े खुश हुए। अपना फ़ोटो देखकर हमने सोचा अभिनेता न हुए तो क्या हुआ किन्तु अखबारों में फोटो तो छप गया, चलो यह क्या बुरा हुआ।

बहरहाल घर तो वापिस आ गये किन्तु दिल में अफसोस यही रहा कि काश अभिनेता हो जाते तो ठाठ ही निराले होते, बड़े से बड़े आदमियों के घरों से लगाकर गंगू तेली के घर पर भी हमारा चित्र लगा होता, पत्रकार हमारा इन्टरव्यू लेते, हमारे जन्म की, हमारे ब्याह की, हमारी श्रीमती जी की, हमारे बच्चों की, हमारे कुत्तों की, हमारे मकान की, हमारी टेबिल की, हमारी कुर्सी की, हमारी सास की, कहने का अभिप्राय यह कि सारे सम्बन्धियों का जीवन परिचय भी अखबारों में छा जाता। लोग हमें उद्घाटन करने बुलाते। हमारे हस्ताक्षरों के लिए निहोरे करते। यदि हम चाहते तो हस्ताक्षर करने की फीस भी लगा देते, हमको भोजन पर बुलाकर लोग अपना अहोभाग्य समझते, हवाई जहाज में सफर करते, गर्मियों में कश्मीर में शूटिंग करते और बड़े बड़े व्यापारी अपने माल पर हमारा प्रशंसा-पत्र तथा फोटो लगाकर बेचते और खूब पैसा कमाते। जहां जाते कुम्भ के मेले का सो

भीड़ हो जाती, पुलिस को व्यवस्था बनाये रखने के लिए लाठी चार्ज करना पड़ता। हमारी जन्मतिथि की विभिन्न तारीखों को लेकर विद्यार्थियों के अनेक दलों में विवाद हो जाता।

हमारे ठाठ जो होते वो तो होते ही, हमारी श्रीमती जी के रंग भी जोरों के हो जाते। जाने कितने महिला सम्मेलनों का उद्‌घाटन उनके कर कमलों द्वारा होता। न जाने कितनी बालचित्र-कला प्रदर्शनियों तथा प्रतियोगिताओं का पुरस्कार वितरण वे करती, न जाने कितने शिशु-गृहों के वार्षिक उत्सवों की सदारत करने की मौका उन्हें मिलता।

पत्र तो इतने मिलते जिनकी गिनती करना कठिन हो जाता। कोई चित्र मांगता, कोई आशीर्वाद, कोई प्यार के दो शब्द तथा विवाह करने के अगणित प्रस्ताव।

जब हिंदी अंग्रेजी से मिलने गई

(मैडम अंग्रेजी जो भारत के किसी कान्वेंट स्कूल के वार्षिकोत्सव में भाग लेने इंग्लैण्ड से आई हुई हैं। श्रीमती हिन्दी उनसे भेंट-वार्ता के लिए पहले से समय निश्चित करके मिलने जाती है। वार्तालाप शुरू होता है)

—मैडम अंग्रेजी, नमस्कार।

—गुड मार्निंग, आप कैसी हैं ?

—आपकी कृपा से ठीक चल रहा है ?

—और आपका भारत, आई मीन इंडिया,

—यो भी ठीक है। कैसे आना हुआ ?

—इधर के पब्लिक स्कूलों ने हमारा रजत-जयन्ती मनाया था। हमको टाइम नही था। ये लोग बहुत पीछे पडा। हमारे वास्ते हवाई जहाज की सीट भी रिजर्व कर दिया, आना पड़ा।

—आज आपसे कुछ निवेदन करना था। आप नाराज तो नहीं होंगी।

—नही, आप कहिए। हम तो बहुत दिनों से आपसे मिलना माँगता था। हमको टाइम है। आपका पूरा 'स्टोरी' सुनेगा।

—अंग्रेज लोगों को गये २५ वर्ष हो गया। पर आपका रौब अब भी कायम है।

—हमको मालूम है।

—हमारे यहां जितनी भी नौकरियाँ हैं उनमें आपके बिना कोई सफलता प्राप्त नही कर सकता है।

—गो ऑन हमको खबर है।

—आपके पब्लिक स्कूलों में केवल अमीरों के लाडले पढ़ सकते हैं।

बाद में वे ही अफसर बन सकते है।

—यस। ये बात भी सही है।

—आपके भक्त ऐसा बोलते हैं कि आपके बिना विज्ञान की पढ़ाई नही हो सकती। रूस और जापान तो अपनी भाषा में ही सब काम करते हैं।

—सिस्टर, इसको हम कैसा गलत कह सकते हैं। वह तो 'फैक्ट' है।

—संस्कृत हमारी प्राचीन भाषा है। हमारे यहाँ उसका बहुत आदर है।

—हम भी जानता है। 'संस्कृत' पुराना 'लेंगवेज' है। इसके बारे में क्या बात है।

—मैडम, एक संस्कृत के प्रोफेसर की जगह खाली थी। एक उम्मीदवार संस्कृत का अच्छा विद्वान था। विश्वविद्यालय में पहले नम्बर में पास हुआ था।

—'कालीडास' भी 'स्टडी' किया होगा।

—हाँ, मैडम, कालिदास के सैकड़ों श्लोक उसे याद थे। व्याकरण, दर्शन तथा साहित्य का बहुत बडा विद्वान था।

—ये 'केन्डीडेट' तो सलेक्ट हो गया होगा।

—नही मैडम। कमीशन के सदस्य आपके अन्ध भक्त थे। वे तो यह जानना चाहते थे कि वह पंडित आपका ज्ञान कितना रखता था। उसने आपकी साधना उतनी नही की थी जितनी संस्कृत की।

—वैल उसने हमको 'इगनोर' किया ?

—मैडम, तभी वह 'सलैक्ट' नही हुआ। आपका एक भक्त लिया गया।

—उसने दस वाक्य आपकी साधना के बोले कालिदास को 'कालीडासा' बोला। कमीशन के सब सदस्यों के पुरखे तर गये। उनका रोम-रोम हर्षित हो गया। वह 'सलैक्ट' कर लिया गया।

—वैरी फनी वैरी फनी।

—मैडम, आपके भक्त और भक्तिनों की संख्या आपके जाने के

बाद और बढ़ गई है। हमारा एक रिश्तेदार बहुत बड़ा सरक
है। उनकी एकमात्र बहुत सुन्दर नृत्यकला में प्रवीण लड़
लोग शादी में एक लाख का दहेज भी दे रहे हैं। उनकी मग
गई थी लेकिन···

—क्या शादी नहीं बनाया ?

—हाँ मैडम, लड़के वालों को निजी रूप से यह मालूम
लड़की अपने घर में आपके नाम का प्रयोग नहीं करती है।
बात पर मामला समाप्त कर दिया।

—हम 'ग्लैड' है। हमको इधर लोग इतना 'लव' करता,
ऑन' बहुत बहुत मजा आ रहा है।

—मैडम, आपको पता होगा कि आज भी सबसे बड़ी र
नौकरी आई० ए० एस० ही है। उसमें भी आपका बोल-बाला है
—एक-दो प्रश्न-पत्र भले मातृभाषा में उत्तर लिखने की छ
मिली किन्तु उसका भी मूल्यांकन तभी होता है जब उसका रूप
वर्तन आप में हो जाता है।

—डीयर हिन्दी, हमको ताज्जुब होता है कि ऐसा हमारे मे
'अट्रैक्शन' है ?'

—मैडम, यही आश्चर्य हमको है। आप कितनी भाग्यशाली प्रे
हैं कि आपको यह भी नहीं मालूम कि आपको लोग इतना प्रेम
करते हैं ? आपको एक समाचार दूं। आपके कुछ भक्त इधर ए
प्रचार कर रहे हैं कि हिन्दी भी आपकी लिपि रोमन में लिखी जाये

—ओह नो। 'सिस्टर' आपका देवनागरी लिपि हम जानते है
वो तो 'परफैक्ट' है। जो लिखा जाता है वही पढ़ा जाता है। हम त
बी० यू० टी० 'बट' बोलते है और पी० यू० टी० 'पुट'। हम तो फ़र्क
है। तुम्हारा 'स्क्रिप्ट' बहुत अच्छा है। उसे बदलने की क्या जरूरत है।
'नानसेन्स।'

—धन्यवाद मैडम, आपसे इन्हीं विचारों की आशा थी। सरकारी
दफ्तरों के अहिन्दी भाषी को हिन्दी सिखाने में हमारी सरकार प्रति-
वर्ष लाखों रुपया खर्च करती है। वे लोग सीख भी लेते है पर प्रयोग

मे आपको ही लाते हैं। उनका ऐसा ख्याल है कि आपका प्रयोग उनको स्वर्ग ले जायेगा।

—आप बहुत भोली हैं। मैं इसका क्या 'रिप्लाई' दूं। मेरी तो समझ में नही आता।

—मैडम, जिन स्कूलो के उत्सव मे आप आई हैं उनमे से निकले बच्चे आपको ही अपनी दादी मानते हैं। आपके ही सपने देखते हैं। आपकी आराधना मे ही दिन-रात रहते हैं। अपने अन्य भक्तो को गाजर-मूली समझते हैं। हर हिन्दुस्तानी चीज से नफरत करते हैं।

—यस, इन स्कूलो मे तो फीस भी बहुत लगती हैं। आपके लोग कैसे बर्दाश्त करते है ?

—मैडम, यही तो रोना है। हमारे मोहल्ले मे एक सज्जन किसी 'रॉयल स्कूल मे' अपने बच्चे को दाखिल कराके आए। घर आकर वे बेहोश हो गये। पडौसी इकट्ठे हो गये। पता चला कि दाखिल कराने मे ही उनका इतना रुपया खर्च हो गया कि लौटकर उसके दिल की धडकन बढ गई। इलाज मे तनिक देर हो जाती तो उनकी अंतिम विदाई का प्रबध करना पडता। इन स्कूलो की दुनिया ही निराली है। जब तक बच्चा स्कूल मे रहता है आपका ही स्मरण करता है।



हमारा नाम लेने पर उस पर फाइन कर दिया जाता है। उसको ऐसी घुट्टी पिलाई जाती है कि वे सब आपके नाती-पोते लगते हैं। ये लोग बड़े होकर आपका ही जीवन भर गुण-गान करते हैं।

—ट्रू, तुम ठीक बोलता है। हमको भी ऐसा ही महसूस हुआ। ये बच्चे बिल्कुल हमारा 'कंट्री' का लगता है। 'स्वीट चिल्ड्रन' हमको भी इधर आने पर ऐसा लगा कि हम अपने ही होम में आये हों। कितना अच्छा लगता है 'अपने कल्चर' को दूसरे कंट्री' में देखने पर 'वेरी-वेरी प्लेजेंट'।

—मैडम, हमारे बड़े-बड़े अफसर भी अपना जीवन धन्य समझते हैं जब वे आपके बारे में पूर्ण ज्ञान रखते हों। कभी-कभी विदेशों में जब वे लोग आपका प्रयोग करते हैं तो लोग इनकी हँसी भी उड़ाते है। इनसे पूछते भी हैं कि क्या आपके देश में कोई भाषा नहीं है। पर ये लोग बिल्कुल 'सूरदास की कारी कमरिया चढ़त न दूजो रंग' है।

—ठीक कहती हो। हम तो इसका 'आई विटनिस' है।

—और मैडम एक और नई बात दीखने में आई है। आपके निवास को इधर के लोग तीर्थस्थान समझते हैं। आपके उधर से कोई किसी फटीचर विश्वविद्यालय या चुंगी के स्कूल का भी सार्टिफिकेट ले आता है तो वह इधर की डिग्री लेने वाले को बहुत तुच्छ समझता है। 'फॉरन रिटर्न्ड' माने 'हेविन रिटर्न्ड' माना जाने लगा है। ये सब आपके ही नाम का प्रताप है।

—आई सी। वैल सिस्टर, तुमने सवाल पूछा। हमने जवाब दिया हम तुमसे कुछ सवाल पूछना माँगता है।

—अवश्य मैडम पूछिये।

—हम या हमारे उधर का लोग आपके इधर 'प्रापगेन्डा' करता है कि हमको इधर रखो।

—नहीं मैडम, बिल्कुल नहीं।

—हमारे लोग जब से इधर से गया, हम तो उसके साथ वापिस लौट गया। ये तो आपके यहाँ के लोग हैं जो हमको इधर रखना माँगता हैं। तुम अपने लोगों को समझाओ, हम इसमें क्या

कर सकते है ?

—धन्यवाद मडम, आप ठीक कहती है।

—थेंक्स, कभी फिर मिलगे"।

हिंदी प्राइमर—१६६०

शास्त्रों में लिखा है कि भगवान् के नाम लेने मात्र से मोक्ष मिल जाती है। भगवान के गुणों का श्रवण-कीर्तन तथा ध्यान करना भी लाभदायक बताया गया है। नाम मात्र लेने के कारण अजामिल जैसे खल भी तर गये। राम का उलटा नाम लेने पर भी पापी इस भव-सागर से साफ पार हो गये।

भगवान अब कुछ बैकग्राउण्ड में आ गये हैं। फिल्मों की चर्चा ही चारों ओर सुनाई पड़ती है। सबसे अधिक संख्या में फिल्मी पत्रिकाएँ निकलती हैं। जवानों की बात छोड़िये बड़े-बूढ़ों को भी प्रातः स्नान करने के उपरान्त फिल्मी-कीर्तन करते देखा जा सकता है। हर घर में फिल्मी सितारों के चित्र टंगे हुए मिलते है। कुछ लोग नित्य नियम से उन पर धूपबत्ती चढाते हैं। प्रातःकाल और सायंकाल उनकी आरती उतारते हैं। प्रमुख फिल्मी हीरो और हीरोइन की जन्म-पत्रियाँ पांच वर्ष से ऊपर के प्रत्येक बालक और बालिका के कण्ठस्थ हैं। फिल्मी हीरो द है। कहीं आ जाय तो भगदड़ मच जाती है। पुलिस बुलानी पड़ती आपके।

—आई सं: अपने केश विन्यास, वस्त्रों के कटाव तथा आभूषण
हम तुमसे कुछ स में फिल्मी हीरो-हीरोइन की पसंद को ही आदर्श
—अवश्य मैडम को आज का युवक नही जानता, किन्तु गीताबाली या
—हम या हमारे सुनते हैं। सम्राट अशोक अथवा पौराणिक राजा
है कि हमको इधर रखो न कोई नही जानता पर सभी के हृदयों
—नहीं मैडम, बिल्कुल. फिल्मी हीरो यहाँ तक कि विवाह-
—हमारे लोग जब से देवताओं के स्थान पर राजेश खन्ना
वापिस लौट गया। ये तो आपकी पूजा की जाती है। विश्वविद्यालयों के
रखना मांगता हैं। तुम अपने लोग. गे। प्रातः उठते ही छात्र

ग्रौर छात्राएँ इनके दर्शन करके ही अपनी दिनचर्या प्रारम्भ करते है। परीक्षा देने जाते समय तथा इटरव्यू मे जाते समय तो इनके दर्शन सफलता प्राप्त करने के लिए ग्रावश्यक माने गये हैं।

घटना सन् १६४५ की है। सेंट जान्स कालेज, ग्रागरा मे एम० काम० मे पढते थे। विज्ञान विभाग की एक छात्रा ग्रनन्य सुन्दरी थी। वह छात्रावास मे रहती थी। छात्रो मे उसके दर्शनो की लालसा सदा विद्यमान् रहती थी। कुछ छात्रो का तो नियम था कि बिना उसके दर्शन किये वे ग्रपने घरो को नही लौटते थे। सत्र के मध्य मे ही वह फिल्म लाइन मे चली गयी तथा विजयलक्ष्मी के नाम से प्रसिद्ध हो गयी। कालेज में उसका नाम कमला वर्मा था। कुछ ही दिनो बाद उसके फोटो वाला कलैंडर कालिज के निकट के एक रेस्तरां मे लग गया। उस रेस्तरां मे इतनी भीड होने लगी कि सीट मिलना दुर्लभ हो गया। यह घटना तीस वर्ष पुरानी है। ग्राप ग्रदाज लगा सकते हैं कि उस समय से फिल्मी ग्रभिनेता तथा ग्रभिनेत्रियो की लोकप्रियता कितनी ग्रधिक बढ गयी होगी तथा निकट भविष्य मे कितनी ग्रौर बढेगी।



हमारा यह दृढ विश्वास है कि यदि छोटे बालकों को प्राइमरी शिक्षा ग्रभिनेताग्रो के सहारे दी जाय तो उनको ग्रक्षर-ज्ञान ही सरल नही होगा वरन सस्कार भी सुधरगे।

बचपन से ही नैतिक मूल्यो के प्रति उनकी ग्रास्था भी सुदृढ होगी

शीघ्र ही वह दिन आयेगा जब 'अ' माने अमिताभ सिखाया जायेगा। आजकल 'अ' माने अनार सिखाया जाता है। अनार तो एक औसत भारतवासी को बीमारी में खाने को मिलता है। शिक्षा शास्त्र का सिद्धांत है कि बच्चों को शिक्षा उनके परिवेश के अनुसार ही दी जानी चाहिए। आज के बालक के रोम-रोम में अभिनेता और अभिनेत्रियों के नाम समा गये हैं। नवीन प्राइमर में आवारा से बड़ा 'आ' सिखाया जायेगा। आवारा का चित्र भी साथ बनाया जा सकता है, बाकी स्वर एक मास में बच्चा सीखेगा। 'इ' माने इंतकाम, ई माने ईमान, उ माने उत्तम कुमार, ऊ माने ऊँचे लोग और व्यंजनों पर आ जायेगा। (बच्चे गा रहे हैं, नाच रहे हैं और मिलकर समवेत स्वर में बोल रहे हैं,) 'क' माने कन्हैया, 'ख' माने खुशबू, 'ग' माने गुलजार, घ' माने घूंघट, 'च' माने चुपके चुपके, 'छ' माने छलिया। जिस समय बच्चे 'ज' माने जया भादुड़ी कहेंगे तो सचमुच लोटपोट हो जायेंगे और चिल्लाने लगेंगे। (डैडी हम खाना पीछे खा लेंगे और पढना बराबर चालू रखेंगे)। 'झ' माने झुमरु, 'ट' माने टुनटुन, ठ माने ठगिया, 'ड' माने डैनी, 'ढ' माने ढोलक, 'त' माने तलाश, 'थ' माने थीप आफ बगदाद, 'द' माने दिलीपकुमार, 'ध' माने धर्मेन्द्र। (यहां अध्यापक विद्यार्थियों से ताली बजाने को कहेगा और दिलीपकुमार व धर्मेन्द्र के नाम पर इतनी तालियां बजेंगी कि पूरी कक्षा ही गूंज उठेगी।)

पढ़ाई फिर चालू रहेगी 'न' माने नूतन, 'प' माने पद्मिनी। (यहां कोई बच्ची नाचकर दिखायेगी), 'फ' माने फूल और पत्थर, 'ब' माने बलराज साहनी, 'भ' माने भरोसा (यहां पढ़ाई थोड़ी देर रोककर मास्टरनी बच्चों के ओठों पर मिल्क पाउडर का पेंट करेगी), 'म' माने मीनाकुमारी 'य' माने यहूदी (यहां मैडम कहेंगी बच्चो अगला अक्षर तुम्हें पसंद आयेगा, सब मिलकर नाचना, खड़े हो जाओ) बोलो 'र' माने राजेश खन्ना (यहां सारी कक्षा तीन मिनट नृत्य करेगी) 'ल' माने लीना, 'व' माने वैजयंती माला, 'श' माने शर्मिला टैगोर, 'स' माने संजीवकुमार (यहां मैडम कहेंगी अपने बस्ते बाँध लें और घर जाने को तैयारी कर लें। अगला ओर अंतिम अक्षर जो

पढ़ाया जा रहा है उसे घर तक बोलते हुए जाना है और अंत में खूब जोर की आवाज में बच्चों को सिखाया जायेगा 'ह' माने हेमामालिनी और सब बच्चे हेमामालिनी का कीर्तन करते हुए अपने घर जायेंगे। कहिये जब ये प्राइमर बन जायेगी तो बच्चे एक दिन में पूरी वर्णमाला सीख जाएंगे। वह दिन शीघ्र ही आने वाला है।

चमचागीरी

हमारे शास्त्रों में कामधेनु का वर्णन आता है। यह वह गाय है जो प्रसन्न होने पर आपकी मनोकामना पूरी कर देती है। हमने कामधेनु का पता लगाने की बहुत चेष्टा की, किन्तु कामधेनु के दर्शन नहीं हुए। समय परिवर्तनशील है। नये-नये आविष्कार हुए। 'चाटुकारिता' शब्द चला। वह भी पुराना पड़ गया। खुशामद चली, मक्खनबाजी, मस्का लगाना आदि शब्द चले। महँगाई की चपेट में मक्खनबाजी आ गई। अब तो 'लेटेस्ट डिजाइन'-चमचागीरी का निकला है। 'चमचा' जी को इतनी लोकप्रियता कैसे प्राप्त हुई, यह एक खोज का विषय है। बहरहाल आजकल जिधर देखिए, चमचागीरी की बहार है।

घर में हो या दफ्तर में, चमचागीरी का बोलबाला है। बीवी ग्रेजुएट हो या अँगूठा टेक, नेक हो अथवा 'फ्रेंक' किन्तु चमचागीरी से सीधी लाइन पर आ जाती है। पिछले दिनों हिन्दी साहित्य के कुछ मनीषियों ने इस प्रकार के विचार प्रकट किए कि सृजनशील लेखक को प्रेरणा प्राप्त करने के लिए पत्नी के अतिरिक्त एक प्रेयसी की भी आवश्यकता है। है या नहीं, यह तो विवादास्पद है, किन्तु यदि प्रेयसी को आवश्यक समझा जाये तो यह तब ही सम्भव हो सकता है जब आप श्रीमतीजी की चमचागीरी करने में सिद्धहस्त हों। आप रोजाना घर देर से पहुँचने के आदी हैं; आपको संस्थाबाजी का रोग है, आज इस मीटिंग में, कल उस समारोह में, परसों शहर के बाहर किसी कवि-सम्मेलन में। बहरहाल ये सब कार्यक्रम तभी शान्तिपूर्ण ढंग से निभाये जा सकते हैं जबकि आप बीवी की ही नहीं वरन् उनके घरवालों की भी चमचागीरी करें और निष्ठा के साथ करें। श्रीमती जी की

सुन्दरता का वर्णन आप कितना अधिक करते हैं और कितनी खूबी से करते हैं यह चमचागीरी के क्षेत्र में आता है। हेना मालिनी हो अथवा जीनत अमान, इन सबकी सुन्दरता को केपसूल में रखकर कमान चलाइए और बीवी जी की सुन्दरता में तारीफ के पुल बांध दीजिए। बीवीजी की सुन्दरता में यदि आपने इनसे ऊपर चढ़ा दिया तो आपके दिन सोने के और रात चांदी की होगी और यह चमचागीरी वह गुल खिलायेगी कि आपका रोम-रोम प्रसन्न हो जाएगा। किसी ने सच कहा है कि 'गुन न हिरानो गुनगाहक हिरानो है'।सौन्दर्य हो अथवा न हो आपकी चमचागीरी भैंस में भी वह सौन्दर्य पैदा कर सकती है कि आप एक महाकाव्य लिख दें तथा उस पर कोई पुरस्कार मिल जाये। चमचागीरी में पी-एच० डी० करनेवालों का निश्चित मत है कि श्रीमती जी की ही नहीं, उनके डैडी, भाई, मम्मी, बहन की भी ससम्



६

के सर्वश्रेष्ठ प्राणियों में गिनती की जाय। आपको चमचागीरी करते देखकर लोग 'जोरू का गुलाम' भी कह सकते है। आप परवाह मत कीजिये 'जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरति देखी तिन तैसी'। यह तो आपके दृष्टिकोण पर निर्भर करता है। आप 'जोरू के गुलाम' को अपनी पदवी समझें या गुण समझें जिस पर आपको गौरव है, यह वह डिग्री है जो आपको सबसे बड़ी डिग्री की चाबी है, बस आपकी सफलता निश्चित तथा आपका जीवन सफल। यही नहीं, अपने साथियों को जो पथ से भटक गये है, तकलीफें उठा रहे हैं उन्हें भी पत्नी भक्ति की ट्रेनिंग दीजिए। यदि कुछ समय हो जाए आप निःशुल्क औषधालय की जगह एक पत्नी-भक्ति प्रशिक्षण संस्थान खोल लीजिए। 'परहित सरिस धर्म नहिं भाई' परोपकार के साथ-साथ आप अनेक घरों को 'हल्दी घाटी' के स्थान पर 'वृन्दावन गार्डन्स' के रूप में बदल लेंगे। कल का जिक्र है, हमारे एक पड़ोसी अपनी बीवी से कह रहे थे, 'डार्लिंग, शायद बेबी बहुत देर से रो रही है। उसे चुप करा दो, प्लीज उसी समय पति देव उत्तर देते हैं, 'सचमुच दफ्तर में इतना काम है कि हर समय 'टेंशन' रहता है, गाने की तमीज करना भी भूल गया।' चमचागीरी और हाजिर जवाबी सभी बहने है और इनका गहरा सम्बन्ध है। ये एक दूसरी की पूरक हैं। चमचागीरी का 'ओवरडोज' कभी-कभी माफिक नहीं बैठता। उस समय 'चमचा जी' परेशानी में पड़ जाते है। आप चमचागीरी के नशे में श्रीमती जी से कह बैठते है 'डार्लिंग, तुम्हारा सौन्दर्य तो दिन प्रति दिन निखरता जाता है। अगर इजाजत हो तो कह दूं कि सुन्दरता नित्य बढ़ती चली जा रही है।' बीबीजी उत्तर देती है, 'इतनी अतिशयोक्ति ठीक नहीं है।' तुरन्त हाजिर जवाबी का सहारा लें और कह दें—'खैर नित्य न सही एक दिन छोड़कर तो निखार आ ही रहा है' और मामला फिट।

चमचागीरी का जादू तो सिर पर चढ़ कर बोलता है। वह दफ्तरों में दृष्टिगोचर होता है। चमचागीरी जानते है तो अपना काम जानने की जरूरत नहीं है। मक्खन लगाने में 'लेट' नहीं होते तो

और सुनाने लगते अपना बेसुरा सुर। हम आफिस में काम करते और तुरन्त चपरासी से हमें अपने कमरे में बुला लेते और कहते, 'देखो, तुमने भीमपलास' राग नहीं सुना होगा' और हम अपनी किस्मत को ठोकते हुए 'भीमपलासी राग' सुनते रहते। वह तो दफ्तर का समय समाप्त होने पर चले जाते और हम आफिस खत्म होने के बाद अपना बाकी काम पूरा करते रहते और उनको हृदय से आशीर्वाद देते रहते। यहरहाल इस साधना ने गुल खिलाया और हमको अनेक सीनियरों के ऊपर की पोस्ट पर बिठा दिया गया। पहले बास हमको बुला कर 'भीमपलासी राग' सुनाते थे, अब हम उनके घर जाकर बड़े शौक से भीमपलासी सुनते हैं।

चमचागीरी के परिवेश में मुख्यत. यह कार्य आते है, समय-समय पर साहब को रुचि की वस्तुओं को उनके घर पहुचाना, यदि उनकी पुत्री विवाह योग्य हो तो उसके लिए उपयुक्त वर की तलाश करना, उनकी श्रीमती जी की फरमाइशों की लिस्ट के सामान को खरीदकर ला देना तथा भूलकर भी बिल न देना, साहब की हवाई यात्रा का टिकट बुक करा देना तथा धन लेना भूल जाना, उनके बच्चो को चाहे वे मूर्ख ही हो, बहुत ही 'स्मार्ट' तथा होनहार बताना आदि। सेवाएं अनन्त है और चमचागीरी का क्षेत्र भी बहुत विस्तृत है।

करत-करत अभ्यास के जडमति होत सुजान।
चमचागीरी जितनी ही अधिक हो लाभदायक सिद्ध होगी।

गप्पे [illegible]

सुबह उठकर बैठा हूं। [illegible] नौकर कहता है, [illegible] प्यारेलाल [illegible]



ही। बोले, दिल्ली से आ रहा हूं। बातचीत शुरू हो जाती है। [illegible] के दौर बीच-बीच में चलते रहते हैं। मेरे सहपाठी रहे हैं। दस [illegible] मुलाकात नहीं हुई थी। बातचीत के दौरान मैंने देखा मुझे [illegible] अधिक बोलने की इजाजत नहीं दी। मैं कभी चेष्टा भी [illegible]

नाराज होते। मैं चुपचाप सुनता रहा। वे कहते रहे और मैं उसी तरह से 'हा' 'हा' करता रहा जैसे बचपन मे दादी की कहानी सुनते समय किया करता था। उन्होने जो कहा उसका सार यह है।

'कालिज से निकलकर वे इसलिए बहुत बडे अफसर बन गये कि उन्होंने एक करोडपति की लडकी से शादी कर ली थी। उनके यहा दस कारें थी। एक कार मे वे केवल आफिस जाते थे, एक मे मन्दिर जाते थे, एक मे सिनेमा जाते थे, एक मे घूमने जाते थे और साथ मे एक अतिरिक्त कार इसलिए जाती थी कि जैसे ही 'मूड' बदले, वे दूसरी मे बैठ जाते थे। एक कार मे वे अधिक देर तक नही बैठ सकते थे। जहां नौकरी करते थे वहा उनकी फर्म की खाली चैक बुक उनके पास रहती थी। चाय के समय कोई कवि, गायक अथवा नृत्यकार होना जरूरी था। कभी अकेले चाय नही पीते थ। अमरीका के चन्द्रयात्री जब चन्द्रमा पर पहुचे तब पहले से ही ये वहा उपस्थित थ। ये प्रचार से बहुत दूर रहते हैं इसलिए अब तक यह बात उनके अतिरिक्त किसी को पता नही है।

अब मुझ से नही रहा गया। मैं समझ तो गया था कि ये गप्पी सम्राट् हैं किन्तु मैं आनन्द लेने की गरज से सुनता रहा और उत्तर देने की इच्छा को रोके रहा। फिर बोले, 'मैंने एक प्लाट खरीदा है तुम्हे सुनकर आश्चर्य होगा कि ऐसे होशियार कारीगर मिल गये कि बीस मजिला मकान उन्होने बीस दिन मे तैयार कर दिया।' अब मेरे धीरज का बाध टूट गया। मैंने उत्तर दिया, 'प्यारेलाल हमारे इस शहर मे एक दिन जब मैं दफ्तर जा रहा था तो मजदूर एक मकान की नीव रख रहे थे और जब शाम को लौटा तो मकान मालिक किरायेदारो को किराया न देने की वजह से बाहर निकाल रहे थे।' उत्तर सुनकर प्यारेलाल को कुछ होश आया और उनके मुह से ऐसा प्रतीत हुआ कि मैं भी समझ रहा हू कि दूध मे कितना पानी मिला हुआ है और कितना दूध। मेरी बात का उत्तर देते हुए प्यारेलाल बोले, 'हा हो सकता है।' फिर उन्होने अपना भाषण जारी रखते हुए बताया कि 'उन्हे कनाडा मे रेवड़ी

खाने को मिली और आस्ट्रेलिया में सकरकन्द'। मैं बोला, 'प्यारेलाल जब मैं अमरीका गया, तो मुझे कई अमरीकन रेस्ट्राओं में जलेबी दिखलाई पड़ी और लोगों को छुरी कांटों से जलेबी खाते देखा।' प्यारेलाल ने एक पान खाया और मेरी बात सुनी और बोला, 'देखो, हालैण्ड में ऐसी गाय मिली जो सस्वर कविता पाठ करती थी, भैया मैं तो सुनकर उसे देखता रह गया।' मैंने कहा, 'प्यारेलाल हमारे नये मकान में एक तोता था उसको पूरा आल्हा कंठस्थ था। किस कदर स्वर में पढ़ता था कि हजारों लोग इकट्ठा हो जाते थे। बाद में माइक फिट करना पड़ता था। आजकल वह जापान गया हुआ है।

प्यारेलाल अभी जोश में था, कहा, 'जापान में पता नहीं तुम कब गये मैं जब वहां गया तो क्या देखता हूं कि जिस हवाई जहाज में मैं लौटा उसे एक बन्दर चला रहा था। मैं इतना ताज्जुब में रह गया कि 'भई वाह' क्या ट्रेनिंग दी है। मैं ही नहीं और भी यात्री आश्चर्य चकित रह गये। मुझसे नहीं रहा गया। मैंने कहा, 'प्यारेलाल, दुनिया बहुत तेजी से बढ़ रही है। और तो और, ब्रज में मैंने मोरों को अंग्रेजी बोलते सुना है। जब पता लगाया तो ज्ञात हुआ कि वे कुछ दिनों उन अफसरों के बगीचों में रहे हैं जिनके बच्चे अंग्रेजी माध्यम से पढ़ते रहे हैं।'

प्यारेलाल अब मूड में फिर आ गये बोले, 'भैया तुम मोरों के अंग्रेजी बोलने की कहते हो मेरी तो बिल्ली इतनी धड़ाके से अंग्रेजी में बोलती है कि उसका उच्चारण बिल्कुल शुद्ध होता है। ऐसी बोलती है मानो कोई मेम बोल रही हो। एक उत्सव में तो उसने अंग्रेजी कविताओं का पाठ किया, लोग देखते रह गये।'

मैंने पूछा, तुमने अपने वाल बच्चों के बारे में नहीं बताया। बोले, 'एक लड़का लन्दन में रेवड़ी, गजक का आयात-निर्यात करता है, लड़की कनाडा में 'लहंगा ओढ़नी' के उद्गम पर रिसर्च [illegible] रही है, उससे छोटा लड़का पेरिस के कन्वेंन्ट में पढ़ता है। बा[illegible] [illegible]थीं कि दर-

वाजे पर खटखट की आवाज हुई। मैं बाहर गया तो दो पुलिस मैन खड़े थे। मैंने पूछा तो उन्होंने प्यारेलाल का हुलिया बताकर उसका वारन्ट दिखाया। मैंने उन्हें आदर के साथ अन्दर लाकर प्यारेलाल से मिलाया। वे तुरन्त उनके साथ हो लिए और मुझसे बोले, 'फिर मिलूंगा,एक जांच के सम्बन्ध में जरा पुलिस स्टेशन हो आऊं।' यद्यपि मुझे पता लग गया था कि प्यारेलाल को मूर्ति-चोरी के सिलसिले मे पुलिस ले गई थी किन्तु वे दूसरे दिन पुनः तशरीफ लाये। शायद जमानत का प्रबन्ध कर आये थे बोले, 'क्या बताऊं चतुर्वेदीजी, पुलिस वाले मुझसे बहुत प्रेम मानने लगे हैं। अब आप ही बताइये कोई सहायता मागे तो मना भी कैसे किया जा सकता है। कुछ केसों के सम्बन्ध मे मुझसे सलाह ले रहे थे।' मैंने कहा, प्यारेलाल यार पुलिस मे नौकरी करते तो अब तक तो बहुत बड़े अफसर हो गये होते। क्या तुमने जासूसी की कोई ट्रेनिंग ली थी! मुस्कराते हुए बोले, 'तुम्हें पता नही है नेताजी सुभाप चन्द्र बोस से मेरा बरावर पत्र व्यवहार रहा, मुझे यह भी पता है कि वे आजकल कहा है। जिस दिन 'मूड' आ गया, तो बता दूगा। नेताजी ने मुझसे मना कर रक्खा है। 'मैं बोला प्यारेलाल भारत सरकार ने कमीशन विठाया है, कितना धन खर्च किया जा रहा है, यार, तुम बता क्यों नही देते। तुम्हारा भी नाम रोशन हो जायेगा। मुझे यह कहकर समझा दिया कि मैं इस मामले की बारीकी को समझता नही हूं। मैंने उनसे पूछा, प्यारेलाल शास्त्रीजी की मृत्यु का रहस्य तो तुम्हे पता ही होगा? मुंह मे तम्बाकू रखते हुए बोले, 'मुझे चतुर्वेदीजी, सब पता है, मैं तो स्वयं रूस में उनके साथ था, किस रूप मे था ये उनकी पार्टी वालों को भी पता नही। समय आने पर उस रहस्य को भी बता दूंगा। आज ही बता दूं तो प्यारेलाल को आगे कौन पूछेगा।' मैं मन ही मन सोच रहा था कि गप्पी मनुष्य किस हद तक गप्प हांक सकता है, क्योकि मुझे तो वे नि:शुल्क मनोरंजन प्रदान कर रहे थे फिर मैं ऐसी बात क्यो करता कि उनकी गप्पों का धारावाहिक क्रम टूट जाता। मैंने पूछा, 'प० प्यारेलाल, यार तुम्हें तो पता होगा कि हमारी प्रधानमंत्री

के स्वास्थ्य का क्या रहस्य है। उन्होंने ४२ दिन तक सारे भारत का दौरा किया और बिल्कुल नहीं थकीं।' प्यारेलाल बोले, 'चतुर्वेदीजी, आपसे क्या छिपाऊं वे एक ऐसी दवाई की गोली नित्य खाती हैं कि वे कितना भी कठोर परिश्रम करें थक ही नहीं सकतीं और तुम्हें पता है कि इस गोली का नाम मैंने ही उन्हें बताया था लेकिन आज तक किसी को पता नहीं।' अब तो मैं भी परेशान हो चला था। उनकी गप्पों की तो कोई सीमा ही दिखलाई नहीं देती थी। अन्त में मैंने ही उनके चरण छुए और कहा, अब कृपानिधे मुझे कान्फ्रेंस जाना है। और वे रात्रि को मिलने का वायदा करके विदा हुए।

हमारा गांव का विश्व-भ्रमण

मास्टर छेदीलाल एक देहाती स्कूल मे अध्यापक थे। धोती, कुर्ता, टोपी और देसी जूते—बहुत वर्षों से उनकी यही वेशभूषा थी। उन्होने प्रथम श्रेणी मे मिडिल पास किया था। गणित मे विशेष योग्यता थी। ऊपर पहुच न होने के कारण तीस साल से सहायक अध्यापक थे। उनके स्कूल मे हेडमास्टर आते थ और चले जाते थे किन्तु स्कूल वास्तव मे व ही चलाते थे। ऊचे आदर्शों के व्यक्ति थे। देहात मे अध्यापको को बीडी पीने का बहुत शौक होता है किन्तु छेदीलाल ने आज तक बीडी छुई तक नही थी। विद्यार्थी उनको बहुत प्यार करते थे।



कुछ वर्षों पहले उनके विकास खण्ड मे 'हमारा गांव' शीर्षक से एक निबंध प्रतियोगिता हुई थी। ५० पृष्ठो का एक बडा निबध लिखना था। मास्टर जी अच्छी हिन्दी लिख लेते थे। उन्होने 'हमारा गाव' पर निबध तैयार किया था। गाव की आबादी, विभिन्न जातियो की जन-

संख्या, उनके रीति-रिवाज, उनके धार्मिक विश्वास [illegible]
लड़ाई-झगड़े, पंचों की परम्परा आदि आदि। इस सिलसिले में दो-चार
बार वे तहसील भी गये थे तथा मालगुजारी आदि के आंकड़े भी इकट्ठे
करके लाये थे। कस्बे की दुकान से वे चार बादामी कागज भी
ले आये थे। काली स्याही से मोती जैसे अक्षरों में उन्होंने निबन्ध लिखा
था। प्रतियोगिता का जब परिणाम निकला तो छेदीलाल के निबन्ध को
सर्वश्रेष्ठ माना गया था। उस पर उन्हे सौ रुपये का नकद पुरस्कार
मिला था। कस्बे के एक अनियमित अखबार में छेदीलाल का एक चित्र
भी छपा था।

जाड़े के दिन थे। अपटू डेट लोगों का एक दल गांव में आया
था। उनमें कुछ विदेशी सज्जन भी थे। उस दल के संयोजक विश्व-
विद्यालय के एक प्राध्यापक थे। उनका नाम था प्रो० रिसर्च कुमार।
वे सब एक विदेशी कार में आये थे। गांव के लोगों से उन्होंने बातचीत
की थी। बच्चों को कुछ बिस्कुट तथा फल बांटे थे। गांव वालों ने कोई
दिलचस्पी नहीं ली थी। ऐसे दल बराबर आते रहते थे। यह दल खण्ड
विकास अधिकारी कार्यालय पर भी रुका। विकास की योजनाओं की
जानकारी प्राप्त करते समय इस सम्बन्ध में की गई विभिन्न गतिविधियों
की जानकारी भी दल के सदस्यों को कराई गई। निबन्ध प्रतियोगिता
का जिक्र भी आया। पुरस्कृत निबन्ध को लेने की प्रोफेसर साहब ने
जिज्ञासा की। उन्हें वह दे दिया गया। दफ्तर में उसकी अब कोई
उपयोगिता भी नहीं थी।

प्रो० रिसर्च कुमार ने अपने नाम को नये डिजाइन में परिवर्तित
करके केवल आर० कुमार रख लिया। मास्टर छेदीलाल के निबन्ध
को पढ़ा। पसंद आया। उसका अनुवाद अंग्रेजी मे किया। छेदीलाल ने
तो आंकड़े सीधे-साधे रूप में रख दिऐ थे। प्रोफेसर ने उन आंकड़ों को नये
डिजाइन में ढाला। उनके डायग्राम बनाये, आँकड़ों की टेबिल बनाई।
उनके पास एक गाँव के फोटो पड़े थे। उनमें से सरकारी ग्राम पंचायत

का, एक जाडे मे ठिठुरते हुए ग्रामवासियो का, एक डाइग्राम पाठशाला तथा एक घर के दरवाजे पर खडी बैल की जोडी का, बेपाया फोटो भी किताब मे फिट कर दिए गये थे।

विश्वविद्यालय को उन्होने फैलोशिप के लिए लिख दिया। तीन वर्ष के लिए उन्हें फैलोशिप मिल गया। फैलोशिप की रकम तीन वर्ष के लिए ७२ हजार स्वीकृत हुई थी। उसमे प्रोफेसर के भ्रमण के लिये तथा स्टेशनरी की रकम भी शामिल थी। कार्य तो मास्टर छेदीलाल ने पहले ही कर रक्खा था। तीन वर्ष आनन्द करते रहे। जिस दल के साथ वे गाव मे गये थे, वहा से समाचार मिला कि उन्हे लन्दन के किसी विश्वविद्यालय मे अपनी 'स्टडी' के बारे मे लेक्चर देने बुलाया है। उनकी 'स्टडी' भी लन्दन के अच्छे प्रकाशक ने छापी है। लगभग १ लाख रु० रायल्टी का प्राप्त किया।

प्रो० आर० कुमार के बार मे लन्दन के पत्रो म प्रकाशित हुआ कि ग्रामो के बार मे प्रो० आर० कुमार की स्टडी बेजोड है, असाधारण है तथा वह मानक के रूप मे कही जा सकती है। फ्रेंच, रशियन तथा जर्मन भाषाओ मे उसका अनुवाद हुआ। लाखो रुपया प्रो० कुमार को रायल्टी का मिला। अपनी स्टडी के कारण मास्को, पेरिस तथा जर्मन विश्व विद्यालयो मे भी उनको भाषण देने के लिए बुलाया अपने देश मे ग्राम-विकास के कार्यों मे उनके अधिकारी विद्वान् माना गया। प्रो० कुमार लगभग ७ महीने तो विदेशो का भ्रमण करते तथा ५ महीने स्वदेश म रहते। उन्होने देश तथा विदेशो म ग्रामीण समस्याओ के विकास के कई सस्थान खोले तथा उनका अवैतनिक निदेशक बनना स्वीकार किया। वैसे मीटिंगो में आने-जाने के भत्ते से ही उनके हजारो रुपए बन जाते थे।

छेदीलाल प्राइमरी विद्यालय से रिटायर हो चुके थे, वही धोती वही कुर्ता, टूटी चप्पल पहने अपनी झोपडी के चबूतरे पर बैठे हुक्का गुडगुडाया करते थे। उन्हें क्या पता था कि उनका लिखा निबध 'हमारा गाव विश्वभ्रमण कर चुका है तथा उनकी जीवित अवस्था मे प्रो० आर० कुमार के रूप मे उनका नया जन्म हो चुका है।

यदि हम कवि होते

यदि मैं कवि होता तो सबसे पहले अपने बाल बढ़ाता। विद्यालयों में जब कवि दरबार करते हैं तो किराये पर बाल मंगाकर कवियों के मस्तकों पर रक्खे जाते हैं। तभी वे जंचते हैं। दूसरा काम करता कि



मूंछों को सफाचट करा देता। हां, यदि वीर-रस का कवि बनता तो गुच्छेदार मूंछे रखता। साथ-साथ किसी अखाड़े पर जाकर हाथ पैर फेंकने का अभ्यास भी करता। वीर-रस की कविता जमाने के लिए

जोरदार आवाज के साथ हाथ पैर फेंकना भी आवश्यक है। यदि गी कार होता तो 'मुलेठी' खाता ताकि आवाज सुरीली होती। गीत मजा तब तक श्रोताओं को नहीं आता जब तक कि आवाज में सुरीले पन न हो। प्रमगीत लिखने के लिए प्रेम करने का अनुभव आवश्यक किसी प्रेयसी को ढूंढता तथा श्रीमती जी से छुप-छुपकर उससे मिल न मिलती तो तड़पता। संयोग तथा वियोग दोनों पक्षों की कवित के लिखने के लिए यह आवश्यक है। अनुभूति की प्रामाणिकता आधुनिक विद्वानों ने पर्याप्त बल दिया है। इसके साथ रातों में किनारे बैठकर तारों को गिनता, पेड़-पत्तियों से बातें करता, चांद देखकर मुस्कराता, फिर इन सब अनुभवों को कविताओं में रखा दिल के बारे में अध्ययन करते फिर प्रेयसी के दिल के धड़कने का व करते। महान् कवियों के प्रेम प्रसंगों का अध्ययन करते तथा उस अनुसार अनुकरण करते।

कविता के छपाने के लिए सम्पादकों की चमचागीरी करते। उनको सलाम बजाते। यदि सम्पादक जी की ६० वर्षीय दादी का स्वर्गवास हो जाता तो जमकर आंसू बहाते। अपनी सम्पूर्ण काव्य-प्रतिभा का प्रयोग कर एक शोक-गीत लिखते और उसमें दिखाते कि सम्पादक जी की दादी की यह मृत्यु नारी समाज की ऐसी हानि है कि जिसकी पूर्ति होना कठिन है। यदि सम्पादक जी की कोई रचना कहीं प्रकाशित होती तो उसकी प्रशंसा में स्वयं ही पत्र नहीं लिखते साथ में अपने मित्रों से भी आग्रह करके उनकी रचनाओं की प्रशंसा में पत्र लिखवाते। परिणाम यह होता कि हमारी कविताएं सचित्र प्रकाशित होतीं।

यदि सचमुच ही हम कवि होते तो हमारी श्रीमती जी नित्य ही अपनी सहेलियों से कहतीं 'भेन जी, 'पापा-मम्मी ने जाने क्या सोच कर मेरी शादी इन कवि महोदय से कर दी। आलू मंगाती हूं तो बेसन ले आते हैं। बैंगन मंगाती हूं तो मूली ले आते हैं। कहीं छाता भूल आते हैं तो कहीं बैगन छोड़ आते है। उन्हें अपना होश ही नहीं रहता।

जाने किस दुनिया में डूबे रहते हैं। मेरा तो घर चलाना मुश्किल हो गया है। इनके दोस्तों के लिए चाय बनाते-बनाते तंग आ गई हूं। निठल्ले लोगों का जमघट रहता है। आकर जम जाते हैं। जाने का नाम ही नहीं लेते। इनकी कविताएं सुनते हैं, अपनी सुनाते हैं। बच्चों की पढ़ाई-लिखाई की इन्हें कोई चिन्ता नहीं। बच्चे बिगड़ें तो इनकी बला से। जाने क्या लिखते रहते हैं ? न सोने का कोई समय, न जागने का कोई समय। राशन कार्ड बदलवाना है इन्हें फुर्सत मिले तब न ? चूल्हा न भी जले, इन्हें कोई चिन्ता नहीं। कवि-सम्मेलन का निमंत्रण मिला और ये सब भूले। कड़कड़ाती सर्दी पड़ रही हो चाहे चिलचिलाती धूप, चाहे मूसलाधार वर्षा हो रही हो ये जाये बिना नहीं मान सकते। रात को तीन-चार बजे उठकर दरवाजे की कुण्डी खोलना कितना कष्ट साध्य है। ये किसी भुक्तभोगी से ही पूछो? बिंध गया जो मोती। करूं भी तो क्या करूं ? ज्यादा नाराज होती हूं तो मेरी ही खुशामद करने लगते हैं। मुझ पर एक खण्ड काव्य लिख चुके हैं। पहले तो इनकी कविता मुझे भी अच्छी लगती थी और समझ में भी आती थी किन्तु पिछले कुछ दिनों से नयी कविता लिखने लगे हैं जो बिल्कुल समझ में नहीं आती। उस दिन मम्मी और मेरी छोटी बहन आई हुई थी, इनसे कविता सुनाने को कहा, ये नयी कविताएं ले बैठे। मम्मी के पल्ले तो कुछ नहीं पड़ा। वे मुझको देखती रहीं और मैं उनको। पूछने पर समझाने लगे कि सबसे उत्तम नई कविता वह मानी जाती है जो बिल्कुल ही समझ में न आवे।

यदि हम कवि होते तो कवि-सम्मेलनों के संयोजकों की भी खुशामद करते। परिणाम यह होता कि हमें कवि-सम्मेलनों में शामिल होने के लिए खूब निमंत्रण पत्र मिलते, पारिश्रमिक भी मिलता तथा यदि चल निकलते तो सोने के दिन होते चांदी की रातें होतीं। एक काम और करते। हर कवि-सम्मेलन में श्रोताओं के दल में अपना दल

वाते किन्तु हम तो उनके सर्वेन्ट क्वाटर में किरायेदार हो होते।
र लोग हमसे अभिनंदन कविताएं लिखवाते और अपना उल्लू सीधा
ते। हमको तो एक चाय का प्याला पिलाकर विदा करते। उत्सवों
हमारा उपयोग केवल कविता मात्र पढ़ने तक का रहता।
कविता संग्रह छपवाने को प्रकाशकों का चाटुकारिता करते। उनके
गान करते। उनकी दुकानों और घरों के चक्कर लगाते-लगाते
नी कई जोड़ी गौ-छाप चप्पलों का तल्ला घिसाते। प्रकाशक कहते
अपने संग्रह की बिक्री का प्रबन्ध हमें ही करना है, वह भी करते।
द संकलन को पुरस्कृत कराना होता तो दूसरों के दरवाजे खट-
ाते। उन लोगों की चिलम भरते बहरहाल हर कदम पर जो कुछ
रना होता तो दूसरों का मुंह देखे बगैर हमको करना होता। ऐसा
हो सकता था कि कई टक्करें खाने के बाद कोई प्रकाशक हाथ ही
ी रखने देता तो हिम्मत न हारते। अपने रिश्तेदारों मित्रों तथा
न-पहचान वालों से चन्दा करते लेकिन संकलन अवश्य छपवाते।
मके बाद यह तो निश्चित था कि उसे कोई पैसे देकर तो खरीदता
ही। अतएव पांच पांच प्रतियां तो मित्रों को जिन्होंने चन्दा दिया है,
न्हें दे देते बाकी प्रतियां समालोचना के लिए भेज देते बाकी अपने
र-दोस्तों में 'सप्रेम भेंट' लिख लिखाकर दे देते। तबियत का बह-
ाना ही तो है। अच्छा ही हुआ कि हम कवि होने से बाल-बाल बच
ये।

जादू है जो ये चमत्कार कर दे ।"

मैंने कहा, 'चौबे जी' आप तो पुराने जमाने में रहते हैं। आपकी श्रीमती जी भी इसीलिए आप से नाराज है। आजकल एक परीक्षा और होती है और वह होती है परीक्षा होने के बाद। वह परीक्षा देनी पड़ती है अभिभावकों को। परीक्षक का पता लगाना, उसके घर के चक्कर लगाना तथा साम, दाम, दण्ड, भेद से अंक बढ़वाना। जो अभिभावक अपने इस कर्त्तव्य का पालन निष्ठापूर्वक करते है उनके होनहार बालक उत्तीर्ण ही नहीं होते, वरन् अच्छे अंक भी प्राप्त करते हैं।

चौबे जी सुपारी मुंह में रखते हुए बोले, 'रामप्रसाद' अब मैं समझा बेटा जी को उत्तीर्ण कराने के लिए बाबूजी, नगरी-नगरी द्वारे-द्वारे घूमें, वाह रे समय। क्यों भैया, परीक्षक तो दूसरे नगर के भी होय है। इनके घर को पतो कैसे लगे?'

मैंने कहा, 'चौबे जी, कोशिश करने वाले बिल्टी नम्बर का पता लगाते हैं। फिर पार्सल बाबू की भेंट पूजा करते है। नगर का पता लगाकर उस स्टेशन पर जाकर, उस महान् आत्मा का पता लगाते हैं जो उस बिल्टी पर आई हुई उत्तर पुस्तिकाओं को ले गया। उस आत्मा को प्रभावित करने के उपाय खोजे जाते हैं। चौबेजी, यों समझिए जिस प्रकार शिकार करने जाते हैं उसी प्रकार परीक्षक का भी शिकार किया जाता है। कभी-कभी ये शिकार मार भी लाते हैं, पर कभी-कभी खाली हाथ भी लौटना पड़ता है।'

चौबे जी को गुस्सा आ गया। बोले, 'भैया मैं तो कहूं नाइ गयो। हम तो दिन-रात पढे। परीक्षा में बैठे और खूब अच्छे नम्बर सू पास भये। रुपया पैसे से काम है जातो तो खर्च कर देते पर हम पै भिखारिन की न्याई ऐसे धक्का तो खाए नांय जायं।'

मैंने कहा, 'चौबेजी, अब तो समय निकल गया। यह कार्य तो अब व्यवस्थित ढंग से चलता है। आपने परीक्षा-एजेंट का नाम नहीं सुना। ये अंक ही नहीं बढ़वाते, यदि आपका चिरंजीव कापी को खाली भी

छोड़ आता है तो पूरे वहीं मसान कम्पाउंडर आदि पुत्र के नाम में कापी जमा हो जायगा। 'जिन ढूँढा तिन पाइयाँ गहरे पानी पैठि।' परीक्षा एजेंट समय से पूर्व प्रश्न-पत्र भी आउट कराने का कार्य करते हैं।

चौबेजी बोले, 'ये कहाँ रहे? इनको क्या ढंग लगे? याकू समझाय के बताओ रामप्रसाद।'

मैंने कहा, 'आपके बस के ये सब काम नहीं हैं। ऐसे ही बुद्धू-दास, आपके बच्चे हैं। नकल कला में प्रवीण होते तो उन्हें आज यह दिन नहीं देखना पड़ता। जो होनहार होते हैं वे कालिज जाने का कष्ट नहीं उठाते, जमकर सिनेमा देखते हैं, रोमांस लड़ाते हैं और नकल करके प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होते हैं।'

चौबे जी हँसे, 'भैया, तू तो कबीर दास के रहस्य की-सी बातें कर रह्यो है। आजकल परीक्षा में जो निरीक्षक रक्खे जायें वे का सूरदास होते हैं? नकल करिबे वारे छोरनि कूँ रोकें नाय्ने?'

मैंने कहा 'चौबे जी, वही निरीक्षक यह खतरा उठाता है जिसका या तो बड़ी रकम का जीवन बीमा हो, अथवा घर से परेशान हो और भवबाधा से तंग आ गया हो। आप अखबार नहीं पढ़ते। परीक्षा के दिनों में कितने अध्यापकों का अभिनंदन समारोह होता है, कितने अस्पतालों में शोधकार्य को भेजे जाते हैं। 'जैसी चले बयार, पीठ तब तैसी दीजे' के अनुसार कुछ समझदार निरीक्षक गीता का पाठ करके निरीक्षण कार्य को जाते हैं। 'स्थितप्रज्ञ' की मुद्रा में रहते हैं, कौन क्या कर रहा है, इससे उन्हें कोई मतलब नहीं। कुछ 'दक्षिणा' लेकर नकल करने का वरदान भी देते हैं।'

चौबेजी ने तम्बाकू की फंकी लगाई, मूछों पर ताव दिया और बोले, 'रामप्रसाद, यार हमें एक नयी बात को पतो लगो। एक बहुत बड़े शहर में मास्टरन के वेतन तो कुल दो सौ रुपया, पर ट्यूशन ते वे दो हजार रुपया कमावें। ट्यूशन तो नाम को होइ है, रुपया तो पास कराईबे को 'गारन्टी' को है। तीन-चार मास्टर मिलि के सिंडिकेट बनाइ

मैंने कहा, 'चौवे जी, श्राप तो हँसी में कह रहे हैं, वास्तव में विद्यार्थियों की माँग है कि प्रश्न-पत्र बनाते समय विद्यार्थियों के प्रतिनिधियों का सक्रिय सहयोग प्राप्त किया जाय।'

चौवे जी बोले, 'रामप्रसाद, ये वही कहावत सच्ची है रही है कि उलटे बांस बरेली कूँ। गुरू तो गुड़ रहे चेला है गये शक्कर। और होंय भी क्यों नाय। न वैसे गुरू रहे और न वैसे चेले। विद्यार्थी अध्ययन काल में ब्रह्मचारी रहते, गुरू की सेवा करते, और उनकी आज्ञा के बिना कोई कार्य नांय करते। अब तो काऊ विश्वविद्यालय में जाओ, काऊ छोटे स्कूल में जाओ, कैसी-कैसी विचित्र वेश-भूषा में छोरा-छोरी आवें मानो कोई नुमाइश लग रही होइ, या कोऊ सर्कस में करिवे वारे कलाकारन कूँ देख रहे होय। छोरी-छोरन के कपरा पहरिके आवें और छोरान के केश देखो तो ये ही पता नांइ लगे कि छोरा है कि छोरी। समय ने कैसी कलामुन्डी खाई है कि केशव कहि न जाइ का कहिए।'

मैंने कहा, 'चौवे जी, अभी तो देखते जाइये, समय कैसे-कैसे गुल खिलाता है। विद्यार्थियों का कहना है कि अध्यापक उनकी सलाह से लिए जायं, उनकी प्रतिवर्ष परीक्षा लेने का अवसर विद्यार्थियों को दिया जाए।'

चौवे जी बोले, 'बात तो भैया सच्ची है, जो मास्टर नकल करने देंगे, जिनके संग सिगरेट उड़ावेंगे, मौज करेंगे वे रहेंगे बाकी लोगन की छुट्टी। अब तो भैया चलूँ, आज द्वारकाधीश के मंदिर में फूलन को हिंडोला बनो है, दर्शन करेंगे।

मैं भी चौवे जी के साथ मन्दिर जाने की तैयारी करने लगा।

तलवार की धार पै दौड़ना है।

'जाके पाव न फटी बिवाई, वो क्या जाने पीर पराई।'

नौकरी के दुःख-सुख वो ही जानता है जिसने नौकरी की हो। उर्दू में भी कहा है—

लुत्फ मैं तुझसे क्या कहूं जाहिद,
हाय कम्बख्त तूने पी ही नहीं।

आपके पुत्र की शादी होना आसान है किन्तु उसको अच्छी नौकरी मिलना अत्यन्त कठिन है।

सिफारिश रूपी पतवार के बिना नौकरी रूपी नैया चल नहीं सकती। मेरे दो तुक्तक हैं —

विज्ञापन देखकर भेज आया अर्जी
सूट सिलवाने गया, हंसने लगा दर्जी,
बोला है कोई 'पुल'
वर्ना रोशनी गुल
ये तो स्वयवर सब होते है फर्जी।

× × ×

इटरव्यू देने आये, श्री भगवानदास
जिनका आता था सदैव फर्स्ट क्लास
मैम्बर थे ताऊ,
लिए गये झाऊ
थर्ड डिवीजन मे सदा होते रहे पास।

किसी तरह से अगर नौकरी मिल भी जाय तो उसे जमाने मे एडी से चोटी तक का पसीना एक कर देना पड़ता है। यदि आपने पिछले जन्म मे पुण्य किए है तो 'बॉस' ऐसा मिलेगा कि आपकी आराम से कट जायगी और यदि आपको 'बॉस' 'निराले राम' टाइप मिल जाय तो

तलवार की धार पै दौड़ना है।

'जाके पांव न फटी बिवाई, वो क्या जाने पीर पराई।'

नौकरी के दुःख-सुख वो ही जानता है जिसने नौकरी की हो। उर्दू में भी कहा है —

लुत्फ मैं तुझसे क्या कहूं जाहिद,
हाय कम्बख्त तूने पी ही नहीं।

आपके पुत्र की शादी होना आसान है किन्तु उसको अच्छी नौकरी मिलना अत्यन्त कठिन है।

सिफारिश रूपी पतवार के बिना नौकरी रूपी नैया चल नहीं सकती। मेरे दो तुक्तक हैं :—

विज्ञापन देखकर भेज आया अर्जी
सूट सिलवाने गया, हंसने लगा दर्जी,
बोला है कोई 'पुल'
वर्ना रोशनी गुल
ये तो स्वयंवर सब होते है फर्जी।

× × ×

इंटरव्यू देने आये, श्री भगवानदास
जिनका आता था सदैव फर्स्ट क्लास
मैम्बर थे ताऊ,
लिए गये झाऊ
थर्ड डिवीजन में सदा होते रहे पास।

किसी तरह से अगर नौकरी मिल भी जाय तो उसे जमाने में एड़ी से चोटी तक का पसीना एक कर देना पड़ता है। यदि आपने पिछले जन्म में पुण्य किए हैं तो 'बॉस' ऐसा मिलेगा कि आपकी आराम से कट जायगी और यदि आपको 'बॉस' 'निराले राम' टाइप मिल जांय तो

तलवार की धार पै दौड़ना है।

'जाके पांव न फटी बिवाई, वो क्या जाने पीर पराई।'

नौकरी के दुख-सुख वो ही जानता है जिसने नौकरी की हो। उर्दू में भी कहा है —

लुत्फ मैं तुझसे क्या कहूं जाहिद,
हाय कम्बख्त तूने पी ही नहीं।

आपके पुत्र की शादी होना आसान है किन्तु उसको अच्छी नौकरी मिलना अत्यन्त कठिन है।

सिफारिश रूपी पतवार के बिना नौकरी रूपी नैया चल नहीं सकती। मेरे दो तुक्तक हैं —

विज्ञापन देखकर भेज आया अर्जी
सूट सिलवाने गया, हंसने लगा दर्जी,
होना है कोई 'पुल'
वर्ना रोशनी गुल
ये तो स्वयंवर सब होते हैं फर्जी।

× × ×

इंटरव्यू देने आये, श्री भगवानदास
जिनका आता था सदैव फर्स्ट क्लास
मैम्बर थे ताऊ,
लिए गये झाऊ
थर्ड डिवीजन में सदा होते रहे पास।

किसी तरह से अगर नौकरी मिल भी जाय तो उसे जमाने में एड़ी से चोटी तक का पसीना एक कर देना पड़ता है। यदि आपने पिछले जन्म में पुण्य किए हैं तो 'बॉस' ऐसा मिलेगा कि आपकी आराम से कट ...। और यदि आपको 'बॉस' 'निराले राम' टाइप मिल जाय तो

आपको नरक कुण्ड का आनन्द जीवित ही मिल जायगा। 'बॉस' यानी आपका अफसर यानी आपका मालिक यानी आपका ईश्वर। नौकरी की खातिर उसको खुश रखना पड़ता है। यदि वह दिन को रात कहे तो यही कहना पड़ता है 'हुजूर ये धूप नही निकल रही है चांदनी खिल रही है'। वो कहे कि तुम नालायक हो तो यही कहना पड़ता है 'आपकी कदरदानी की क्या तारीफ करूं?' उसकी खुशामद करनी पड़ती है. उसकी हां में हां मिलानी पड़ती है।

परमात्मा की दया से इस ससार में नाना प्रकार के जीव विचरते हैं। 'बॉस' भी मनुष्य होता है और आजकल तो मादा बॉस भी मिलती हैं। जितनी तरह के रग होते है उतने ही प्रकार के बॉस होते हे। सज्जन बॉस, दुर्जन बॉस, हसमुख बॉस, रोनी सूरत वाला बॉस, ईमानदार अफसर, बेईमान अफसर, घमण्डी अफसर, विनयशील अफसर ये आपकी किस्मत पर है कि आपको कैसा बॉस मिलता है?

मुझे तो तरह-तरह के बॉस मिले। एक बॉस ऐसे थे जिन्हे ये गौरव था कि वे बड़े सुरीले गाने वाले है। कहते है तानसेन अपने जमाने मे था, आजकल तो मैं ही हूं। हमारी किस्मत में उनका गाना लिखा था। हमको जब चाहते बुला लेते और सुनाने लगते अपना बेसुरा सुर। हम आफिस में काम करते, और वे तुरत चपरासी से हमें अपने कमरे मे बुला लेते और कहते देखो तुम्हे 'भीमपलासी' राग सुनाते है। और हम अपनी किस्मत को ठोकते हुए 'भीमपलासी राग सुनते रहते। वो तो दफ्तर का समय समाप्त होने पर चले जाते और हम आफिस खत्म होने के बाद अपने बाकी काम को पूरा करते रहते और उनको हृदय से आशीर्वाद देते रहते। दूसरा अनुभव हुआ साहित्यकार बॉस से। न करे भगवान् जो किसी को साहित्यकार बॉस मिले। एक स्कूल मे नौकरी की। बॉस महोदय हास्यरस के कवि थे। हम स्कूल में पढ़ाते लेकिन जब चाहते हमें कक्षा में से बुला लेते और सुनाने लगते कविता। गलती हमसे हो गई थी कि एक दिन हमने उनकी कविता की बहुत तारी

कर दी थी।

आप विश्वास करिए कि एक दफ्तर मे ऐसे बॉस मिले जिनके ८ लडकिया थी। हम जितने लोग वहा काम करते थे उन सबका ही प्रथम कार्य उनकी लडकियो के लिए योग्य वर तलाश करना था। सुबह होते ही सबकी क्रमश पेशी होती। हा आपस मे रोज यही सलाह किया करते थे कि भगवान् शीघ्र ही उनकी लडकियो के हाथ पीले कर दे वर्ना हमारा बेडा गरक हो जायेगा। दफ्तर से लौटकर घर वालो से लडकर नित्य लडके की तलाश मे निकलते थे. प्रात उनको खबर देनी पडती थी। कई तो इस चक्कर मे नौकरी छोड गये। हम तो सगाई कराते रहे और नौकरी मे तरक्की पाते रहे। हमने उनकी छ. लडकियो मे से तीन के लिए योग्य वर ढूढे। करी सेवा पाई मेवा।

कुछ अफसरो को उपदेश देने की बीमारी होती है। उन उपदेशो को पीना पडता है। खुद लेट आयेगे. सत्य बोलने से कोई सरोकार नहीं रखेगे ? बनते हुए काम का बिगाड देगे किन्तु आपको दिन भर अपने अमूल्य उपदेश देते रहेंगे। यह जानते हुए भी कि सब उपदेश हाथी के दातो की तरह दिखाने के है, उनको भक्ति एव श्रद्धा के साथ श्रवण करना पडता है। हा श्रीमान जी, हा साहब आप ठीक ही कह रहे है, मेरी तो आखे खुल गई। आप तो अनुभवी है। आप तो ज्ञान के भण्डार हैं मेरा बडा सौभाग्य है कि आप जैसे तपे हुए अनुभवी व्यक्ति के नीचे कार्य करने का अवसर मिला है आदि वाक्यो से जीवन पार करना पडता है, वर्ना नींद व भूख दोनो के चले जाने का खतरा सदैव बना रहता है। किसी ने सच कहा है, 'नौकरी क्यो करी, गरज पडी यो करी'।'

आफत तो तब आती है जब अयोग्य अफसर से पाला पड जाय। जो आपके ठीक किए हुए काम को गलत बतावे, आपके ठीक लिखे हुए ड्राफ्ट' मे बिना बात तीन स्थानो पर निशान लगा दे, एक काम ...ार कराकर चैन की सास ले। कुछ अफसरो के दिमाग मे यह

रहता है कि यदि उनके नीचे वालों के लिए काम को उन्होंने बिना कुछ परिवर्तन किए ही जाने दिया तो उनके महत्त्व का क्या रह जायेगा। सर झुकाकर, आदाब बजाकर हाथ जोड़कर वक्त पड़ने पर पैर छूकर अपना काम निकालना ही कल्याणकर होता है वर्ना हरी झण्डी दीखने का खतरा सदैव सामने खड़ा रहता है। सास को चाहे खिचड़ी बनाना भी न आता हो किन्तु बहू द्वारा बनाए गए स्वादिष्ट हलुए को भी यदि बुरा बतावे तो बहू को घूंघट निकाल कर यही कहना पड़ता है—हां सासू जी मुझ पर अभी खाना बनाना नहीं आता।

एक ऐसे अफसर से पाला पड़ा जिन्हें पहलवानी का शौक था। शाम को नित्य अखाड़े पर बुला लेते थे और जोर कराते थे। आप स्वयं सोचें आज जबकि वनस्पति घी से ही शरीर को पुष्ट बनाया जाता है, फल सिर्फ बीमारी में ही खाने को मिलते हैं, बादाम-पिस्तों का प्रयोग केवल आयुर्वेद की पुस्तकों में पढ़ने को मिलता है। वक्त पड़ने पर विटामिन 'सी' की गोलियों से ही शक्ति-संचय किया जाता है, यदि किसी पहलवान अफसर से पाला पड़ जाय तो आपकी हड्डी-पसलियों की रक्षा बांके बिहारी ही कर सकते हैं। हम तो जाते थे और उनसे जोर करते थे। एक दिन हमको ताव आया। कुश्ती जो थी, हमने उनके दोनों पैर उठाकर अखाड़े में दे मारा। बेचारे चारों कोने चित्त। तुरंत हमने 'सारी' कह उन्हें उठाया और पुनः उनसे हाथ मिलाकर चित्त अखाड़े में गिर गये और उनको यह अहसास कराया कि वे कितने शक्तिशाली हैं और हम कितने कमजोर। शायद उनकी कमर में झटका आ गया था, उसके बाद मुझे कुश्ती लड़ने नहीं बुलाया। जान बची और लाखों पाए।

योग में दिलचस्पी लेने वाला अफसर मिल जाय तो आफिस में प्राणायाम तथा योग के आसनों का अभ्यास करना पड़ता है, शतरंज के खिलाड़ी भी मिले तो रात के ग्यारह बजे तक शतरंज खेलनी पड़ती है। यदि उसे बागवानी का शौक है तो नित्य नयी पौधें लाकर देनी पड़ती

है, अगर उन्हें कथा-वार्ता का शौक है तो बैठकर कथा सुननी पडती है, अगर उन्हे पुरातत्त्व मे शौक है तो ढूढकर पुराने सिक्के और मूर्तिया लाकर देनी पडती हे। अगर उनके घर मे दावत है तो भट्ठी के पास बैठकर खाना बनवाना पडता है। अगर उन्हे कविता सुनने का शौक है तो कविता सुनानी पडती है, ईश्वर न करे उनका सर भी दुख जाय तो अधिक से अधिक बार उनकी तबियत के बारे मे पूछने जाना पडता है और खुदा न करे उनके गमी हो जाय तो इस कदर रोना पडता हे कि कम से कम दो रुमाल आसू पोछने म भीग जाय।

अन्त मे एक बार की बात और बता देना चाहता हू। अफसर को तो खुश रखना चाहिए किन्तु उससे भी अधिक अफसर की बीबी को खुश रखना नौकरी मे बहुत जरूरी है। अफसर को आप कितना ही खुश कर ले किन्तु बीबी यदि आपसे बिगड गई तो आपका भगवान् ही मालिक है। यहा सो वहा सवा सौ। जब बद्रीनाथ की यात्रा करने जाते है तो साथ मे केदारनाथ के दर्शन भी कर आते हे, इसलिए अफसर को खुश रखने के साथ साथ उसकी बीबी को भी खुश कर लिया तो नौकरी मे वो आनन्द मिलेगे जो स्वर्ग पहुचने पर भी नही मिल सकें।

॥ इति श्री नौकरी पुराण ॥

एक माडर्न प्रश्न-पत्र

परीक्षा का मौसम आ गया है। निरीक्षकों के पिटने का मौसम आ गया है। चिटें चलाने की बहार आ रही है। नकल करने तथा कराने की घड़ियां आ रहीं हैं। प्रेमिकाओं को परीक्षा में मदद करके उनके हृदय पर सीमेन्ट का प्लास्टर करने के सुनहरे मौके आ



रहे है। 'माईक्रोफोन' से उत्तर लिखाकर सर्वोदयी भावना की अभिव्यक्ति करने की शुभ घड़ी आ गई है। अस्त्र तथा शस्त्रों से सुसज्जित वीर बालक तथा वीर बालिकाएं रण-स्थल को कूच कर गये है। युद्ध प्रारम्भ हो चला है। प्रश्न-पत्र के रूप में दुश्मन सामने आएंगे किन्तु हमारे वीर इन सार्वजनिक पीड़ादायकों के दर्प का किस प्रकार भंजन

करते है ये अवश्य देखने की चीज है, तो लीजिए हिन्दी के लिए एक आदर्श प्रश्न-पत्र उपस्थित किया जा रहा है, प्रश्न पत्र बनाने वाले यदि चाहे तो इस प्रश्न-पत्र को एक मानक के रूप मे ग्रहण कर सकते है। अर्जी हमारी और मर्जी तुम्हारी है।

प्रश्न-पत्र इस प्रकार प्रारम्भ हो रहा है। पहला प्रश्न है — तुलसी दास यदि रामायण के स्थान पर फिल्म रामायण लिखते तो धर्मेन्द्र तथा हेमामालिनी को किन पात्रो के रूप मे चित्रित करते ?

दूसरा प्रश्न है—आपको बाबी फिल्म कैसी लगी उसकी कहानी तीन पष्ठो मे लिखिए।

जिनमे ये गाने गाये गए है वे कौन सी फिल्मे है ? (१) आवारा हू आवारा हू (२)हम तुम एक कमरे मे बन्द हो और चाबी खो जाय, (३)एक प्यार का नगमा है(४) जो वादा किया वो निभाना पडेगा।

निम्नलिखित विषयो मे से एक पर निबन्ध लिखिए—(अ) मेरी प्रिय फिल्म हीरोइन (ब) मेरा प्रिय क्रिकेट खिलाडी (स) काश मैं फिल्मी अभिनेता/अभिनेत्री होताहोती (४) परवीन बाबी एव मीरा बाई का तुलनात्मक अध्ययन।

अगला प्रश्न है फिल्म इस्टीट्यूट के डायरेक्टर को एक प्रार्थना पत्र लिखिए और इसमे इस बात पर जोर दीजिए।क यदि आपका चुनाव ट्रेनिंग के लिए न हुआ तो आप आत्महत्या कर लगे और इसकी जिम्मेदारी इस्टीट्यूट के डायरक्टर की होगी अथवा अपने छोटे भाई को एक पत्र लिखिए जिसमे हिप्पी कट बाल रखने के लाभ बताइये।

नया प्रश्न पुन यह होता—निम्नलिखित पर टिप्पणिया लिखिए-सचित्र उत्तर लिखने पर अधिक अक दिए जायगे। हाटपेन्टस, बाल-बाटम, मैक्सी, स्वीमिंग कास्ट्यूम, पौनीटेल, अजताजूडा तथा बाब्ड।

आगे का सवाल कुछ इस प्रकार का होता—आपकी पाठ्यपुस्तक मे काव्य सकलन के स्थान पर फिल्मी गीतो को रखा जाय तो आपको कैसा लगेगा ? सकारण उत्तर लिखिए।

अगला प्रश्न है—

निम्नलिखित फिल्मों की कहानियों का सार अधिक से अधिक चार पृष्ठोंमें लिखिए—मनोरंजन, दस्तक 'दोराहा तथा जरूरत।

अगला प्रश्न है— किन-किन फिल्मी हीरोइनों का रोमांस किन-किन हीरो के साथ चल रहा है? इन रोमांसों के रहस्यों का उद्‌घाटन करते हुए स्पष्ट लिखिए कि आपके विचार से यह शादियां किस तिथि तक हो जाएंगी। क्या आप इन शादियों में सम्मिलित होने का विचार रखते हैं? यदि आपको इन दिनों किसी निश्चित विवाह की तारीख का पता चले तो क्या आप परीक्षा छोड़ कर जाना चाहेंगे?

निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर प्रश्नों के उत्तर दीजिए—श्रवण कुमार एक बैकवर्ड व्यक्ति था। व्यर्थ ही अपने डैडी-मम्मी को इतनी लिफ्ट नहीं देना चाहिए। इससे उनका दिमाग आसमान पर चढ़ जाता है। इन लोगों को कंट्रोल में रखना चाहिए। एक अच्छा नागरिक बनने के लिए बस में उछलकर चढ़ने की आदत डालनी चाहिए। 'गुरू' शब्द दासता का द्योतक है। हमको इस विचार धारा का परित्याग करना चाहिए। गुरु के प्रसन्न होने पर तो उन्हें सिगरेट पेश करना ठीक है। समय मिलने पर गुरु के साथ सिनेमा देखा जा सकता है।

परीक्षा में नकल करने का अधिकार भारत के संविधान में जोड़ देना चाहिए। विद्यालयों में प्यार करने की छूट होनी चाहिए। प्रार्थना के समय फिल्मों के गाने समवेत स्वर मे गाये जाने चाहिए। पास-फेल का चक्कर जब तक चलेगा इस देश में समाजवाद नहीं आ पाएगा। हमें श्रेणी भेद भी मिटाना होगा। सबको एक ही श्रेणी में उत्तीर्ण घोषित करना होगा। जब तक पढ़ाई के क्षेत्र में समाजवाद नहीं आता अन्य क्षेत्रों में समाजवाद की कल्पना व्यर्थ है। विश्वविद्यालयों में परीक्षा के प्रश्न-पत्र विद्यार्थियों के द्वारा ही बनाए जाने

चाहिए। इस सेद्वत भाव कम होगा तथा गुरुजो और शिष्यो मे प्रेम भाव बढेगा। उत्तर-पुस्तिकाओ को उनसे जचवाना चाहिए जिनका उस विषय से पिछले जन्म मे भी सम्वन्ध न रहा हो, इसमे कापिया जाचन मे किसी भी प्रकार के पक्षपात की सभावना कम ही नही होगी वरन् समाप्त ही हो जायगी।

अवतरण तो आप पढ ही चुके। अव प्रश्नो के उत्तर दीजिए—

(१) श्रवण कुमार को 'वैकवर्ड, क्यो कहा गया ?

(२) लिफ्ट शब्द का प्रयोग वाक्य बनाकर कीजिए।

(३) गुरुओ से किस प्रकार के सबध रखने चाहिए ?

(४) परीक्षा के प्रश्न-पत्र वनाने का अधिकार किसको होना चाहिए।

(५) नकल करने के औचित्य को पुराणो के आधार पर सिद्ध कीजिए।

(६) मम्मी डैडियो को अधिक लिफ्ट देने से क्या हानिया है ? उनको कन्ट्रोल में रखने के क्या लाभ हैं ?

अन्तिम प्रश्न है—भारत वेद पुराणो का देश है। सभी आध्यात्मिक ग्रन्थो म दूसरो को पीडा देना पाप कहा गया है। पुराने धार्मिक ग्रन्थो से उदाहरण देकर यह प्रतिपादित कीजिए कि किसी विद्यार्थी को परीक्षा मे फेल कर देना पाप है और पाप करने वाले को इसका परिणाम इसी जन्म म ही नही वरन जन्मजन्मान्तरो में भोगना पडता है इसलिए विवेकशील परीक्षका को ऐसा पाप कम स्वप्न में भी नही करना चाहिए।

मनोरंजक इंटरव्यू

कार्यालय में हिन्दी सहायक का इंटरव्यू था। चेयरमैन महोदय चाहते थे कि उस व्यक्ति को नियुक्त किया जाय जिसे आधुनिक साहित्य का अच्छा ज्ञान हो और साथ में मौलिकता भी हो। दरअसल बात यह थी कि वे अपने संस्थान से एक पत्रिका निकालना चाहते थे।



प्रारम्भिक इन्टरव्यू में वे लगभग सौ प्रत्याशियों का इन्टरव्यू कर चुके थे। उनमें प्रतिभा कुमार ही सबकी समझ में आये थे। चेयरमैन साहब ने मुझसे सहायताके लिए कहा। प्रतिभा कुमार का पुनः इन्टरव्यू लिया गया। प्रतिभा कुमार बाल बाटम तथा बुश्शर्ट पहने हुए। बुश्शर्ट पर तरह-तरह के जानवरों के चित्र थे। हिप्पीकट बाल थे। सुनहरी फ्रेम

का चश्मा नयनों पर शोभायमान था। इन्टरव्यू वोर्ड में लाला रतन लाल चेयरमैन थे। वे रामलीला कमेटी के भी चेयरमैन थे। दो उनके चमचे थे जो वोर्ड के सदस्य थे। हमको इसलिए बैठाल लिया गया था, क्योंकि हम वहां उपस्थित थे। हां तो इन्टरव्यू इस प्रकार से हुआ :

चेअरमैन : —मिस्टर कुमार आप सबको अच्छा लगा है। ये हमारा फेंड भी तुमसे सवाल पूछेगा। इसका ठीक उत्तर देना तो काम बनने के चान्सेज है।

—नई कविता से आप क्या समझते हैं ?

—सर, जो न्यू हो।

—अकविता किसे कहते है ?

—सर, जो कविता न हो।

—ठीक। नई कहानी के बारे में आपका क्या ख्याल है ?

—सर, बी० ए० में हमने मनोविज्ञान भी एक विषय लिया था। उसमे नयी कहानी ने हमारी बहुत हेल्प की। एक तरह से मनोविज्ञान के पर्चे को हल करने में उसने कुञ्जी का काम किया।

—वेरी गुड। अच्छी नई कहानी के क्या गुण है ?

—सर, जिसमे घटना, पात्र चरित्रचित्रण, कुछ भी न हो। बस, एक आइडिया। सोरी सर, मै बता नही पा रहा।

—छोड़िए, आधुनिक उपन्यासकारों मे से आपको सर्वाधिक कौन पसद है ?

—सर, गुलशन नन्दा, हम बहुत एन्ज्जाय करते है। बहुत 'पावरफुल' 'वन्डरफुल' 'लवली' वैसे कर्नल रजीत भी अच्छा है।

—साहित्यकार की प्रतिबद्धता के बारे मे आपके क्या विचार हैं ?

— देखिए, आदर्श बघारने की बात छोड़ दें तो हमारी प्रतिबद्धता तो 'कॅरियर' बनाने में और चैक प्राप्त करने में है।

— वैरी गुड। आप काफ़ी 'फ्रेंक' है। आधुनिक समीक्षा के बारे में प्रकाश डालो।

— क्यों नहीं सर, जिस पुस्तक की समीक्षा की जाय, उसे छोड़कर उसमे सब लिखा हुआ हो, वह आधुनिक समीक्षा है।

— आप अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग बहुत करते हैं ?

— सर, हमारे तो घर में भी अंग्रेजी बोलते हैं हिन्दी पर तो 'पापा' डाँटते है।मैंने तो शुरू से ही अंग्रेजी माध्यम से पढ़ा है हिन्दी तो मैंने डंडी से बिना पूछे ही आफर कर दी थी। जब उन्हें पता चला तो बड़े बिगड़े।

— मिस्टर कुमार, गीता तो आपने पढ़ी होगी ?

— गीता। क्या कोई 'बुक' का नाम है। मैं तो सर, गीतावाली, गीताराय तथा सीता और गीता जानता हूं। गीतावाली अच्छी हीरोइन थी, उसकी मृत्यु हो गई। सीता और गीता पिक्चर 'पापुलर' हुई।

— रामचरित मानस के बारे में कुछ बताइये।

— सर, मुकेश के रिकार्ड से रामायण सुनी है, अच्छा गाया है।

— आप कौन-कौन सी साहित्यिक पत्रिका पढते हैं?

— केवल फिल्मी पत्रिकाएं पढ़ता हूं चाहे हिन्दी में हों या अंग्रेजी में

— नित्य प्रति कौनसा दैनिक पत्र पढ़ते है।

— झूठ न बुलवायें तो बताऊँ। मैं हिन्दी का अखबार

कभी नही पढता। घर में केवल अंग्रेजी के पत्र आते हैं।

— कुमार साहब, बहुत बहुत धन्यवाद। हम जैसा भी निर्णय करेंगे, आपको सूचना देंगे। अब आप जा सकते हैं।

— आप सबको 'थेंक्स'।

प्रभात कुमार के चले जाने के बाद चेअरमैन बोले कि लडका स्मार्ट है, चलेगा। हम को इतनी हिन्दी आनता हो, ऐसा ही आदमी चाहिए। उनके चमचों ने भी हां में हां मिला दी। पूर्व इसके कि हम अपने विचार प्रकट करते प्रभातकुमार की नियुक्ति का निश्चय कर दिया गया और हम अपना सा मुंह लेकर घर लौट आये।

इनसे मिलिए जो लोगों को आपस में भिड़ा देते हैं

यार लोगों को भिड़ाने में मजा आता है। ऐसा प्रतीत होता है कि जब ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना की तो साथ में भिड़ाने वालों को भी बनाया। यही कारण है कि पुरानी कहावतों में भी इनका वर्णन मिलता है। ब्रज में कहावत है'''भुस में आग लगाइ जमालो दूर भई।' 'एक



कहावत है 'चोर से कहू चोरी कर, शाह से कहू जागता रह।' मिले रहे और ना मिलें, इनसे का पतियाय।'''शीर्षक कहावत भी इन्हीं लोगों के अभिनन्दन में लिखी गई है। मैडम मन्थरा इस कला की बहुत प्राचीन विशेषज्ञा मानी जाती है। कैकई को ऐसी पट्टी

कि कहां तो राजतिलक की तैयारी हो रही थी वहा रामचन्द्र जी को १४ वर्ष के लिए बनवास करने जाना पड़ा।

यद्यपि मन्थरा को पैदा हुए हजारों वर्ष ही गए किन्तु जो हथकण्डे उसने अपनाये थे, लगाने-बुझाने वाले आज भी उन्ही पैतरों से अपने कार्य करते हैं। मन्थरा जाते ही कैकई से कहती है –

कत सिख देइ हमहिं कोउ भाई, गालु करव केहि कर बलु पाई।

रामहिं छांडि कुसल केहि आजू, जेहि जनेसु देइ जुवराजू।

नारद मुनि को भी इधर से उधर करने का शौक था। उनके भी अनेक किस्से मशहूर हैं। वे तो भगवान से भी नहीं चूकते थे। मन्थरा ने लगाई किन्तु बुझाई नही। कैकई की बुद्धि बदल दी। उसे समझाया कि भरत कारावास में रहेंगे, लक्ष्मण राम के नायब होंगे। घर घर मे नही तो हर कालोनी में एक दो मन्थरा मिल जायेंगी। भैनजी, आपको पता है आपके साहब दफ्तर से देर में क्यो आते है ? क्या कहा, दफ्तर मे काम ज्यादा है, तुम तो बड़ी भोली हो, मैंने उन्हे कल ही कनाटप्लैस के एक होटल मे दफ्तर की एक टाइपिस्ट के साथ गुलछर्रे उड़ाते देखा है, तुम मुझ मरी का मुह देखो जो मेरा नाम लो। भैन जी, अभी तो प्रारम्भ है। ये मामले जब बढ़ जाते है तो बड़ी मुश्किल हो जाती है। कभी-कभी तो तलाक की नौबत आ जाती है। जरा समझा देना और देखो प्यार से ही रास्ते पर लाओ, लो, हम तो मन्दिर जा रही थी, कही पट बन्द न हो गये हों। मन नहीं माना, मेरी मरी, कुछ आदत ही ऐसी है, दूसरों के यहाँ मुझसे क्लेश नही देखा जाता। अच्छा फिर मिलूगी।

कहिये, 'भुस में आग लगाय, जमालो दूर गई', बाबूजी पर दफ्तर से लौटने पर क्या बीतेगी, आप अन्दाजा लगा सकते है। बाबूजी दुनिया भर की कसम खायेंगे, बीवी को मनायेंगे, यदि घर में खाना न बना होगा, तो मय बाल बच्चो के होटल जायेंगे। बहरहाल उन्हे ईश्वर के हवाले करते हैं। परमात्मा उनको क्षमा करें।

आप पूछेंगे, उस लगाने वाली को इसमें क्या मजा आया ?

'भगवत रसिक रसिक की वानी,
रसिक विना कोउ समभु सके ना'।

इस आनन्द को वे ही जानते हैं जो इस कला के पारखी हैं। दूसरों में झगड़ा करा देने में जो मज़ा लोगों को आता है उसके लिए तो यही कहा जायेगा कि 'केशव कहि न जाय का कहिए' यदि आप किसी दफ्तर में या प्राईवेट संस्था में काम करते हैं, तो आप जानते होंगे कि चमचागीरी करने वाले, साइडबिजनेस की तरह लगाऊ-बुझाऊ का काम भी करते हैं। बॉस के यहां गये, कुछ मक्खनबाजी की और किसी के खिलाफ उन्हें भड़का दिया। सर, चौपड़ा कह रहा था कि साहब का रिकार्ड इतना खराब है कि उनका 'डिमोशन, होने वाला है। सर, सहगल कह रहा था आपकी पर्सनेल्टी 'पूअर' है। लोग आपको देखकर हँसते हैं। सर, दत्ता साहब कह रहे थे कि आपने अपनी पुरानी बीवी को छोड़ रक्खा है, आदि आदि।

कुछ बॉस सचमुच कान के कच्चे होते हैं, लगाऊ राम की पौ बारह हो जाती है और उस बेचारे को 'मीमो' मिलना शुरू हो जाता है।

कुछ कलाकार इसमें भी ऊंचे होते ? हैं हमारे पड़ोस में एक सज्जन रहते हैं। उनकी लड़की का सम्बन्ध एक अच्छे खानदान में तय हो गया। लड़का अच्छी जगह नौकरी पर लगा हुआ है। उन पड़ोसी के एक लगाऊ बुझाऊ टाइप रिश्तेदार थे। उनको जब सम्बन्ध के बारे में मालूम पड़ा तो आग बबूला इसलिए हो गये कि उनकी बिना स्वीकृति के यह सम्बन्ध पक्का कर दिया गया था। उन्होंने लड़की वाले से सम्पर्क स्थापित किया और उसे विश्वास में लेकर बोले, देखो भाई वैसे अपना हो लड़का है पर हम पर रहा नहीं गया। जब हमें मालूम पड़ा कि आपके यहाँ सम्बन्ध पक्का हो गया है तो आपको बताना अपना फर्ज समझा और चले आये। लड़का जुआरी है और शराबी भी। सिफारिश से नौकरी लग गई है। आपकी लड़की जिन्दगी भर दुख पायेगी। आपको भगवान की कसम, जो मेरा नाम लें, मैं

तो एक शुभचिन्तक की दृष्टि से बताये दे रहा हू। एक वार तो अपनी माँ के जेवर भी जुए मे हार आया। अभी वेटी वाप की है। हम तो कहे जाते हैं। आप कोतवाली मे पता लगा आयें, रिपोर्ट वगैरा भी हुई है। तारीख सन् वगैरा तो याद नही और तो और अपने डैडी के सामने भी पड जाता है। किसी से कहियेगा नही, एक वार तो उस पर हाथ भी उठा चुका है। इधर शादी के कार्ड भी छप चुके थे। तैयारियां जोरो से चल रही थी। लडकी की माँ बोली, 'जी, हमे ऐसे लडके से किसी भी हालत मे शादी नही करनी। लडकी चाहे कुवारी रह जाय। धन्य हो, इस सज्जन का जो रिश्तेदारी होते हुए भी इतनी दूर चलकर हमारी आँखें खोल गये'।

दुनियां से अभी भलमनसाहत गई नही है। कन्या पर तो सभी दया करते हैं। आग लगे ऐसे खानदान मे और मरी दौलत मे। हमें तो लडकी किसी सुपात्र को देनी है, नित्य के झगडे हमारे कौन भोगेगा? लडकी जिन्दगी भर हमे कोसेगी। दौलत को क्या छाती पर रखकर ले जाना है। ना वावा ना, हमे ऐसे घर शादी नही करनी। लडकी के डैडी कहते हैं, 'अरे, वावा, क्या पता ये आपस की दुश्मनी निकालने आये हो, पता लगा लेने दो।' लेकिन मैडम कहाँ मानने वाली थी वे तो अड गई सो अड गई। उनको समझ मे ये बैठालना कि लोगो को भिडाने मे मजा आता है, नामुमकिन है।

कभी-कभी ऐसे लोगो का फजीता भी हो जाता है। धनचक्कर लाल को लगाने-बुझाने का शौक था। एक साहब के मकान मे एक हिस्सा खाली था। मिस्टर मोहनलाल बैंक मे क्लर्क थे। ट्रान्सफर पर आये थे। घनचक्कर भी उसी बैंक मे काम करते थे। मोहन लाल को एक मकान दिखाने ले गये। सब बातें तय हो गई। कुछ दिन बाद वे उस मकान मे आने वाले थे। अपना शौक पूरा करने के लिए घन-चक्कर मकान मालिक के पास पहुचे और कहने लगे, 'मोहन लाल की श्रीमती का दिमाग चला हुआ है। आपको बता दिया।' जब

मोहनलाल एडवान्स देने पहुंचे तो मकान मालिक ने कहा कि जो साहब आपके साथ आये थे वह कह गये है कि आपकी बोवो का दिमाग चला हुआ है। मोहन लाल ने जब घनचक्कर लाल से कहा तो वे बोले, 'मैंने तो नहीं कहा; मकान मालिक का दिमाग ही चला हुआ होगा या उसकी समझ में नही आया होगा।' जब मोहन लाल ने बहुत जिद्द की तो घनचक्कर लाल ने मकान मालिक से कहा, 'जनाब कहीं सपनों की बातें तो नहीं कर रहे ? मुझे इन्हें मकान न दिलाना होता तो साथ लाता ही क्यों ? पता नहीं आपको कैसे यह गलत-फहमी हो गई। मैंने जाने किस प्रसंग में आपसे कहा होगा। आप जरूर याद कीजिए कि आपने मुझ से ही बातें की या किसी और से। इनकी तो अभी शादी ही नहीं हुई।' 'खैर, मैं ही गलती पर हू। मुझे मकान नहीं देना। हम घर गृहस्थी वाले हैं। हम तो, फेमिली वालों को ही मकान देंगे। घनचक्कर को अब बुझाने का 'मूड' आया। कहने लगे बीवी नहीं है तो क्या, बात तो पक्की हो चुकी है, शादी आपके मकान से ही होगी। आप इन्हें मेरी जिम्मेदारी पर मकान दे दीजिए। जब आप कहियेगा मकान खाली कर देंगे। और साहब, घनचक्कर लाल उसे मकान दिलवाने में सफल हो गया।

आपको भी जीवन में ऐसे भिड़ाने वाले आदमी मिले होंगे। यदि न मिल पाये होंगे तो कभी भी आप उनके चंगुल में फँस सकते हैं लिहाजा जरा ऐसे लोगों से बचते रहिये न मालूम कब आपको अपनी बीवी से ही लड़वा दे।

शिमला की सैर चढ़ाई से वैर

गीदड की जब मौत आती है तो वह शहर की ओर आता है। मैदान मे रहने वाले जीवधारी के जब बुरे ग्रह आते है तो वह पहाडो की ओर भागता है।



मई मे शिमला मे एक शिक्षा विषयक सैमीनार हुआ था। यह तो आप जानते ही होंगे कि इन दिनो जितने वर्कशाप प्रशिक्षण शिविर, मीटिंग आदि का आयोजन किया जाता है व सब पहाडी स्थानो पर ही आयोजित होते हैं। सैमीनारो का तो बहाना होता है मुख्य ध्येय पहाडो की सैर करना ही होता है। भक्तिकाल के कवियो के बारे मे कहा

जाता है कि कविता करना तो उनका बहाना था, वे तो वास्तविक रूप में भक्त थे। खैर, साहब, रिजर्वेशन अभियान को चल पड़े।

जिस दिन जाना था उससे भी अगले दिन तक के लिए कोई सीट खाली नहीं थी। धैर्य नहीं छोड़ा। हां, यह विचार अवश्य आया कि इस देश में शौकीनों की संख्या कम नहीं है। 'जिन ढूंढा तिन पाइया, गहरे पानी बैठ।' येन केन प्रकारेण सीट मिल गई। तबियत खुश हो गई। गाड़ी पर पहुंचे तो पता लगा 'कूपे' है।

दूसरी सवारी के रूप में एक अत्यधिक मोटी महिला हमसे पहले ही वहां विराजमान थी। मेरे पहुंचते ही बोली, 'देखिए मुझे आप नीचे की बर्थ दे दें तो बड़ी कृपा हो।' मैंने कहा, 'मैडम आप ऊपर जाइए तो सही, बर्थ अपने आप नीचे आ जाएगी।' (मैडम हँस पड़ीं) परिणाम हम ऊपर की बर्थ पर और महिला नीचे की बर्थ पर।

प्रातः गाड़ी कालका पहुंची। कालका से एक बालिका गाड़ी शिमला जाती है। मोटी देवी हमारी साथिन थीं ही एक डिब्बे में बैठे। डिब्बा छोटा था। मोटी देवीजी दरवाजे में फंस गईं। ठेलठाल कर उन्हें अन्दर किया। शिमला हम दोपहर को पहुंचे। एक कुली किया तथा अपने स्थान को चल पड़े।

कुली ने हमारा 'होलडोल' तथा 'अटैचीकेस' शरीर पर कस लिया। आगे-आगे कुली तथा पीछे-पीछे हम। थोड़ी दूर चढ़े होंगे तभी हमारे दिल की धड़कन बढ़ने लगी। कुली से पूछा 'भैया. जाकू हिल्स कितनी दूर है? क्या यहां रिक्शा टैक्सी इत्यादि नहीं मिलते?'

कुली बोला—बाबूजी, केवल अमुक-अमुक लोग ही यहां कार ले जा सकते हैं। दूर तो है, किन्तु आप धीरे-धीरे मेरे पीछे चले आइए। मुझे कवितावली में वर्णित यह प्रसंग याद आया जबकि बनवास के काल में सीता जो रामचन्द जी के साथ-साथ चलते-चलते थक गई थीं तथा बार-बार पूछ रही थीं कि अभी कितनी दूर और चलना है—

पुर ते निकसी रघुबीर वधू
धरि धीर दये मग में डग द्वै।
झलकी भरि भाल कनी जल की
पट सूखि गए मधुराधर द्वै
फिर बूझति हैं चलनों अब कितो
पिय पर्नकुटी करिहौ कित ह्वै
तिय की लखि आतुरता पिय की
अँखिया अति चार चली जल च्वै ।।

कुली मुस्करा रहा था। मैं उससे जब पूछता था कितनी दूर और चलना है, तो वह कह देता, 'बाबूजी जाकों हिल्स थोड़ी दूर है।' मैंने एक तरकीब सोची। कुली को बाहर इन्तजार करने के लिए कह कर मैं एक रेस्तरां मे घुस गया। गला सूख रहा था। मैंने वहा एक कॉफी का आर्डर दिया। रेस्तरां मे इतनी भीड़ थी जितनी प्रायः रोजगार दफ्तर में देखने को मिलती है। मैं स्वय चाहता था कि कॉफी मिलने में देर लगे ताकि कुछ देर और विश्राम कर लू। पहाड़ी स्थान यदि मयूर के समान सुन्दर है तो चढाई मयूर के पैरो के समान भद्दी है। टागे जवाब दे गई थी। रेस्तरा से निकल कर फिर कुली के पीछे-पीछे चलना प्रारम्भ कर दिया। अन्त मे हम 'जाखू हिल्स' पर अपने गन्तव्य स्थान पर पहुंच गये। कुली राम को विदा किया!

अन्य साथी जो पहले से ही ठहरे हुए थे दर्शनीय स्थानो का वर्णन कर रहे थे। शिमला मे एक हनुमान जी का मन्दिर है। जहा हम ठहरे थे वह स्थान यहा से उतनी ही चढाई पर था, जितना हम चढकर आए थे। मैंने वहा जाने वालो को अपनी शुभकामनाए अर्पित की तथा हनुमान जी को दूर से ही अपनी हार्दिक पुष्पांजलि अर्पित की।

खैर शाम को घूमने निकले। रिज यहा का सबसे आकर्षक स्थान है। वही किसी ने बताया कि इस स्थान को स्केन्डल पाइंट कहते है। उन सज्जन ने यह भी बताया कि अमुक महाराजा अग्रेजी वाइसराय

की पुत्री का अपहरण इसी स्थान से करके ले गए थे। इसलिए इसका यह नाम पड़ा है। मुझे बड़ा ताज्जुब हुआ कि कैसी पवित्र स्मृति को अमर बनाया गया है। मैंने वहां अनेक युवक युवतियों को यह कहते सुना शाम को 'स्कैन्डल पाइन्ट' पर मिल जाना। यह स्थान इतना सहज हो गया है कि इसका शब्दार्थ ही गायब हो गया।

जैसे रेलवे में एयरकन्डीशण्ड, फर्स्ट क्लास तथा सैकेण्ड क्लास होता है उसी प्रकार शिमला को भी तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है। कुछ भाग्यवान ऐसे होटलों में भी निवास करते हैं जिनमें एक दिन का खर्चा ३६५ रु० तक आता है। सौ रुपये रोज के होटल तो मामूली बात है।

वापिसी के दिन बस स्टैंड तक गए तो रास्ते में शिमले मे सैकेंड क्लास ही नहीं थर्ड क्लास के भी दर्शन करने को मिले। बिना बर्फ के ही स्केटिंग देखने का अवसर भी प्राप्त हुआ। ये टिकिट से होता है। नर और नारियां काठ के बने एक बड़े फर्श पर स्केटिंग करते हैं तथा चारों ओर दर्शक उनका अवलोकन करते हैं। मुझे वृन्दावन और मथुरा में होने वाली रासलीला का स्मरण हो आया। अन्तर इतना ही था कि वहां गोपियां अधिक तथा कृष्ण एक ही दिखलाई देते है यहां उलटा हिसाब देखा। कृष्ण अधिक तथा गोपियां केवल एक दो। आनन्द तो तब आता था जब नवसिखिए कलामुंडी खाकर गिर पड़ते है साथ ही अंग्रेजी 'ट्यून' बजती रहती है।

एक दूसरा पक्ष भी देखा। कुली लोग दो-दो की टोली में बड़े-बड़े ड्रमों को पीठ तथा पेट से बांधे हुए मीलों की चढ़ाई चढ़ते है। वे लोग कुबड़ों की तरह पीठ झुकाए जब अपनी मंजिल तय कर लेते हैं तब उन्हें मजदूरी मिलती है और वे अपना पेट भर पाते है।

वहां के आकाशवाणी केन्द्र से फोन आया, कहा—आप यहां आए हुए है एक वार्ता ही रिकार्ड करा दें। मैंने कहा, 'विषय क्या होगा? बोले—'कहां गये वे जो कालाबाजारी तथा तस्करी करके ठाठ किया

करते थे।' मैंने सोचा मैं उनका यहां कैसे पता लगाऊंगा? बहरहाल उस हास्य वार्ता को रिकार्ड कराने गया। आकाशवाणी ने कृपा करके वाहन भेज दिया वर्ना वहा पहुचते मेरा ढेर हो गया होता।

जब लौटने का समय पास आ गया तो सोचा गया कि शिमला से घर के लिए क्या ले चला जाय? पता लगा यहा बेलन बहुत अच्छे मिलते हैं? एक साथी बोला आजकल महिलाओ का आधिपत्य है, तुम्हे क्या सूझी कि खुद बेलन खरीद कर ले जा रहे हो। आखिर वे तुम्हारे ही खिलाफ इस्तेमाल किए जा सकते हैं? बहरहाल दुकानदारो से पता चला कि रोटी बेलने के अलग, पूडी बेलने के अलग तथा पापड बेलने के अलग बेलन मिलते हैं। सब तरह के खरीदे। कुछ लकडी के खिलौने लिए।

सब अच्छा था सिवाय चढाई के। किसी भी आनन्ददायक कार्यक्रम मे भाग ले रहे होते तो अच्छा लगता किन्तु जैसे ही यह ख्याल आता है कि अपने स्थान तक फिर चढकर पहुचना है तभी पूर्वज याद आ जाते। एक ख्याल आया कि यदि भगवान दौलत दे तो साथ में पुरानी पालकी तथा कहार साथ में और ले जायें, तभी शिमला का पूर्ण आनन्द लिया जा सकता है।

मुस्कान भरी दिल्ली

अखबार में पढ़ा कि चौबे जी का तबादला दिल्ली हो गया। वे मेरे लंगोटिया यार हैं। मथुरा में यमुना किनारे कई बार उनके साथ छान चुका हूं। रविवार का दिन था। पता लगा कर सुबह उनके यहाँ पहुंच गया। खाट पर बैठे हुए पान लगा रहे थे। देखते ही छाती से लगा लिया। बोले, 'भैया कुन्दन तेरी दिल्ली तो यार बड़ी विचित्र



नगरी है' मैंने कहा, 'चौबेजी, ऐसी क्या बात हो गई?' बोले भैया, 'मथुरा से बस में आये, आश्रम पर एक 'सैनबोर्ड' देखो कि 'मुस्कान भरी

'दिल्ली आपका स्वागत करती है। मैंने सोची चलो, अच्छे स्थान पर तबादलो भयो, हसी-खुशी दिन कटेंगे। आइकें तो दोस्त और ही रंग-ढंग देखे। तू झूठ मानेगो जा दिन से आयो हू मुस्कान कूं ढूंढत फिर रह्यो हू कि दिल्ली मे मुस्कान कौन सी तिजोरी में बन्द है।'

मैंने कहा, 'चोवेजो, आप तो वडे परेशान मालूम होते है। क्या दिल्ली मे आपको अच्छा नहीं लग रहा है?' तम्बाकू की फकी लगाते हुए बोले 'कुन्दन भैया, आते ही घर ढूंढवे में लग गय। तू जाने हम पिछले दिनन अनेक बार दिल्ली आये, सब यार दोस्तन से कही। जासे कही वाही ने वायदा कियो कि घर जरूर बतायगे पर भैया, बिनकी बातन के चैक भुने नहीं। दिल्लगी देखो कि न तो कोई मना करे है और न कोई घर बतावे। एक ने कही काई दलाल से बात करो। पीछे पतो लगो कि यहाँ दलाल को प्रापर्टी डीलर कहे है सो भइया, इनके चक्कर लगाइवो शिरु कियो। कैसो तमाशो है कि नाम 'प्रापर्टी डीलर' पर इनकी प्रापर्टी को कोई पता नहीं। ये तो समाजवादी दीख। दूसरे की प्रापर्टी कूं अपनी प्रापर्टी समझें। खैर भैया, बिनने घर दिखाये कुन्दन लाल, छोटी छोटी कुठरियन के सैकडन रुपया किराये।' मोय तो किरायेन की रकम सुनि सुनि के दिन में ही तारे दीखन लगे। फिर भैया तू जाने विवशता मे आदमी कूं सब करनो परे। पहले तो मन आयो कि मथुरा वारे घर कूं यहाँ उठाय लाऊं फिर सोची कि का मेरो मगज फिर गयो है, घर न भयो कोऊ बक्सा है गयो जाइ जहाँ मन चाहे उठाइ ले जाओ।'

मैंने कहा, 'चौवेजी, यहा घर बडी मुश्किल से मिले। आपकूं मिल गया यही क्या कम है। चौबे जी एक दम से कुछ याद करते हुए बोले, 'अरे कुन्दन' तेने असली बात तो सुनी नाइ। एक महिना का किरायो तो पेशगी घर मालिक कूं दीनो और वा रकम को आधो 'प्रापर्टी डीलर' को भेट कियो। पतो लगा यहाँ ये ही कायदा है कि वा के घर बतायवे को ये ही भेट पूजा है। सो भइया पहिले महिना तो ड्योढो किरायो

देनो पड़ो।' मैंने उन्हें सान्त्वना दी। 'चौवेजी, यह राजधानी है इसमें तो राजसी ठाठ-बाट हैं। पूर्व जन्म में जो पुण्य करके आता है वही यहाँ मकान मालिक के रूप में अवतरित होता है।

चौवेजी मेरी बात काटते हुए बोले 'कुन्दन, या घर-पुराण कूं छोड़ दे। अब तो भैया बस रोग की पोड़ा को निवारण कैसे होय ये बताइ। तू जाने, खायो पियो शरीर है, दोड़ो जाय नाइने। बस में कैसे घुसूं। दफ्तर घर से पन्द्रह किलो मीटर है। दो चार दिन तो स्कूटर में गयो। मीटर तो एक से दीखें पर हर स्कूटर वारो किरायो अलग अलग बतावे। सो भैया, सबरी तनखा स्कूटर और घर के किराये में दे दूंगो, तो का पूरे महिने खुद एकादशी व्रत रक्खूंगो और बाल बच्चन कूं भी अनशन कराऊं का?'

मैंने उन्हें समझाया—'चौवेजी, करत करत अभ्यास के जडमत होत सुजान' आप तो ज्ञानी हैं। गीता में स्थितप्रज्ञ की जो स्थिति बताई है, उसी में बस स्टेंड पर खड़े हो जाइये। एक निकल जाय, दो निकल जाय तीन निकल जाय, कोई दुख को मत मानिये। तुरन्त मिल जाय, फूलिये मत। गीता के अनुसार सुख और दुख को समान मानिये। आपने गीता का पाठ तो हजारों बार किया होगा किन्तु दिल्ली में आकर सिद्धान्तों पर अमल करना पड़ेगा तभी नैया पार लगेगी।'

चौवे जी बोले—'कुन्दन वेटा हमें ज्ञान का बतावे, हम सब समझें। प्रतीक्षा तो हम घंटन कर सकें पर दौड़ि के चढ़िवो धक्का देके दुसरेन कूं बाहर फेंक के घुसनों कैसे सीखें। क्यों कुन्दन, जैसे मोटर चलाइवो सिखाइवे के स्कूल होइ है ऐसे चलतो बस में चढिवो सिखाइवे के स्कूल दिल्ली में नाइने क्या?'

मैंने कहा 'चौवे जी, विचार तो आपका अच्छा है। आजकल वेकारी भी बहुत है। लघु उद्योग के रूप में इस प्रकार की ट्रेनिंग का स्कूल लोग खोल सकते हैं। इसमें चलती बस में सफाई के साथ चढ़ जाना, बस के दरवाजे में लटक कर चले जाना टेनिंग दी जा सके। मैंने

चौबेजी से कहा, बच्चों को स्कूल मे दाखिल करवा दिया ।

चौबेजी बोले, कुन्दन, यहां तो कुश्रा मे ही भांग परी है। यार दस स्कूलन मे धक्का खाय आयो। कोई हाथ ही नाय धरन दे। एक दो स्कूल वारे राजी भी भये पर विनकी फीसन के रेटन के सुनि सुनि के जीय धसिक गयो। फीस के अलावा सैकड़न रुपये ड्रेस, किताब, कापी, वस पिकनिक आदि के और बतावें। मन तो आयो कि पहले वा अफसर या मन्त्री कूँ पकरूँ जाने 'मुस्कान भरी दिल्ली आपका स्वागत करती है 'शीर्षक सैनबोर्ड लगाय रक्खो है। भैया, मैं तो जहा जाउँ मुस्कान की जगह रोइवो आवे हैं?'

मैंने कहा चौबे जी, फिर रुकिये, एक आइडिया मेरे दिमाग मे आया है। जल्दी नोट कर लीजिये। दिल्ली मे स्कूलों का धन्धा भी जोरदार चलता है। कहीं तलाश कर लीजिये। कोई सा नाम रख लीजिये स्कूल का। स्वय [illegible] हाई स्कूल पास न हो, एम० ए० तक की पढ़ाई का कालेज चलाइये। जम कर फीस [illegible] लीजिए। एक [illegible] प्रोफेसर रख लीजिए। जम कर चादी काटिए। हा, शुरू मे विज्ञापन पर कुछ रुपया लगाना पडेगा।

चौबे जी उछल पडे और बोले 'कुन्दन यार तेने तो ऐसे आइडिया दिए हैं कि नौकरी छोडवे को मन करि रह्यो है। नौकरी में तो बड़े झमट है। अफसर की खुशामद करिवे मे बडो टेम खर्च है जाए है। अफसर गुस्सा है जाय तो और कुछ न करेगो तो ट्रान्सफर ऐसी जगह कर देगो कि छटी को दूध याद आय जाय।

मैंने कहा, 'चौबेजी सब काम तभी कर सकेंगे जब आपका स्वास्थ्य ठीक रहे? इसलिए तन्दरुस्ती का यहा अवश्य ख्याल रखियेगा।'

चौबेजी बोले, 'भैया, स्वास्थ्य कैसे ठीक रहे? दूध तो बाबा के मोल है रबडी को कहू पतो. नाइने। एक ने बताई कि 'दिल्ली मिल्क स्कीम' ते दूध सस्तो मिले। वहा पहुचो तो पता लगो कि 'क्यू' मे लगनो परेगो तब अर्जी ली जायेगी। रही दूध की बोतल सो वा को मुख खोलवे को समय तो जब अच्छे नक्षत्र आवंगे तब आवेगो।

सपूत चंद ने परीक्षा दी

लाला किरोड़ी मल की पंसारी की दुकान थी। नमक से लगाकर झाड़ू तक उनकी दुकान में मिल सकती थी। लाला की उम्र ४० के लगभग थी। उनके एक ही लड़का था। नाम रक्खा था सपूत चन्द। लालायन ने कहा, देखोजी, तुमने तो किसी स्कूल की सूरत नहीं देखी, लल्ला को तो पढ़ा लो। कम-से-कम हिसाव-किताब लिख लेगा और सेल्स



टैक्स वालों से कानूनी वात कर लेगा।'

लाला वोला, 'देख भाई मैं तो कुछ भी पढ्या न लिख्या पर तेरी चार-चार लड़कियों की ठाठदार शादी की, पांच कोठियां अब भी खड़ी हैं। छोरा की आंखें क्यूं फोड़े है। बी० ए०, एम०ए० जूती चटकावे

है। अपनी तो कम तोलवे की और मिलावट करवे की दो विद्याए है, सो दुकान पे बैठेगा, अपने आप देखते-देखते समझ जाएगा।'

लालायन बोली, 'देखोजी, हर बात मे जिद्द अच्छी नही होती। तुम्हारी तो कट गई, सरकार भी अब कड़ी पड़ गई है, तुम से कितनी बार कही है कि कम तोलनो और मिलावट करनों बिल्कुल छोड़ दो पर तुम्हारी तो घुट्टी मे पिलाई गई है। डर के मारे कभी तो छोड देते हो पर हेरा-फेरी करने से बाज नही आते। किसी दिन अन्दर चले गये तो सपूत वकीलो से बातचीत तो कर लेगा। मै मरी तो इस काम की नही हू।'

अन्त मे लाला मान गये। सपूत चन्द को मोहल्ले के एक स्कूल मे दाखिल कर दिया। हर कक्षा में दो वर्ष के हिसाब से जमते हुए केवल २४ साल की उम्र में उन्होने हायर सैकेण्डरी परीक्षा दी। लाला अपने-प्रेमी हैं। हिन्दी का पर्चा उन्होने कैसे लिखा, ये सपूत चन्द ने मुझे बताया। प्रश्न पत्र मे 'सुदर्शन की ताई' कहानी की सामान्य विशेषताओं का परिचय लिखने को कहा गया था। सपूत चद अपनी सगी ताई के बारे में पाच पृष्ठ लिख आए। सपूत चद ने लिखा था कि ताई कितनी मोटी है, दिन भर सोती रहती है, अपने पति से प्रायः नित्य लड़ती है आदि आदि।

मेरे पूछने पर सपूत चन्द बोले 'जब हमारी खुद की ताई मौजूद है तो हम किसी दूसरे की ताई पर क्यों लिखते।'

मैंने कहा, 'खैर, लेख किस विषय पर लिख आया ? बोला, गुरुजी 'मेल-मिलाप के लाभ' पर लिख आये। चाचा विभिन्न वस्तुओ का जो मेल-मिलाप दुकान मे कराते है उन्हे ही लिखा। गेहू से ककड़ का मेल-मिलाप, घी से चर्बी का मेलमिलाप आदि-आदि। उछलते हुए कहने लगे, निबन्ध का विषय हमारे मन का आया।

मैंने कहा, तो एकाकी नाटकों पर क्या लिख आए ? सपूत चद बोले, गुरुजी 'एक दिन हम किताब दुकान पर छोड़ गये थे। चाचा

ने उसका उपयोग नमक-मिर्च की- पुड़ियां बांधने में कर दिया फिर दूसरी किताब दिलाई नहीं। अन्दाज में लिख आये।

'नए मेहमान' अथवा 'रीढ़ की हड्डी' पर इन दो के आशय लिखने को आये। हम तो मेहमानों की परेशानियों पर आठ पृष्ठ लिख आये। इस साल हमारे यहां कितने मेहमान आये और जित्ते दिन रहे उन सब का पूरा रोजनामचा ही लिखा। क्यों गुरुजी, खूब नम्बर मिलेंगे न?

मैंने कहा, दोहा, अलंकार और छंद वाला सवाल तो पूरा कर आये होंगे। इस पर बहुत खुश होकर बताने लगे 'गुरुजी पहला पूरा सही हो गया। भ्रम अलंकार के बारे में लिख दिया कि भ्रम करना बुरी चीज है किसी को भ्रम नहीं करना चाहिए। 'दोहा' छंद के बारे में लिख आये है कि हमारे 'दूध' बातल का आता है गाय हमारे यहां नहीं है इसलिए 'दोहा' हमारे यहां नहीं आता।। गुरुजी मालिनी नाम से काई गलत छंद छप गया था, हमने साफ लिख दिया कि हेमा मालिनी होना चाहिए मालिनी नहीं। प्रश्न-पत्र में सवाल गलत नहीं छपने चाहिए। आगे से ध्यान रखा जाय।. और गुरुजी स्वामी विवेकानन्द या महात्मा गांधी के बारे लिखने को आया था और ये भी पूछा था कि आधुनिक भारत के निर्माण में उनका क्या योगदान है? मैंने सोचा महात्मा गांधी पर तो अधिक विद्यार्थी लिखेंगे इसलिए स्वामी विवेकानन्द पर लिख आये। महापुरुषों की जीवनियां संबंधी किताब तो शुरू में ही नहीं खरीदी थी। हमारी दुकान पर कई बार आते रहते हैं, भूत-भविष्य के बारे बताते हैं तथा जो चाचा देते है वही ले जाते हैं। और ढेर सारे आशीर्वाद दे जाते है हमने तो उनका ही वर्णन कर दिया। क्यों गुरुजी, ठीक बैठ जाएगा न?

अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या आई थी पांच छंद थे, और तो समझ में नहीं आये। 'मेरा मन अनत कहां सुख पावे' में नीचे की पंक्ति में लिखा था सूरदास प्रभु।' हम तुरन्त ताड़ गये कि उसके लेखक

सूरदास होगे। उसका अर्थ लिख दिया कि हमारा मन तो दुकान के अलावा कही सुख नही पाता जो आनन्द इसमे आता है वह गगा में स्नान करने से भी अधिक सुखदाई है और हम अपनी दुकान रूपी कामधेनु को छोडकर क्यो कोई दूसरा काम करें।

गुरुजी बोले 'बेटा, प्रश्न-पत्र तो तुमने बहुत ही अच्छे किए है। इनमे मौलिकता है। जब बिना पढे तुम इतने अच्छे पेपर कर सकते हो तो पढकर तो न जाने कितनी अच्छी तरह से करते। इतने मे ललायन गुरुजी के लिए जलपान लेकर आ गई। घर मे बने रसगुल्ले और मठरी गुरुजी के सामने रखती हुई बोली, 'पडित जी, आप निरस-कोच भोग लगाइए। ये शुद्ध घी के हैं। मैं तो अपनी दुकान से घी नही मगाती मेरी अम्मा मुझे गाँव से घी भिजवावे हैं। देखो जी दुकान पर सब मिलावट चले हैं। क्यो गुरुजी, लल्ला की कौनसी डिवीजन आजावेगी। गुरुजी रसगुल्ला मुह मे रखकर बोले 'सेठानी, फर्स्ट डिवीजन मे तो कोई शक नही, भगवान चाहो तो मेरिट लिस्ट मे नाम निकलेगा। सेठानी ने चार रसगुल्ले जबर्दस्ती पडित जी की प्लेट मे डाल दिए।

जब गुरुजी जाने लगे तो सेठानी बोली'—पडित जी जिस दिन रिजल्ट निकले, आप उस दिन हमारा ही घर पवित्र करें। सत्य-नारायण की कथा भी वचवा लेगे। और आपकी भेंट पूजा भी कर देगे।

गुरुजी आशीर्वाद देकर चले गये। 'रिजल्ट' जिस दिन आया लाला के लडके का रोल नम्बर नदारद था। पडित जी उसी दिन से हरद्वार चले गए हैं अभी तक लौटे नही हैं। उनके घर वाले बडी चिन्ता मे पड गए हैं। भगवान वे राजी खुशी घर लौट आवें।

इंटरव्यू

इंटरव्यू आधुनिक युग की एक देन है। नौकरी हो अथवा शादी, बिना इण्टरव्यू के यह पूरी नहीं मानी जाती। नौकरी के लिए यदि अर्जी सत्य हरिश्चन्द्र को लिखनी पड़ती तो वह आजन्म बेकार ही रहते। मेरा ऐसा ही ख्याल है कि वह अर्जी दे ही नहीं पाते। आप किसी इण्टरव्यू देने जाने वाले व्यक्ति को देखिए चाहे वह नर हो या नारी ऐसी वेशभूषा पहनकर जाते हैं, मानो सुसराल जा रहे हों। ऐसे लोग सुबह आठ बजे तक सोते रहते हैं। और बड़ी लापरवाही से दाढ़ी बनाते हैं, इंटरव्यू में अपने को ऐसा फुर्तीला दिखलाने की चेष्टा करते हैं, मानो उनके स्वभाव में ही फुर्ती घुसी हुई हो।

मैं एक इंटरव्यू देने गया। गर्मी के दिन थे। बुशर्ट आधी बाहों की थी। एक मित्र बोले, तुम्हें पूरी आस्तीन की बुशर्ट पहनना चाहिए ताकि यह मालूम पड़े कि तुम गम्भीर आदमी हो। आधी आस्तीन की बुशर्ट से बचकाने लगते हो। नौकरी मिलने की आवश्यक शर्त यह थी कि ग्रामीण जीवन का अनुभव आवश्यक है। अपने राम जन्म से लेकर अब तक शहर में निवास करते हैं। हां, मैथिलीशरण गुप्त की कविता अवश्य याद करली थी तथा गांव के बारे में आवश्यक जानकारी भी प्राप्त कर ली थी। इण्टरव्यू में पहुंचकर नमस्कार किया और बैठ गये। तीन सज्जन इण्टरव्यू ले रहे थे। उन्होंने मुझ से जो प्रश्न किए और मैंने जो उत्तर दिए, वे निम्नलिखित हैं:—

'आपने ये सब परीक्षाएं पास की हैं?'

'जी साहब।'

'सर्टीफिकेट दिखाइये।'

'देखिए साहब।'

'आपको ग्रामीण जीवन का अनुभव किस प्रकार हुआ ?'

'सर छुट्टियो मे मैं ग्राम-सेवा करने चला जाया करता था।'

'वहा आप क्या सेवा करते थे ?'

'सर गुड खाते थे। गन्ना चूसते थे। ग्रामीणो से दु ख सुख की बाते पूछते थे और चले आते थे और सर, डाक्टर मैथिलीशरण गुप्त की एक कविता भी मुझे याद है,

अहा, ग्राम्य-जीवन भी क्या है!
क्यो न इसे सबका मन चाहे?

और सर, ग्राम्य जीवन बड़ा सुन्दर होता है।'

'मिस्टर हम यह पूछना चाहते हैं कि आपको ग्रामीण जीवन की समस्याओ का ज्ञान है ?'

'क्यो नही है ? सर, मैं तो ग्राम्य-जीवन को प्रेम करता हू और चाहता हू कि भारत का प्रत्येक गाव उन्नति करे।'

'हम आपसे समस्यायें पूछते है। आप इधर उधर की बाते करते है। 'इस समय खेती की उन्नति के लिए क्या क्या किया जाना चाहिए ?

'सर, गाव मे खेती खूब होती है। समस्याए है और नही है और समस्याए कहा नही होती ? धीरे धीरे बहुत ठीक हो गई बाकी धीरे-धीरे हो जाएगी।'

'बताइए फसले कितनी होती है ?'

'सर हर महीने नयी फसल होती है। कोई दो महीने मे होती है।'

'हम पूछते है रबी और खरीफ का नाम आपने सुना है ?'

सर, मैं भूल गया। ये दोनो फसले ही है और हर महीने होती है।'

'अच्छा अब बताइए रुई के लिए कैसी मिट्टी की आवश्यकता होती है ?'

'सर, मुझे तो किसी तरह की मिट्टी अच्छी नही लगती। फसलें



तो मिट्टी से खराब हो जाती है लेकिन रुई के लिए गुलाबी मिट्टी लाभदायक रहती है।'

'गेहूं की फसल साल में कितनी बार होती है?'

'सर, हम तो साल भर में गेहूं की ही रोटी खाते हैं। हर महीने ही होनी चाहिए? कही कही नही हो पाती, लेकिन चेष्टा करने से हो सकती हैं।'

'ग्रामीण लोगों को धन की व्यवस्था कौन करता है?'

'सर, स्वयं सब अपनी करते हैं। हर गांव में बैंक खुला है। बैंक से रुपया निकालते हैं।'

'फसलों को कीड़े नुकसान पहुंचाते हैं। इस समस्या पर आप क्या हल पेश करते है?'

'सर, यदि चौबीस घण्टे रखवाली की जायेगी तो कीड़े खा ही नही सकते हैं। शुरु से ही उनको रोकना चाहिए।'

'अच्छा यह बताइये, 'मिट्टी के कटाव'को किस प्रकार रोका जा सकता है?'

'सर, सारे खेतों को वर्षा से बचाने के लिए उनके ऊपर गर्डर डाल कर छतें बनवा देनी चाहिए। जब तक पक्की छतें न बन सकें, टिन शेड डाल देने चाहिए। न वर्षा खेत में होगी और न मिट्टी को बहाकर ले जाएगी।'

'लेकिन मिस्टर, बिना बरसात के खेतों में पानी कैसे लगेगा?'

'नहरों तथा नलकूपों से सर।'

थैंक्यू अब आप जा सकते है।

'नो मैंन्सन सर।'

मैं चला आया। मैंने अपने मित्रो को इण्टरव्यू की कथा प्रारम्भ से अन्त तक बताई। वे सब शहर के ही थे। जैसे उत्तर मैं देकर आया था, उनमें से अधिकांश यही उत्तर दे आये।

इन्तजार करते करते सालों गुजर गए किन्तु नियुक्ति-पत्र नही मिला। मुझे दुःख नियुक्त-पत्र न मिलने का उतना नही रहा, जितना कि बार बार झूठ बोलने का क्योंकि मैं प्रायः इण्टरव्यू में ही झूठ बोलता हूं और सचमुच यह कहावत सच ही हो गयी धरम गया धन हाथ न आया।

इसी प्रकार प्रिंसिपाल पद के लिए एक इंटरव्यू मे जाना पड़ा। प्राइवेट सस्था थी। उच्च परीक्षाएं व्यक्तिगत रूप से दी थीं। वह कालेज कामर्स का था। अनुभव के नाम पर कोरे थे, किन्तु अर्जी मे अनुभव लिख दिया था। डिवीजन थर्ड था, उसे लिखा ही नही था। सूटबूट डालकर टाई लगाकर इण्टरव्यू मे पहुंचे। जाते समय एक मित्र ने कह दिया था कि तुमसे शिक्षा विभाग के जिस अधिकारी के बारे मे पूछा जाए, उसी के बारे मे कहना कि उससे तो मेरा बचपन का दोस्ताना है। उनकी सलाह भी ठीक थी। वहां पांच सज्जन बिराजे हुए थे और एक एक कर प्रश्न पूछ रहे थे। इतने आदमियों को देखकर एक तो वैसे ही मेरा माथा चकरा गया, किन्तु परमात्मा का ध्यान कर मैं उन सबको नमस्कार कर बैठ गया। मेरा उनका जो वार्तालाप हुआ वह इस प्रकार था—

'आपने एम० काम० तथा बी० काम० की डिग्री नही लिखी। आपका कौन-सा डिविजन आया था।'

'सर, टाइप मे रह गया था। ये उसी की लापरवाही है। जल्दी मे ... हो गया।'

'सर यह छोड़िए। अब बताइए, डिवीजन कौन सा था? हम लिख -

'ए'

'स' 'सर दोनों बार मैं ऐन इम्तहान के दिन बीमार पड गया तो पेपर

'अच्छा नही दे पाया? लेकिन जितने दे पाया उन्ही मे पास लायक

होती है?' गए और मैं निकल गया। मुझे खुद बड़ा आश्चर्य

'सर, मुझे तो.

डिवीजन मे पास हुए।'

...रम्भ से

...र आया था,





'सर शायद ऐसा ही है।'

देखिए, आपने यह तो लिखा है कि आपको प्रिंसिपल पद पर काम करने का अनुभव है किन्तु आपने यही नहीं लिखा कि आपने किस विद्यालय में कितने वर्ष कार्य किया है ?

'सर, यह भी टाइप वाले की गलती है। 'नहीं' टाइप से रह गया है। मैंने तो लिखा था मुझे प्रिंसिपल पद का अनुभव नहीं है।'

'यदि अनुभव नहीं था तो इसके लिखने की क्या आवश्यकता थी।'

'सर, मैं झूठ नहीं बोलना चाहता।'

'आप बड़े सिद्धान्त वादी मालूम होते हैं।'

'सर, बचपन से ही सत्यवादी रहा हूं।'

'आप गेम्स में दिलचस्पी रखते हैं ?'

'मैंने अपने 'गेम्स सर्टीफिकेट साथ में लगाए हैं। आप कृपा कर उन्हें देख लें।'

'जनाब, मैं यह जानना चाहता हूं कि हाकी की फील्ड की लम्बाई चौड़ाई कितनी होती है ?'

'सर, ये तो मैंने कभी नापी नहीं। लेकिन फील्ड काफी लम्बी चौड़ी होनी चाहिए।'

'अच्छा यह बताइए, बालीबाल में दोनों तरफ कितने लड़के खेलने चाहिए ?'

'सर, हमारे स्कूल में तो जितने लड़के खेलना चाहते थे, उतनों को ही खिलाते थे। हमारे प्रिंसिपल साहब किसी भी बच्चे को खेलने से रोकते नहीं थे।'

'अच्छा यह बताइए, क्रिकेट की बाल और हाकी की बाल में कुछ फर्क होता है।'

'सर, दोनों ही पत्थर के समान कड़ी होती है और दोनों से ही सर फूट सकता है। मेरे ख्याल से तो कोई दूसरा फर्क मालूम नही

पडता।'

'खैर हम समझ गए कि ये गेम्म के सर्टीफिकेट आपने किस प्रकार प्राप्त किए है।'

'सर, गेम्स वाले मास्टर साहब को एक किलो बंगाली रसगुल्ले खिलाये थे।'

'हमें यह जानकर बडी खुशी हुई कि आप प्रत्येक बात सच सच बता रहे है।'

'सर, मैं पहले ही बता चुका हू कि मैं बचपन से ही सत्यवादी रहा हू।'

'अच्छा, यह बताइए कि आप स्काउट रहे हैं ?'

'सर, सच बोलना तो स्काउटिंग से ही सीखा है।'

'कैम्पफायर' से आप क्या समझते हैं ?'

'सर, जब कैम्प मे आग लग जाती है, तो 'कैम्पफायर' हो जाता है।'

'आप स्कूल मे अनुशासन किस प्रकार सुधारेंगे ?'

'सर, खूब फाइन करूगा और लेक्चर झाडूगा। बस, अनुशासन ठीक हो जाएगा।'

'अच्छा आपने लिखा है कि आप रेडियो आर्टिस्ट भी हैं।'

'सर, मेरा नाम फरमाइश करने वालो मे कई बार प्रसारित हो चुका है।'

'आपको और भी कोई कार्यक्रम रेडियो से प्रसारित हुआ ?'

'सर, मैं रेडियो कार्यक्रम मे बहुत दिलचस्पी रखता हू। जो प्रोग्राम बहुत अच्छा लगता है उसके लिए पत्र भेजता हू। जो पसन्द नही आता उसके बारे मे भी भेजता हू।'

'आपने लिखा है कि आप एक अच्छे लेखक भी है।'

'सर, मेरे अनेक पत्र 'सम्पादक के नाम पत्र' कालम मे छप चुके है।'

'अच्छा यह बताइए कि हिन्दी साहित्य मे आपका प्रिय कवि

ौन है ?'

'प्रेमचन्द, और जैनेन्द्र कुमार।'

धन्यवाद आप जा सकते हैं।

और मैं वापस चला आया। मेरी समझ में इण्टरव्यू सत्य पर ह। प्राधारित था किन्तु नियुक्ति पत्र अभी तक नहीं आया।

पत्नी भक्ति ही सच्चा आनन्द मार्ग है

धन्य है वे लोग जो पत्नियों के भक्त हैं। भक्त केवल नाम क
होना पर्याप्त नही है उसे सचमुच मे भक्त बन कर अपनी पत्नी क



सर्टीफिकेट लेना पडेगा। सिनेमा शो समाप्त हो चुका है, आगे-आगे
बनी-ठनी, क्रीम से सनी, नाम से हनी, हीरे की कनी, शान से तनी,

गजगामिनी सी बीबी जी चल रही हैं तथा पीछे-पीछे जोरु के गुलाम जो गोद में एक बच्चा तथा दूसरा उंगलियों के सहारे लिए मालकिन के कदम से कदम मिलाए चल रहे हैं। ये कितने रसविभोर है कि "भगवत रसिक रसिक की बानी, रसिक बिना कोउ समझ सके नाही" कहा जायगा। जोरु की गुलामी में इतना आनन्द मिलता है कि "केशव कहि न जाय का कहिए" तुलसीदास जी ने ठीक ही कहा था हित अनहित पशु पच्छिहु जाना, तो मनुष्य से यह आशा की जाती है कि वह अपना नफा-नुकसान सोच सकता है। समझदार लोग कह गए है कि यदि अपना जीवन दुख प्रूफ बनाना चाहते हो, चैन की बंसी बजाना चाहते हो, सुख से सोना चाहते हो, बेफिक्री से भोजन करना चाहते हो तो एक ही व्रत धारण कर लो 'तन-मन-धन जोरु जी के अरपन' ये नुसखा आजमाया हुआ है। जोरु के गुलाम की कल्पना एक नौकर के मन में क्या है इसका अनुभव हमें उस दिन हुआ जब कि एक श्रीमती जी ने एक नौकर रखने का निश्चय किया। नौकर ने पूछा कि उसे क्या क्या काम करने पड़ेंगे? इस पर श्रीमती जी बोली, बाजार से सौदा लाना, डिपो से दूध लाना, बच्चों को स्कूल ले जाना, 'क्यू' में लगकर राशन लाना, सिनेमा की टिकट का रिजर्वेशन कराना आदि। वे आगे और स्पष्ट करती हुई बोली—जो मैं कहूं और जिस वक्त कहूं बिना कोई नुक्ताचीनी किए तुरन्त उस काम को करके लाना होगा। नौकर पहले तो सब सुनता रहा फिर नम्रता से बोला 'मैडम, शायद आप को नौकर की तलाश न होकर आज्ञाकारी पति की तलाश है। और यह कह कर विदा हो गया। बात बिल्कुल साफ है। जिस घर में जोरु का गुलाम उपस्थित है, सेवा को तत्पर है, सच्चे स्काउट की तरह आज्ञाकारी है। एक बहादुर सिपाही की तरह अपनी बीवी को कमाण्डर मानकर उसकी कमाण्ड का पालन करता है, वहां नौकर रखने की कभी आवश्यकता पड़ ही नहीं सकती। वर्तमान समय के परिप्रेक्ष्य में जब कि मंहगाई के कारण सद्गृहस्थ की कमर टूटती जा रही है उन्हें वे यदि अब तक आदर्श

जोरु के गुलाम नही वन पाए है तो तुरन्त वन जाना चाहि
चूकि फिर का पछताने ।'

हमारे एक मित्र है मिस्टर चौपडा । चौपडा जी प्रात ४ दूध इत्यादि लाकर मकान तथा वर्तनो की सफाई प्रेमपूर्व स्टोव जलाते हैं । वडी तवियत से चाय तैयार करते है, टोस्ट मक्खन लगाकर उन्हे टेवल पर सजा देते है । तव अपनी राधा जगाते है वे जिस समय चाय पीती है तो वे गद् गद् होकर उनव रते हैं और लगता है—गिरा अनयन नयन विनु पानी'' उस आ वर्णन करने के लिए अपने पास शब्द नही है । वे तुरन्त खाना लग जाते है । समर्पण हो तो ऐसा हो, भक्ति हो तो ऐसी ह मजाल जो चौपडा जी विना अपनी आराध्या के भोजन किए ए तो मुह मे डाल लें । लपके लपके वस पकड कर दफ्तर पहुचते हैं होने के कारण दफ्तर को अपने शरीर से ही सुशोभित करते हैं समय चायपान मे निकालते हैं और अपरान्ह मे शीघ्र से शीघ्र घर की ड्यूटी पर लौटते समय भी गृह सेवा के कार्य करते हुए आ उस दृश्य को देखकर तो कोई भी हाथ मलने से नही रह सकता। आगे मैडम और पीछे पीछे चौपडा जी, क्या कदम मिलाकर चलत किधर जायेंगे कोई पता नही। उन्हे तो मैडम के पीछे पीछे चलना वर्षो से चलते आ रहे हैं, जिन्दगी भर चलते चले जायेंगे । एक ि मुझे वाजार मे मिल गए । मैंने कहा चौपडा जी आज अकेले कैसे यार कही मिलते ही नही । सार्वजनिक उत्सवो मे भी तुम को देख कही दिखाई ही नही दिए तो मुसकराकर बोले भाई आज श्रीमत महिला मण्डल की कार्यकारिणी की मीटिग मे गई थी, बच्चो के स्कूर मे कोई मैच है वहा चले गए है इसलिए निकल आया। मैंने पूछा— आज तो ऐसे महसूस कर रहे होगे जैसे अभियुक्त 'पैरोल' पर छोड दिया हो। चौपडा जी बडे आशावादी है, बोले, 'दोस्त अब तो आदत मे आ चुका है, तुम सच मानना, वैसे वडा ही प्रसन्न हू आप लोगो से

जरूर कट गया हूं किन्तु गूगे के गुड़ की तरह इस आनन्द का वर्णन नहीं कर सकता। वे जा चुके थे, और मैं जोरु के गुलाम के महत्व पर गंभीरता से सोचने लगा था।

कभी विचार करता हूं कि जोरु का गुलाम आदमी अपने मतलब में बना है जिस तरह माता-पिता के रहते लड़का कितना भी बड़ा हो जाए, चिन्तारहित रहता है, उसी प्रकार जोरु की गुलामी करने वाला पति भी बालक के रूप में संरक्षकत्व,प्राप्त करता है। जोरु उसके हालत पर रहम खाती है और उसके गुनाहों को माफ करती है। इस रसमयी परंपरा पर शोध करने पर ज्ञात होता है कि इस परंपरा की जड़ें बहुत गहरी हैं। हमारे महापुरुषों ने एवं पथप्रदर्शकों ने सुखमय जीवन बिताने हेतु इस मार्ग को सहर्ष स्वीकर किया है। 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' किसी इसी मार्ग के पथिक का वाक्य है। रसखान के इस सवैए में भी एक ऐसा संदेश मिलता है जो हिम्मत बंधाता है,

ब्रह्म मैं ढूंढ़यो, पुरानन कानन,
वेद रिचा सुनी चौगुने चायन
देर को सुनो कबहूं न कित
वह कैसो सरुप और कैसे गुमायन
हैरत हैरत हारि परयो रसखानि
बतायों न लोग लुगायन
देखो हुतौ वह कुंज कुटीर में
बैठो पलोटत राधिका पायन॥

भारतेन्दु बाबू भी अपने आत्म परिचय के अन्त में सखा प्यारे कृष्ण के गुलाम राधारानी के—ही कहते हैं। किसीने ठीक ही कहा है कि बड़े लोगों के जीवन से प्रेरणा लेकर और उस पर चल कर हम अपना जीवन भी महान् बना सकते हैं।

हम ने देखा है कि राजनीतिक मतभेद होते हुए भी जहां तक जोरु का गुलाम होने का प्रश्न है सभी नेता एक नाव में बैठे हुए

पड़ते है। हमको ऐसे भी मिलिटरी जनंलो के दर्शन प्राप्त हुआ है जिनकी शौर्य गाथाओं की कथाएं घर के सामने उन्हें भी घुटने टेकते देखा गया है।

आपने 'हैनपेंकड हस्बेण्ड' का नाम खूब सुना अंग्रेजी के विद्वान मित्र से जब इसका उद्‌गम पूछा कि मुर्गी जी जब स्नेह मे मुर्गेजी के मस्तक पर प्रहार करती हैं तो मुर्गे जी वहां सो जाते हैं एव मा है। मुझे यह व्याख्या सुन कर बडा सन्तोष हुआ। के गुलाम होने को स्वाभाविक मानती है तो न मा के गुलाम कहलवाने मे शरमाते है मैं अपने कई हो जानता हू जो विवाह से पहले अपने माता पिता दिखलाई देते थे मानो श्रवणकुमार के माडर्न सस्करण होते ही वे किस प्रकार अपनी ममी डैडी को हरी भ कहने लगते हैं—एक अगना बने न्यारा यद्यपि मर्मी रोते रहते हैं कि लडका जोरू का गुलाम हो गया है स्वतत्र रहने मे है वह घर के पुराने छकड़े मे रहा।

हम ने तो चारो दिशाओ म पता लगाया। बडे साक्षात्कार किया सब ने यही बतलाया कि यदि जी है तो जोरू के सो नए पैसे गुलाम बन जाओ और यदि करने की इच्छा हो जो समझ म आए वह करो। हा एक ध्यान रखनी चाहिए कि घर के अन्दर जोरू के गुलाम रहि आप अपडक डीग मार सकते है कि आप कभी पत्नी के नहीं पत्नी-भक्त रह कर भी पकड़ कर चलने का रहस्य

दुखवा कासे कहूँ मोरी सजनी

वहुत दिनों में ग्रायो जिज्जी ? ग्राज कैसे रास्ता भूल गयीं ? मन्दिर में ग्रायो हो ? क्या मंगला के दर्शन करि आयीं ? मेरा तो सब टाइमटेबुल ही गड़बड़ा गया है, तेरा राम भला करे तेरे जीजाजी तो



रूखे-रूखे बोलते हैं। जिज्जी, मेरी तो समझ में कुछ नहीं आवे। एक दिन भेद खुला। मॉरिशसवाले विश्व हिन्दी सम्मेलन में नहीं जा सके। हाँ कोशिश तो करी थी। तू जाने एक है। हजारों जाने को तैयार थे। तेरी सौगंध मैंने वहुत समझाये। इसमें खाना पीना छोड़ देने की क्या वात है ? जान है तो देखो जीजी, जहान है। उन्हें कुछ हो गया तो मैं

किसे रोकूँगी ?

मैंने कहा, जब इतना मन जाने को है तो अपने खर्चे से चले जाओ। कौन रोकता है ? पैसा बात को या स्वाद को। एक हफ्ते जाने कहाँ कहाँ चक्कर लगाते रहे। उन्ही दिनों भैया के लडके का मुडन था। घर से भैया बुलाने आये थे। मैं भी नही जा सकी।

अरे चार मठरी तो खा लो। मैं तो मरी बातो मे तुमसे यह कहना भी भूल गयी। चाय बन रही है। हा, तो तुम शुरू तो करो। घर के काम तो लगे ही रहते हैं। मैं तो बहुत दिनो से बोलने को तरस रही थी। अरे, हाँ ये अभिनन्दन कराने की और बीमारी चल पडी है। पिछली साल अभिनन्दन की धुन सवार हो गयी। अब तू बता मैं इन मर्दो के मामले मे क्या करूँ कहने लगे, कल के लडको के अभिनन्दन हो रहे है। मुझ जिदगी भर कलम घसीटते हो गयी।

तू जाने, मेरी सेहत वैसे ही खराब रहती है। इनका एक भाई डाक्टर है। दूसरा इजीनियर। लाखो मे खेल रहे हैं। इन्हे इन झझटो से फुर्सत ही नही। बाबूजी को पत्र लिखा। देखो जी, बुढापा है उनका। बेचारे चले आये।

इनका हाल देखा तो बडा अफसोस करने लगे। बोले, हमारे जमाने, मे तो ये बीमारियाँ थी ही नही। अरे, पिताजी पडिताई करते थे। तुम पढ लिख गये। किताबें भी निकल गयी। घर की कोठी है। सुख से रहो। ये नयी नयी बीमारिया क्यो लगाते हो ?

जिज्जी, वो क्या किसी की मानते हैं ? डैडी ने आकर अभिनन्दन का काम शुरू किया। और ये तो सुन, डैडी से कहने लगे ये काम किसी समिति के नाम से होगा घर मे अभिनन्दन का कोई काम नही होगा। इनके एक दोस्त है। उनके घर में दफ्तर बनवाया। कालेज के चार-पाँच लडके लगाए। डैडी आठ दिन तक ऐसे लगे रहे कि कुछ पूछो मत।

एक दिन बोले, बेटी, तेरी शादी में भी इतना काम नहीं किया था जितना इसमें करना पड़ रहा है। कभी प्रेस में निमंत्रण पत्र छपाने जा रहे हैं तो कभी पब्लिसिटी के लिए प्रेस में जा रहे हैं तो कभी हाल का इन्तजाम करने।

कौन-कौन संस्थाएं मालाएं पहनायेंगी। अभिनन्दन पत्र कौन पढ़ेगा? वी० आई० पी० के चक्कर में कई बार दिल्ली के चक्कर लगाए। अभिनन्दन ग्रंथ में छपने को लेख तो सैंकडों आ गये थे। प्रेस वाले से बात की तो कई हजार का बिल उसने बताया।

बताओ जिज्जी अभिनन्दन ग्रन्थ को कोई खरीदता तो है नहीं, वैसे ही बंटते हैं जैसे हमारे तुम्हारे यहाँ गीत गाने वाली औरतों को बतासे बाँटे जाते हैं। डैडी ने बहुत समझाया कि लड़की शादी को तैयार है, लड़के पढ़ रहे हैं। अभी ऐसा ही चलने दो। 'मिनी' अभिनन्दन पर ही सब्र करो, ग्रन्थ वाला आगे देखेंगे। जैसे-तैसे झंझट निपट गया।

अब तुम घर क्या जाओगी, मैं नौकर से कहलवाये देती हूँ। खाना यहीं खा लेना। तुम्हारे यहां बहू-बेटी सब संभाल लेंगी। दिनों में तो आयी हो। मेरा मन का तो जिज्जी, आधा बोझ उतर गया। मन की बात कह देने से तबियत हल्की हो जाती है।

जिज्जी, दफ्तर में तो मुश्किल से दो घंटे जाते हैं। फिर दिन भर इन्हीं खुराफातों में लगे रहते हैं। अब तू बता, पुरस्कार लेने के लिए भी दौड़ भाग करनी पड़ती है? पुरस्कार न हुए, आलू हो गये कि जब चाहे बाजार से खरीद लाओ। एक लभा पुरस्कार है? कितने ही तो हैं उसके दावेदार?

मैंने एक दिन कहा, 'तुम्हारी किताब अच्छी होगी तो अपने आप पुरस्कार मिल जायेगा, इसमें दिन-रात 'हाय हाय' करने की जरूरत है?

गुस्सा होकर बोले, तुम क्या समझती हो ? ये चूल्हे चक्की की बाते नही है, मैं चुप हो गयी। मै तो इसलिए सोचती रहती हू कि उन्हें कुछ हो न जाय। उस दिन पापा और भैया दोनो कह रहे थे कि मेटल टेंशन से ही दिल की बीमारियाँ होती है।

एक दिन छाती मे हल्का दर्द भी हुआ था। डॉक्टर ने कहा, तुम बेकार की चिंताए छोड़ दो। लेकिन ये माने तो। जैसे इम्तहान में बैठने वाले विद्यार्थी परीक्षको का पता लगाते घूमते है, उसी तरह ये पुरस्कार तय करने वाले पुरस्कार समितियो के सदस्यो का पता लगाते घूमते है। कहती हूँ तो मूड बिगाड़ लेते है। जरा छोटेवाले जरूर थे। दो पुरस्कार मिल भी चुके है।

जिज्जी, सभी पुरस्कार इन्हे मिल जायेगे तो और लोग क्या करेंगे ? सतोष है ही नही। न घर मे बच्चो से बोलना, तुमसे झूठी कसम लिवा रही हू, साल साल भर तो मेरे साथ सिनेमा गये हो गया। कभी ये मीटिंग कभी वो मीटिंग, किसी न किसी उधेडबुन मे लगे रहते हैं।

एक दिन तो न जाने क्या हो जाता ? वो तो परमात्मा दयालु थे। जिज्जी ये आलोचक जैसे होते हे सो तुम जानती ही हो। किसी ने कुछ ऐसा तैसा लिख दिया होगा। ऐसे क्रोध मे आये कि कुछ पूछो मत। बीच बाजार में उसे पकड लिया और उससे मारपीट कर डाली। कई महीने मुकदमा चला। मैं क्या करू ? डैडी को तार देकर बुलवाया। वे किसी तरह रफादफा करा गये।

समीक्षकों का तो मीन मेख निकालने का धधा है। क्यों जी, वे अपना धधा छोड देगे तो उनके बच्चो को खिला पाओगे ? कोई समझे तब तो ?

एक कलेश हो तो बताऊँ ? कवि सम्मेलन का अलग लफड़ा है। ये हर साल एक कवि सम्मेलन कराया करते थे। खुद ही सयोजक होते

ये। पूरे साल वे लोग जिन्हें ये बुलाते थें इनको बुलात थे। कुछ सालों से वह कवि सम्मेलन बंद हो गया। जिज्जी, आजकल की दुनिया तू समझे इस हाथ दे और इस हाथ ले की है। अब बताओ, ये भी कोई बात हुई। कवियों को गाली देते रहते हैं। हमने कहा कि तुम कोई संस्था बना कर कवि सम्मेलन करवाओ, फिर चालू हो जाओगे। सो चन्दा इक्ट्ठा करने कौन जाय ?

ये तो व्यापार है, तरह तरह से चलाना पड़ता है। एक संस्था बनायी थी उनमें ऐसे कई लोग भर लिये कि उन्होंने इन्हें ही निकाल बाहर कर दिया।

जिज्जी, तो अब खाना खाती जाओ और बातें करती जाओ। उनका क्या ठिकाना ? कमेटियों में घुसने का एक नया शौक चर्राया है। मैंने कहा, जिसे रखना होगा, तुम्हें कमेटी में रख लेगा, लेकिन फिर वही उत्तर कि तुम क्या समझती हो ? जिन चीजों से मतलब नहीं उनमें भी घुस गए। सिवाय कुछ रुपये भत्ते के मिल जाते है, पर टाइम तो कितना लग जाता है। पहले खूब लिखते थे, खूब छपते थे।

अब सब तो छोड़ दिया, इन फिजूल किस्सों में पड़ गये हैं।

जिज्जी, तू बता तुलसीदास कितनी कमेटियों के मेंबर थे ? उनके कितने अभिनन्दन समारोह हुए थे ? उन्हें कितने पुरस्कार मिले थे ? आज तक घर घर में पढ़े जाते हैं। अरे, कोई बात भी हो। अमरता कोई अपने हाथ की चीज़ है ? पर कौन समझावे ?

जिज्जी, सच तुम्हें बड़ी देर हो गयी। अब हो तो गयी ही है। जरा पाँच मिनट और सुन जाओ मुझे कहते भी शरम लगे है। अपने पिछले जन्म-दिन पर अपने एक विद्यार्थी से अपने ऊपर एक लेख लिखवाया। कुछ अखबारों में भेजा। तू जाने कहीं छोकरों के लेख ये बड़े बड़े मगरमच्छ छापे है ? खुद किसी से शरम के मारे कहें कैसे ? उस दिन से संपादक

यदि कविगण चुनाव लड़ते !

चुनाव के मौसम में यत्र तत्र सर्वत्र चुनाव की ही चर्चा सुनाई पड़ती है। इस मौसम में वोटर उर्फ मतदाता का महत्व बहुत बढ़ जाता है। प्रत्याशीगण प्रेमी के रूप में वोटर रूपी प्रेमिका को रिझाने में लग जाते हैं। कविगण चुनाव के चक्कर में कम ही पड़ते हैं। यदि ये लोग चुनाव में खड़े होते जो अपनी मधुर कविताओं से ही वोटर को रिझाते।



कबीरदास चाहे कितने भी अक्खड़ रहे हों यदि चुनाव लड़ते तो उन्हें वोटरों को नयनों की पुतली बनाना ही पड़ता—

नैनों की करि कोठरी, पुतली पलंग बिछाय।
पलकों की चिक डारिकै, वोटर लिया रिझाय।

मीराबाई तो गिरधर गुपाल के ही गीत गाती रहीं। यदि कहीं

चुनाव लडती तो आराध्य वोटर हो होता और लिखती—

मनरे परसि वोटर चरन
सुभग सीतल कमल कोमल त्रिविध ज्वाला हरन।

महाकवि तुलसी रामचन्द्र जी के ही गुण गाते रहे। यदि चुनाव के चक्कर मे पड़ गये होते तो रामचरित मानस अधूरा ही रह जाता। चुनाव मे विनयशीलता बहुत कारगर साबित होती है। तुलसी तो विनयशीलता के स्पेशलिस्ट थे। उन्होने तो पूरी 'विनयपत्रिका' ही लिख दी। किन्तु चुनाव मे प्रत्याशी के रूप मे तो 'वोटर' की प्रार्थना इन शब्दो मे ही करते —

तू दयालु, दीन हौ, तू दानि, हौ भिखारी
नाथ तू अनाथ को, अनाथ कौन मोसो
मो समान आरत नहिं, आरतिहर तोसो
तात मात गुरु सखा तू सब विधि हितु मेरो।

सूरदास जी को एक तो नेत्रो से दिखाई नही देता था, और सीधे भी बहुत थे। पहली बार तो वे चुनाव मे हार ही जाते। हाँ यदि दुबारा चुनाव लडते तो उनके चुनाव सम्बन्धी पद का रूप कुछ ऐसा होता :—

प्रभुजी मेरे अवगुन चित न धरो
मैं चुनाव मे फेरि खरो भयो, अबकी पार करो
इक नर है इक नारि कहावत, जानत जग सबरो
वोट देने को एक वरन भये, इनको 'वोटर' नाम परो
वोटर सबरे पारस जैसे, कचन मोहि करो
अबकी बार मोहि पार उतारो, मूँड पै हाथ धरो।

रहीम नीति-शास्त्र के पडित थे। यद्यपि किसी के द्वार पर जाने मे सकोच करते थे किन्तु चुनाव लड़ते समय उनका सिद्धात बदल जाता —

को रहीम पर द्वार पर, जात न जिय पछतात ।
वोट लेन सब जात हैं, चुनाव सबहि लै जात ।।

रसखान भी कृष्ण और राधा की लीलाओं का ही वर्णन करते रहे। कृष्ण को गोपियाँ छाछ पर बहुत नाच नचाती थीं, रसखान को बड़ा अजब लगता था। यदि चुनाव का उन्हें अनुभव होता तो लिखते—

नैक सौ वोटर एरी अली, एक वोट पै वाको नाच नचावै

बिहारी लाल नायक-नायिकाओं के वर्णन में ही लगे रहे, यदि चुनाव के चक्कर में पड़े होते तो यह दोहा अवश्य लिखते—

या वोटर के चित्त की गति समझै नहिं कोइ
ज्यों-ज्यों आत चुनाव निकट, त्यों-त्यों भारी होइ

मैथिलीशरण गुप्त चुनाव नहीं लड़े थे। वे राज्यसभा के नाम्नांकित सदस्य थे। शायद उन्होंने ये पंक्तियाँ तब लिखीं हों जब उनका चुनाव लड़ने का इरादा हो —

वोटर आज परीक्षा तेरी
विनती करता हूं मैं तुमसे,
बात न बिगड़े मेरी।

सुमित्रानन्दन पंत न मालूम क्यों चुनाव नहीं लड़े। उनका व्यक्तित्व बहुत ही आकर्षक था। कोमल भावों की कविता करते रहे थे। 'भावोन्मेष' में आकर जब वे वोटरों को सम्बोधित करते —

वोट वृष्टि हो
नवजीवन सौन्दर्य सृष्टि हो
कूक उठे प्राणों मे कोयल
नव मंजिरित हो जनजीवन
वोट वृष्टि हो—

रामकुमार वर्मा भी अवकाश के बाद चुनाव लड़ सकते थे। यदि

लड़ते तो जीत भी जाते क्योंकि उनकी ये पंक्तियाँ किसी भी वोटर को द्रवित कर सकती थीं—

मैं तुम्हारी मौन करुणा का सहारा चाहता हूँ—

जानता हूं इस जगत में
वोटर की है आयु कितनी
और यौवन की उभरती
सांस में है वायु कितनी

बच्चन कवि सम्मेलनों में ही लगे रहे, चुनाव से दूर ही रहे यदि वे चुनाव लड़ते, वोटरों के घर जाते, कोई मिलता, किसी के यहाँ इन्तजार भी करना पड़ता तो वे गाते :

इसीलिए खड़ा रहा, कि तुम मुझे पुकार लो।

दिनकर ने भी चुनाव नहीं लड़ा। यदि लड़ते और उन्हें वोट देने का वायदा जिस समय वोटर करता तो वे लिखते—

दृष्टि तुमने फेरी जिस ओर
गयी खिल कमल पंक्ति अम्लान

अज्ञेय चुनाव के मैदान में कभी नहीं उतरे। यदि उतरते तो लिखते —

आज तुम शब्द न दो, न दो,
केवल एक वोट मुझे देदो।

रमानाथ अवस्थी के गीत का रूप भी चुनाव लड़ लेने के बाद ऐसा ही होता—

चाहे शहर का, चाहे गाँव का हो,
वोटर का ढंग एक है।

नीरज भी कवि सम्मेलनों में अपने लिए वोट इन्हीं पंक्तियों द्वारा मांगते —

वोट दो,
ओ मेरे भैया, वोट दो
कोई न भूखे पेट मरे
चोर बजारी पे गाज गिरे
महके बजरिया, झूमें डगरिया
दूध दही भरि छलके गगरिया
बाजे बंसुरिया औ नाचे गुजरिया
दुनिया को सुबह सुहानी दो
वोट दो, ओ मेरे भैया वोट दो

बहुत से लोगों को कहते सुना है कि शादी नहीं हुई तो क्या, बरातें तो बहुत सी करी हैं। इसी प्रकार कई कवियों ने बिना चुनाव लड़े ही चुनाव सम्बन्धी कविताएं लिखीं। हरिशंकर शर्मा ने लिखा—

'जब वोट मांगने जाते थे
घर-घर में अलाव जगाते थे
जन-जन को शीष झुकाते थे
सबके गुण गौरव गाते थे
कोई 'वोटर' गुर्राता था
कोई हँसता मुसकाता था
पर मन की थाह न पाते थे
जब वोट मांगने जाते थे

वोटर के सम्मुख विनयशील होना पड़ता है। बेढब बनारसी प्रत्याशी की विनयशीलता पर लिखते—

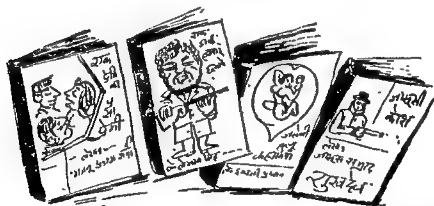
मुझे भी वोट देदो एक
खुदा की राह पर भाई
निहायत 'ग्रेटफुल' हूँगा
न भूलूँगा जनम भर भी
इशारा हो जरा सा ही

जरूरत इस इनायत की
मैं वे वायदा कराये
पिंड छोड़ूंगा न ऐ मिस्टर
भिखारी वोट का वेढव
खड़ा हूँ आपके दर पर

सचमुच चुनाव के दिनों में एक चहल-पहल शुरू हो जाती है। भाषणों का एक लम्बा दौर चलता है, नोक-झोंक चलती है, रंग-बिरंगे पोस्टर दीवालों पर दिखलाई पड़ने हैं, प्रत्याशियों तथा उनके समर्थकों के झुंड वोटरों से सम्पर्क स्थापित करते हुए नजर आते हैं। और इस प्रकार परिणाम घोषित हो जाने के बाद यह चहल-पहल समाप्त हो जाती है।

समीक्षा प्रेरणादायक पुस्तकों तथा पत्रिकाओं की

एक प्रेमिका सौ प्रेमी : लेखक-मजनू प्रकाश शर्मा, प्रकाशक-४२० लवलैन, दिल्ली, मूल्य दस रुपये। यह ग्रन्थ युगान्तकारी है। प्रेम-सर्कस के तरह तरह के खेलों का वर्णन बड़े सहज ढंग से किया गया है। 'सस्पैन्स' इस ग्रन्थ के रोम रोम में भरा हुआ है। सौ प्रेमी एक प्रेमिका को प्राप्त करने के लिए कैसे कैसे करतब दिखाते हैं ? एक दूसरे को



नीचा गिराने के लिए कैसे कैसे हथकंडों का इस्तेमाल करते हैं, इनका विवेचन वैज्ञानिक ढंग से किया गया है। कच्ची उम्र के युवक युवतियों की समझ में प्रेम की बारीकियों को स्पष्ट करने के लिए चित्रों का भी सहारा लिया गया है। चित्र इतने रंग बिरंगे तथा मनोरंजक हैं कि जिनकी प्रेम करने की उम्र निकल गई है वे भी एक बार इन चित्रों

को देखकर प्रेम करने के लिए उछल पडगे। धोखेबाजी तथा झूठ बोलने जैसी लोकप्रिय कलाओ का मार्मिक विवेचन किया गया है। लेखक ने अपने अनुभवो के साथ साथ विदेशी प्रेमियो के प्रेम विषयक अनुभवो का तबियत से उपयोग किया है। पुस्तक के कवर पर खजुराहो की मूर्तियो मे से एक मूर्ति का चित्र लिया गया है। उस चित्र का परिष्कार कर उसे और भी मौलिक रूप मे प्रस्तुत किया गया है। कुछ विश्व-विद्यालय मे इसे 'सैक्स शिक्षा' के अन्तर्गत पाठ्यक्रम मे लगवाने की भी पेशकश की गई है। नई पीढ़ी के हर होनहार युवक और युवती को अपने जीवन को सुखमय बनाने के लिए इस पुस्तक को पढ़ना ही नहो वरन कण्ठस्थ कर लेना चाहिए। लेखक महोदय ने देश और समाज के लिए बिना किसी के दबाव के स्वेच्छापूर्वक ऐसे ग्रन्थ का प्रणयन कर अपने को एक प्रकार से समाप्त ही कर दिया है। ईश्वर उनमे पुन शक्ति तथा साहस का सचार कर ताकि दुनियाँ छोडने के पूर्व एक दो ऐसे ग्रन्थ इस असार ससार को अवश्य दे जांय।

एक डाकू हजार हत्याए—लेखक श्री लेभगासिंह काश्यप, प्रकाशक डैकैती प्रकाशन, चम्बल स्ट्रीट, कोटा (राजस्थान) मूल्य २५-०० रु०। यह एक अद्भुत ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ मे यह दावा किया है कि उसने जो कुछ लिखा है वह उसका "भोगा हुआ सत्य" है। सभवत लेभगासिंह जी ने इस मुहावरे के अर्थ को बिना समझे ही उसका प्रयोग कर दिया है। यदि समझदारी से प्रयोग किया है तो एक हजार हत्याए करने का श्रेय उन्ही को जाता है और वे अभिनन्दनीय हैं। हत्याओ का वर्णन इतना रसपूर्ण है कि पढकर हत्या करने की सद्प्रेरणा मिलती हैं। इस पुस्तक के पढने से वीर रस तथा वीभत्सरस दोनों की निष्पत्ति साथ साथ ही होती है। पुस्तक की भाषा भी विषय के अनुकूल है। डाकू और सर-दार तथा उसके साथियो द्वारा प्रयोग की गई भाषा को 'टेपरिकार्ड' की भाँति रख दिया गया है। जहाँ तक पुस्तक के प्रभाव का प्रश्न है यह नि संकोच रूप से कहा जा सकता है कि लेखक पूर्णरूपेण सफल हुआ

है। पाठक चाहे व्यापारी हो अथवा नौकरी-पेशा, उसके मन में डाकू बनने की तीव्र आकांक्षा जाग्रत होती है और उसे अपने जीवन में घृणा उत्पन्न हो जाती है और वह सोचने लगता है काश वह भी एक डाकू होता और इच्छानुसार हत्याएँ करके अपने जीवन को सफल बना पाता महत्वाकांक्षी युवक एवं युवतियों के लिए यह पुस्तक पठनीय ही नहीं वरन संग्रहणीय है।

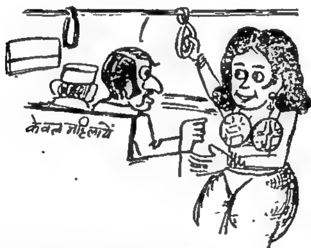
जलेबी-ब्लू कहानियां—सम्पादिका : कुमारी इमरती प्रधान, प्रकाशक—टूटेदिल प्रकाशन, फरहाद स्ट्रीट, इलाहाबाद। वार्षिक चन्दा २०-००रु०, जैसा नाम से स्पष्ट है यह कहानी पत्रिका मोहब्बत, अपहरण, बलात्कार, तस्करी जैसे दिव्य विषयों पर सच्ची कहानियां प्रकाशित करती है। अविवाहित युवा तथा युवतियां इसे पढ़कर विवाहित जीवन का मानसिक आनन्द प्राप्त कर सकते हैं। कुमारी अथवा विवाहित लड़कियों के अपहरण करने की कला पर, अधिकारी विद्वानों द्वारा इसमें सामग्री संजोई जाती है। इन कहानियों को पढ़ने के बाद विदेशों से आयातित 'ब्लू-फिल्म' देखने की लालसा नहीं रह जाती ऐसी चटकीली भाषा में ऐसे नमकीन प्रसंगों का वर्णन रहता है कि सचमुच जलेबी खाने जैसा आनन्द आता है और इस तरह से 'यथा नाम तथा गुण' वाली लोकोक्ति को ये सार्थक करती हैं। जब कि बड़े बड़े घरों के लड़के तथा लड़कियां इन्हें अपने जेब खर्च की रकम से क्रय करते हैं तो क्यों न इन्हें हर कालिज तथा विश्वविद्यालय के वाचनालयों में सुलभ कराया जा सके और कम से कम दस प्रतियां हर टेबिल पर रखी जाया करें।

जासूसी कोश—सम्पादक-जासूस-सम्राट सुखदेव, प्रकाशक-जासूस कार्यालय, जासूस-स्ट्रीट, बम्बई-२, मूल्य १०० रु०। इस कोष का महत्व इसी से जाना जा सकता है कि इसका पहला संस्करण प्रेस से निकलते निकलते ही बिक गया। इस बीच इसके पाँच संस्करण और हो चुके हैं। इस उपयोगी कोश के गम्भीर अध्ययन के फलस्वरूप सैकड़ों नव-

युवक जासूसी विद्या में निष्णात हो चुके है। कुछ युवतियों को विदेशों के जासूसी विभाग में अच्छी नौकरियां मिल गई हैं। यहाँ तक सुनने में आया है कि इसके कुछ पाठकों के मस्तिष्क पर ऐसा सद्प्रभाव पड़ा कि आगरा तथा बरेली के पागलखानो मे भर्ती कराना पड़ा। उनमें से पाँच प्रतिशत ही निरोग हो सके, शेष लोगों को पागलखाने में स्थाई कर दिया गया। वे लोग 'पागलखाने में भी 'जासूस' 'जासूस' चिल्लाते रहते हैं। सम्पादक महोदय को ऐसे उपयोगी कोश के सम्पादन के लिए जितना धन्यवाद दिया जाय, कम है। जो अभिभावक अपने घर में तथा पड़ोस में जासूसी करना चाहते हो, उन्हें यह ग्रन्थ अवश्य पढ़ना चाहिएं। प्रेम-रोग से ग्रसित प्रेमी प्रेमिकाओं के लिए तो यह अनिवार्य है। मार्डर्न प्रेम में विना जासूसी-विद्या के ज्ञान के सफलता नही मिल सकती। अर्थाभाव से पीड़ित प्रेम प्रेमिकाओं को किसी भी उच्चकोटि के पुस्तकालय में यह ग्रन्थ उपलब्ध हो सकेगा।

बस में 'कँच आउट'

शास्त्रों में कहा गया है कि जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवताओं का वास होता है। नारी का सम्मान करना प्रत्येक राष्ट्र एवं समाज में माना जाता है। घर में भी शान्ति एवं आनन्दपूर्ण जीवन बिताने के लिए नारी की पूजा आवश्यक है। 'लेडीज फर्स्ट' आज के युग की सभ्यता का आदि वाक्य है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महिलाएं



अब समान रूप से भाग लेने लगी हैं। यह शुभ लक्षण है। वेषभूषा में भी अब अधिक अन्तर नहीं रह गया। बालवाट्म्, बुशशर्ट, बाबीकट केश आदि ने ड्रेस में भी समानता ला दी है। शारीरिक बनावट में जो अन्तर रह गया है वह ईश्वराधीन है अतएव इस अन्तर को तो ब्रह्माजी ही हटा सकते हैं।

किस्सा इस प्रकार है। एक बस टर्मीनल से हम बस में सवार होते

हैं। इस बस मे दस सीटे महिलाम्रो की है। महिलाम्रो के अभाव मे उनपर पुरुष बैठे हुए है। पुरुषवाली दो सीटो पर दो दम्पत्ति बैठे है, उन्हे मैं जानता हू। दम्पत्ति प्रसन्न हैं और वार्तालाप मे लीन हैं। महिलाम्रो वाली सीट के पीछे एक सीट पर मैं बैठा हूँ। अपने आगेवाली सीटो पर बैठे हुए पुरुषो पर मुझे दया आ रही है। उनका जीवन क्षणभगुर है। अगले 'स्टाप' पर बस रुकती है। दो सजी-धजी महिलाएँ बस मे चढती हैं। यात्रा-पत्र लेकर अन्दर प्रवेश करती हैं तथा महिलाम्रो वाली सीट के सम्मुख खडी हो जाती हैं। बैठे हुए पुरुष उन्हे देखते है। महिलाम्रो को देखकर उसी प्रकार सकपका जाते है जैसे कर्जदार उधार देने वाले पठान को देखकर सकपका जाता है। बाहर से 'लाउड स्पीकर' बोल रहा है 'नयन मिले और जी घबराया'। लो, वे अपनी सीट महिलाम्रो को समर्पित कर खडे हो जाते है। क्रिकेट की कमेन्टरी वाला बोल रहा है 'कैच आउट'। बस मे भी दो 'कैच आउट' हो गए है। अभी आठ खिलाडी अपनी बारी की प्रतीक्षा मे है। इनमे दो ग्रामीण क्षेत्र के लगते है। ये अबोध है। शायद पहली ही बार शहर मे आये हैं। इनका कोई रिश्तेदार टिकट दिलाकर इन्हे बैठा गया है और कह गया है कि फलाँ स्टेण्ड पर उतर जाना। वे खिडकी से सडक किनारे के सुन्दर बगलों को जी भर देख रहे है बाग-बगीचो को देख रहे है। सोच रहे है यह भी भारत वर्ष का एक हिस्सा ही है न? अगला 'स्टाप' आता है दो अति आधुनिक महिलाए बस में चढती है। उनके पास बस पास है। वे यात्रा-पत्र खरीदने मे भी समय नही लगाती। वे उसी सीट के आगे जाकर खडी होती है जिस सीट पर दो ग्रामीण बैठे है। वे बाहर के दृश्यो के आनन्द लेने मे लीन है। उन्हे यह क्या पता कि उनके दिन करीब है। बकरे की माँ कब तक खैर मनायेगी? मुझे अपने पर गुस्सा आ रहा है। "काजी जी दुबले कि शहर का अन्देशा।" जिसको भोगना है वह भोगेगा। महिलाए अभी तक व्यजना का प्रयोग कर रही है। ग्रामीण भाई काव्यशास्त्र की इन बारीकियो को क्या समझे? महिलाए

लक्षणा का प्रयोग करती है जब उसका भी कोई प्रभाव नहीं पड़ता तो अभिधा का प्रयोग करती है। ग्रामीण पूछते है—'क्या उनका स्टाप आ गया? उन्हें बताया जाता है, उतरने का नही अभी उनके खड़े हो जाने का 'स्टाप' आ गया है। वे सोचते हैं यह कैसा रंग में भंग हो गया। वे खडे हो जाते है। उन्हें ऊपर का डडा वता दिया जाता है। जिसके सहारे वे खडे हो जाते हैं। देवियों के लिपस्टिक युक्त अधरों पर एक मधुर मुस्कान खेलती है। वे आपस में कहती है 'हाउ इग्नोरेन्ट, पुअर फेलोज'। उधर ट्रांजिस्टर कह कहा है अब तक चार खिलाड़ी 'कैच आउट' हो गये है। कैसा विचित्र संयोग है।

वस चल देती है। कुछ लोग मूँगफली खा रहे है। कुछ नयन सैंक रहे है। कुछ दार्शनिक मुद्रा में वैठे जाने क्या सोच रहे हैं। छः पुरुष खिलाड़ी अब तक वचे हुए हे। वे अपने को वड़ा भाग्यशाली समझे हुए हैं। अगला स्टाप आता है। चार महिलाएं अन्दर आती है। दो प्रौढा है। दो युवतियां है। आते ही महिलाओं वाली सीटों पर निगाह फेंकती है। प्रौढाओं को आगे कर देती है। वे मौन खड़ी हुई है। पुरुष जो सीटों पर वैठने है वे आसक्त भाव मे है। शायद गीता का नियमित पाठ करने वाले हैं। वे सुख-दुःख से परे प्रतीत होते है। अन्य मनस्क है। पास वैठने वाले पुरुष ही उनको उनके कर्त्तव्य का ध्यान दिलाते है। मानों कह रहे हैं 'हो खड़ा जल्दी मुसाफिर लेडीज सीट पर क्यों बैठत है?' वे कुछ हठी किस्म के व्यक्ति मालूम होते है। परोपकार वृत्ति के अन्य लोग भी यही राग अलापने लगते है। वस में एक प्रकार का कोरस सुनाई पड़ता है और अन्त मे वे पुरुष आत्मसमर्पण करके सीट छोड़ देते है। उनके मुख-म्लान हे। सहानुभूति के पात्र होते हुए भी अन्य लोगों की निगाहों में अपराधी से लग रहे हे। 'अव खाई सो खाई अव खाऊ तो राम दुहाई।' उधर क्रिकेट कमेन्टरी में सुनाई पड़ रहा है "अव तक छः 'कैच आउट' हो चुके है"।

और यह लीजिए बस अगले स्टाप पर बचे हुए दो खिलाड़ी भी 'केच आउट' हो चुके है। और ठीक उसी समय ट्रांजिस्टर बोल रहा है 'आल आउट' और इस तरह बस में भी आल आउट हो गये तथा मैच मे भी आल आउट हो गए।

अब मैं हास्य का आलम्बन बना

विद्यालय में बैठा था। टेलीफोन की घन्टी बजी। हैलो, कौन बोल रहे हैं। मैंने अपना नाम बताया। उधर से आवाज आती है, 'बधाई?' कहो भाई किस उपलक्ष्य में बधाई दे रहे हो? उधर से पुनः उत्तर आता



है, 'आपको शादी का निमन्त्रण-पत्र इस डाक से मिला है।' मेरे काटो तो खून नहीं। मैं विवाहित, बाल-बच्चेदार आदमी, सुशीला पत्नी।

मैंने चपरासी भेजकर मित्र से अपनी शादी का निमत्रण-पत्र मगवाया। पढते समय हृदय की गति हल्की तेज हो रही थी। निमत्रण-पत्र सुनहले अक्षरो मे प्रकाशित था। नित्य के मिलने वाले मित्रो के नाम विनीत एव उत्तरापेक्षियो मे छपे हुए थे। शुभ विवाह का कीमती कार्ड था। विवाह का पूरा कार्यक्रम छपा था। विवाह के दूसरे दिन निश्चित समय पर मेरे यहाँ प्रीतिभोज का कार्यक्रम प्रकाशित था।

थोडे समय बाद ही मेरी श्रीमती जी का फोन घर से आया। 'सत्येन्द्र के बाबूजी बधाई।' मैंने यह कहकर फोन रख दिया कि अभी घर आ रहा हू। घर आकर ठाकुर जी की पूजा का यमुना जल रक्खा था, उसे हाथ मे लेकर श्रीमती जी को समझाया कि यह सब किसी जानने ही वाले न किया है। निमत्रण-पत्र मे प्रेस लाइन नही है। पता लगने मे समय लगेगा। तुम शान्त रहो नही और भी हँसी होगी। पूछने लगी, 'यह कुमारी सरोजनी कौन है जिसके साथ आपका विवाह होना छपा है' मैंने कहा, 'यह छपाने वाले की बहन हो सकती है, विधवा विवाह मे विश्वास रखता होगा तो उसकी माता भी हो सकती हैं पर उसका पता तो चले।' उनको समझा ही रहा था कि मेरी सास और बुआ-सास आ गईं। अत्यन्त उत्तेजित थी। उनकी आख क्रोध के कारण लाल हो रही थी? पूर्व इसके कि वे मुझ पर बरसे मैंने श्रीमती के सान्निध्य मे उनसे पूर्ण कथा कह दी। उनकी समझ मे कुछ कुछ आया। कहने लगी, 'हमारा घर मे बैठना मुश्किल हो गया है, एक रिश्तेदार आता है, दूसरा जाता है। हमारे मोहल्ले मे जिसके पास कार्ड आया है, वह सुबह से एक एक को दिखलाता घूम रहा है। उसे देख-देखकर सब हमारे यहाँ पुष्टि करने को आते है। हमारी तो बडी मुश्किल है।' मैंने उन्ह समझाया कि अपने घर जब मुसीबत पडती है तो उसका हाथ बटाना ही पडता है। वैसे शादी खुशी का अवसर होता है किन्तु यह कुछ अजब सी शादी है।

निमन्त्रण पत्र डाक से भेजे गये थे। शहर मे हँगामा था। यह पता

लगाना भी असंभव था कि वे सौभाग्यशाली कौन हैं जिन्हें मेरे फर्जी विवाह का मौका दिया गया है। यदि तथा कथित विवाह के अवसर पर लोग इक्ट्ठे हुए तो बड़ा फजीता होगा। कुछ समझ में नहीं आ रहा था। तुलसीदास जी की उक्ति-याद आई,. 'धीरज, धर्म मित्र और नारी, आपत्ति काल परखिए चारी।' नारी परख ही ली थी, मित्रों ने भी अपना कर्त्तव्य पूरा कर ही दिया था, धीरज और धर्म रह गये थे। इन्हीं दोनों का सहारा पकड़ा और स्थानीय दैनिक पत्र में जाकर कार्ड दिखलाया और प्रतिवाद छापने की प्रार्थना की। सम्पादक महोदय भी कुछ मजाक के मूड में थे। मैंने उनसे कहा, 'देखिए प्रतिवाद छपने में देर हुई तो गजब हो जायेगा।' मैंने लिखा कि 'दिसम्बर में ही अप्रैल-फूल बन जावे के उद्देश्य से किसी अज्ञात व्यक्ति ने मेरी झूठी शादी का फर्जी निमन्त्रण पत्र छपा दिया है, जिसे भी मिले वह कृपा कर उसे गम्भीरता से न ले।' कथित विवाह की तारीख १० दिसम्बर निश्चित की गई थी किन्तु एक दिन पहले प्रतिवाद प्रकाशित हो गया। हमारे व्रज में अखबार पढ़ने को कोई पुण्य का कार्य नहीं समझा जाता। 'नो मरे तेरह घायल, पढ़ने के स्थान पर प्रातः लोग दर्शन झांकी एवं भजन कीर्तन करना अधिक अच्छा समझते हैं। एक वर्ग पर तो प्रतिवाद प्रकाशित होने का अनुकूल प्रभाव पड़ा किन्तु एक वर्ग ऐसा था, 'मूरख हृदय न चेत, जो गुरू मिले विरंचि सम' क्यों भैया, बाजे वाले भिजवाई दऊं, क्यों भैया, हलवाई को प्रबन्ध भयो कि नांइ, क्यों साव, हमकूं निमन्त्रण-पत्र नहीं, हमसे ऐसे क्या कसूर है गयो, आदि वाक्यों का सुनना नित्य नियम हो गया। तुलसीदासजी की चौपाई के सहारे अपना कार्य चला रहा था। जिस विद्यालय में कार्य करता हूं उसके अधिकांश अध्यापक-अध्यापिकाओं तथा छात्र-छात्राओं के कानों में भी खबर फैल चुकी थी। यद्यपि वे लोग कुछ कहते तो नहीं थे किन्तु कनखियों में मुसकाते थे। एक अध्यापिका ने बड़ी दबी जबान में पूछा, 'सर हमारे लिए कुछ सेवा बताइये।' मैंने बड़े प्रेम से कहा, मैडम, यह तो मजाक है

वरना क्या बिना आप लोगो के शादी हो जाएगी।'

दूसरे दिन प्रात डाकिया आता है। पहला पत्र श्री काका हाथरसी का आया—

शुभाशीष

चिरंजीव हो वर-वधू, कृपा करे रघुनाथ।
सुख सों रहे सरोजनी, प्रिय 'वरसाने' साथ।

दिनांक १० को मेरा कार्यक्रम लखीमपुर खीरी मे पहिले से ही निश्चित है अतः यह धूम धडाका नही देख सकेंगे—काका।'

अन्य पत्र श्री रोहनलाल जी चतुर्वेदी, उपमन्त्री रेलवे एव डा० विजयेन्द्र स्नातक के थे। कुवर हरिश्चन्द्र देव 'चातक' आकाशवाणी मथुरा पर निम्न छद लिखकर दे गये—

प्रेम एव परोधर्म्म
शुभाकामना

नित नूतन सनेह वरसाते हैं वरसाने लाल।
उस सनेह सर मे सरोजिनी है प्रफुल्ल सब काल॥
वरसाने वर बने अचम्भे की नही कुछ बात।
जुडा नाम के ही वर पहिले है सबको ही ज्ञात॥

मैं सोच रहा था कि अभी तो पत्र ही आ रहे हे मेहमान सशरीर पधारना न शुरू कर दे। परमात्मा बडे दयालु है। बाहर से कोई नही आया।

दो दिन बाद ही दिल्ली जाना पडा। अखिल भारत वर्षीय आयोजन था। पहुचते ही बधाइयो का ताँता वहाँ भी प्रारम्भ हो गया। वहा इस उद्देश्य से गया था कि चलो वातावरण बदलेगा किन्तु घर छोड वन मे आये, वन मे भी लग गई आग' एक साथी प्रिंसिपल पर भी वह भाग्यवान कार्ड आ गया था, उन्होने प्रेमपूर्वक उसका नि शुल्क वितरण समस्त साथियो मे ही नही वरन वरिष्ठ अधिकारियो एव मन्त्रिगणो मे कर दिया। गनीमत यह हुई कि वहा कार्यक्रम इतना व्यस्त रहा कि

मित्र वर्ग को इस प्रकरण से अधिक रस प्राप्त करने का अवसर नहीं मिला ।

एक दिन सपत्नीक मैं पिक्चर देखने गया। लोग घूर-घूर कर देख रहे थे। सोचा, कहीं टोपी तो उल्टी नहीं पहन रखी? कोट के बटन आगे पीछे तो नहीं लग गये? देखा तो सब ठीक था। पिक्चर प्रारम्भ हो गयी। पीछे वाली सीट पर एक दम्पति फुसफुसा रहा था। 'डाक्टर साहब अपनी नई बीवी को पिक्चर दिखाने लाये हैं?' हम दोनों मुस्करा रहे थे। हाफ-टाईम पर मैंने अपनी पत्नी का परिचय उनसे कराया, दांत निकालते हुए बोले, 'चतुर्वेदी जी, क्षमा कीजिए, हमने तो जो सुना था उसमें भ्रम हो गया।'

यद्यपि समय बीतता जा रहा है किन्तु यह अनोखा मजाक यदा-कदा आनन्द देता ही रहता है और पता नहीं ये कब तक चलता रहेगा?

बेढब बनारसी जो बराबर हँसाते रहे

हिन्दी के हास्य लेखको मे बेढब बनारसी का प्रमुख स्थान है। वे डी० ए० वी० कालिज, वाराणसी के प्रधानाचार्य थे। अंग्रेजी साहित्य मे भी उनकी अच्छी गति थी। उर्दू साहित्य के भी वे प्रेमी थे। महाकवि गालिब पर भी उन्होने एक अच्छा ग्रन्थ लिखा था।

सन् १९५७ की बात है। आकाशवाणी दिल्ली जगदीशचन्द्र माथुर के प्रयास 'भारतीय साहित्य मे हास्य' पर गोष्ठी हुई थी। सभी भारतीय भाषाओ के चुने हुए हास्यकार इकट्ठे हुए थे। बेढब बनारसी भी उसमे सम्मलित हुए थे। धोती कुरता, आंखो पर चश्मा, चप्पल यही उनकी ड्रेस थी। वे बहुत गोरे थे। गोष्ठी तीन दिन तक चलती रही। उनका साथ रहा। उनकी एक विशेषता थी कि हास्य-कविता पढते अथवा कोई मजाक करते स्वय गम्भीर बने रहते थे। ९ मार्च १९६८ को उनकी मृत्यु हुई। वे अत तक लिखते रहे।

वे वाराणसी मे ही रहे। एक मृदुल मुस्कान उनके चेहरे पर सदैव खिली रहती थी। जुलाई १९६७ मे मैने मथुरा से हास्यरस का मासिक 'जौकर' निकाला। बेढब जी को आशीर्वाद देने हेतु एक पत्र भेजा। उन्होने तुरन्त उत्तर दिया —

'श्री बरसाने लाल जी की सरक्षता मे तथा श्री नरेन्द्र कुमार चतुर्वेदी के सम्पादन मे 'मथुरा' से 'जौकर' नाम को हास्यरस का मासिक प्रकाशित होने जा रहा है। जब भग चढती है तो हँसी रुकती नही और मथुरा भांग का घर है। कह नहीं सकता कि काशी का नम्बर उसके बाद आता है कि उसके पहले। बरसाने लाल जी प्रयास करे तो पत्र सुन्दर निकल सकता है। यदि मेरे पास 'पास बुक' होती तो चतुर्वेदी

जी के पास भेज देता कि लो भइया, लगा दो इसे जौकर में। किन्तु सिवाय शब्दों के कोई 'पासबुक' न रख सका। फिर भी मेरा आशीर्वाद शुभकामना हृदय से है। अभी तो जवानी प्रोत्साहन दे रहा हूं।

'खूब चले और खूब हँसावें'

पुरानी पीढ़ी के लोग अधिक उदार हृदय थे। जब कभी मिलते उत्साह दिलाने वाली बातचीत करते। कवि सम्मेलनों में जाते अवश्य थे किन्तु कविता बहुत छोटी तथा सहज भाव से पढ़ते थे। उन्होंने हास्यरस के अनेक पत्र निकाले। 'बेढब' नाम से एक हास्यरस का मासिक निकाला जो बहुत चर्चित रहा। वैसे वे 'आज' में नियमित रूप से लिखते थे। 'करेला' 'तरंग', भूत आदि हास्यरस के पत्रों से भी उनको सम्बंध रहा।

बेढब जी गजब के हाजिरजवाब थे। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के करांची अधिवेशन का जिक्र है जो कि संवत् २००३ में हुआ था। शाम का समय था। समुद्र तट की सैर की जा रही थी। प्रसिद्ध उपन्यासकार अमृतलाल नागर बोले, बेढब जी, यहां के लोग मुझे जवाहरलाल नेहरू समझते हैं। बेढब जी ने तत्काल उत्तर दिया "नागर जी यही मेरे साथ हुआ, मुझे मोती लाल नेहरू समझ रहे थे।" अमृतलाल नागर बेढब जी का मुंह ताकते रह गये।

एक बार हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग द्वारा 'लिपि-सुधार-गोष्ठी का आयोजन किया गया था। भदन्त आनन्द कौसल्यायन का कहना था कि 'ख' अक्षर रव का धोखा दे जाता है इसलिए 'ख' अक्षर के 'र' वाले भाग की पूंछ खींच कर 'व' वाली पाई में जोड़ देनी चाहिए। इस पर बेढब जी ने कहा यदि यह लिखा हो कि औरत 'खड़ी' है तो क्या भदन्त जी यह पढ़ेंगे कि औरत रवड़ी है।

डा० सम्पूर्णानन्द जी बातचीत करते समय अपना सिर झटका करते थे। एक बार डा० रामकुमार वर्मा ने बेढब जी से इसका कारण

पूछा। वेढव जी ने कहा 'वर्मा जी, सम्पूर्णानन्द जी योग की साधना किया करते हैं। एक बार उनकी नाक मे एक छिपकली घुस गई और अन्दर ही मर गई। उसे निकलवाकर रायकृष्णदास के कलाभवन में सुरक्षित रखवा दिया गया। आप चाहे देख आयें। और सचमुच डा० वर्मा उस छिपकली को देखने कला भवन पहुचे।

उन्होने हास्यरस की कविताए कहानिया तथा उपन्यास लिखे। उनका हास्य स्वस्थ होता था। शृगार तथा हास्य का मिश्रण करना उनकी विशेषता थी। उपमा देने मे तो सिद्धहस्त थे उनकी 'गजी खोपडी' शीर्षक कविता का एक अश देखें :—

"खोपड़ी गजी मनोहर चीज है।
है लुहारो की निहाई की तरह,
है नही रेखा, न इसमे क्रीज है।
सेफ मे जिनके बहुत कुछ होर्ड है
यह उन्ही का साफ़ साइनबोर्ड है।

× × ×

इस तरह यह है चमकती खोपडी
देख सकते आप अपना रूप है
चाद पर है चादनी मानो पडी।
आइना इसको लगे हैं मानने
है बनाया हाथ से भगवान नें।

'बेढव जी का हास्य स्वस्थ 'एव मर्यादापूर्ण है। उनके हास्यपू गद्य मे भी हास्य की धारा स्वाभाविक गति से बहती मिलेगी। 'चश्मा अनेक लोग लगाते है। वेढव जी ने 'ऐनक' का हास्यरस वर्णन कित सुन्दर रूप मे किया है :—

'ऐनक से कितना लाभ है। बहुत बडी सूची है। कहा तक गणन कीजिएगा। आख मे कोई धूल झोकना चाहे तो आपकी ऐनक रक्ष करेगा। दूर की चीज देखना हो तो ऐनक दिखा देगा अर्थात वह आपका

दूरदर्शी बना। आंखे उड़ना चाहें तो वह ढाल का काम देगा। आँखें उठना चाहें तो यह न उठने देगा।—इसलिए विलायत विज्ञान ने खोज कर रंगीन ऐनक का आविष्कार कर दिया है। बड़ी बड़ी सभा कांफ्रेंस में, रेल में, मेला-तमाशे में, रंगीन ऐनक लगाकर जिसकी ओर चाहे घंटों घूरा कीजिए। आप अपनी आंख का फोकस जिसकी ओर चाहे लगा दीजिए उसे पता न होगा। शायद खुली आंखों को इस प्रकार कोई देखे तो लात खाने की नौबत आ जाय। अवश्य ही रंगीन ऐनक के आविष्कारक सरस मनुष्य वर्ग के धन्यवाद के पात्र हैं।

श्री सुधाकर पांडे ने अपने एक हास्यलेख में बेढब जी के विषय में लिखा है कि बेढब जी ने कुछ मित्रों के साथ में एक होटल खोला था। कुछ समय बाद वह बन्द हो गया। अपने मित्रों से उन्होंने बचे हुए सामान के वितरण के लिए जब कहा तो सुधाकर जी ने मना किया तब भी उन्होंने उनके हिस्से की प्याले तथा प्लेटें उनके यहां भिजवा दीं।

बहुत कम लोग जानते हैं कि उनका पूरा नाम कृष्णदेव गौड़ था। कुछ वर्षों उन्होंने 'प्रसाद' नामक मासिक पत्र का भी सम्पादन किया था। वह कहानी प्रधान मासिक पत्र था। बेढब जी ने तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक विषमताओं पर मीठी चोटें की थीं। उनका व्यंग्य भी कटु नही होता था। उर्दू छन्द रुबाई को उन्होंने अपना लिया था। पेरोडियाँ भी बेढब जी ने खूब लिखीं। बनारस के हास्य लेखक मंडल के वे प्राण थे। वे अपने हास्य साहित्य के बल सदैव याद किए जाते रहेंगे।

पं० श्रीनारायण चतुर्वेदी : एक बहुमुखी व्यक्तित्व

पं० श्रीनारायण चतुर्वेदी उन हिन्दी सेवियो मे से है जिन्होने अपना सर्वस्व हिन्दी के उत्थान के लिए समर्पित कर दिया है। चतुर्वेदी जी को सस्कृत का पाडित्य तथा हिन्दी प्रेम विरासत मे मिला है। आपके पिता प० द्वारका प्रसाद चतुर्वेदी एक प्रकाड विद्वान थे। उन्होने अनेक मूल्यवान ग्रन्थो की रचना की। हिन्दी-रक्षक राजर्षि बाबू पुरुषोत्तम दास टडन के साथ चतुर्वेदी जी ने हिन्दी के प्रचार मे सक्रिय भाग लिया।

हिन्दी के सैकड़ो कवि एवं लेखको की चतुर्वेदी जी ने अनेक प्रकार से सहायता की। भारतीय-सस्कृति के आप दृढ समर्थक रहे है। अनेक बार आपने विदेशो की यात्रा की किन्तु अपने आचार-विचार को नही छोडा। उत्तर प्रदेश, तत्कालीन मध्य भारत तथा भारत सरकार के अनेक उच्चपदो को आपने सुशोभित किया। चतुर्वेदी जी की प्रतिभा सर्वतोमुखी रही है। इतिहास एव शिक्षा शास्त्र आपके प्रिय विषय रहे।

सन् १६५५ से सन् १६७५ तक आपने हिन्दी की गौरवशालिनी पत्रिका 'सरस्वती' का सम्पादन किया। आपके द्वारा लिखे सम्पादकीय तथा टिप्पणियाँ आपके गहरे ज्ञान के द्योतक है। वाराणसी मे दिये गये आपके विद्वतापूर्ण भाषणो का सग्रह 'आधुनिक हिन्दी का आदि काल' शीर्षक से हाल ही मे प्रकाशित हुआ जिसकी चर्चा विद्वानो ने की। भारतेन्दु तथा द्विवेदी काल से सम्बधित नये तथ्यो का उद्घाटन इस ग्रन्थ मे हुआ है।

गाम्भीर्य एव विनोदशीलता का जैसा सगम चतुर्वेदी जी के

व्यक्तित्व में मिलता है ऐसा अन्यत्र दुर्लभ है। प्रेमवश अधिकांश लोग चतुर्वेदी जी को 'भैया साहब' कहते है। चतुर्वेदी जी जहाँ-जहाँ रहे हैं, इनकी बैठक में हँसी के झरने झरते रहे हैं। १९४१-४३ तक मैं प्रयाग विश्वविद्यालय का विद्यार्थी रहा। नित्य प्रति संध्या को भैया की बैठक में सम्मलित होने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ। वो अट्टहास, अनेक साहित्यिक तथा असाहित्यिक विषयों पर विनोदमयी टीका टिप्पणी, बौद्धिक नोक-झोंक, हाजिर जवाबी का आदान-प्रदान इन बैठकों में भाग लेने वालों की जीवननिधियाँ हैं। चतुर्वेदी जी जीवन में जितना हँसे है और दूसरों को इतना हंसाया है वह आश्चर्य जनक ही कहा जायगा।

आज से बीस वर्ष पूर्व आजकल के अभिनन्दन-ग्रन्थों में घटियापन पर व्यंग्य करते हुए 'श्री विनोद शर्मा अभिनन्दन ग्रन्थ पूर्व रंग' शीर्षक से एक ग्रन्थ होली के अवसर पर प्रकाशित किया था। हिन्दी के व्यंग्य साहित्य में यह ग्रन्थ एक मील के पत्थर के समान है। इसके साथ दोहा भी था :

"होरी को त्यौहार यह, रसमय और पुनीत।
खटमिट्ठो साहित चलो, वहुत चखो नवनीत।"

चतुर्वेदी जी 'विनोद शर्मा' के नाम से हास्य-व्यंग्य लिखते रहे हैं। आपका हास्य परिष्कृत तथा सुरुचिपूर्ण रहा है। सामाजिक तथा राजनीतिक व्यंग्य लिखनेवाले तो हिन्दी साहित्य में अनेक हुए है किन्तु साहित्यिक विषयों पर व्यंग्य 'विनोद शर्मा' की निजी विशेषता रही है। प्रकाशित रूप में 'छेड़छाड़' हास्य-काव्य संग्रह तथा 'राजभवन की सिगरेटदानी' हास्य-व्यंग्य लेखों का संग्रह उपलब्ध है किन्तु उनकी ये दोनों कृतियाँ गुणात्मक दृष्टि से हिन्दी हास्य-व्यंग्य के मानक ग्रन्थ हैं। इसके अतिरिक्त मौखिक रूप से जितना वचनविदग्धता-युक्त-हास्य-साहित्य इनके द्वारा सृजित है वह अपार है। डॉ० जानसन के बासवैल की तरह चतुर्वेदी जी का भी कोई व्यक्तिगत सचिव

श्रौर उनके जीवन मे रमे हुए हास्य-व्यग्य के छीटो को एकत्र कर देत तो वाल्मीकि रामायण के श्राकार का ऐसा ग्रन्थ तैयार हो गया होत जिसे विश्व के हास्य साहित्य मे स्थान मिलता। छेडछाड' हिन्दी के विरोधियो की तथा नयी कविता के नाम पर कविता कचूमर निकालनेवालो की जमकर मरम्मत की है। 'करेला लोचनी शीर्षक कविता मे उन लोगो को श्राडे हाथो लिया गया है जिन्हे नये पन का खफ्त सवार है। कवि प्रेयसि के नयनो के लिए उपमान की तलाश मे है श्रौर उपमान नया ही होना चाहिए,

कैसे श्राज बताऊ लोचन,
कमल-नयन यदि कहता हू
तो कहलाऊँगा दकियानूसी
मृगलोचनो बताता हू तो
बन जाऊँगा भक्षक-भूसी प्रगतिशील उपमा की इच्छा
सुन्दर न, हो सभ्य श्रलवत्ता
यह उनका मत है
प्रेयसि बसते जो कि निकट कलकत्ता
परवल से है उपमा कैसी ?
प्रेमरोग मे श्रनायोग का
काम सदा देती है श्राँखे
या वे उछल हृदय पर चढती
ज्यो मेढक की पिछली टाँग
कहो, रही यह उपमा कैसी
बुरा मान मत जाना प्रेयसि
मेढक श्रपने मे महान् है श्रालोचक जो प्रगतिशील है
उनका यह निश्चित विधान है।

चतुर्वेदी जी का मत है "विशुद्ध हास्य लिखना बडा कठिन है। ऐसी रचना जो हास्य हो श्रौर वह भी शिष्ट हास्य हो, दशहरे के नीलकठ की तरह कभी-कभी ही देखने मे श्राती है, व्यग्य लिखना

अपेक्षाकृत सरल है। व्यंग्य लिखते समय मैं इस बात का ध्यान रखता रहा हूं कि जहाँ तक हो विचारों, मतों और कार्यों की ही आलोचना को जाय, व्यक्तित्व को नहीं।

'राजभवन की सिगरेटदानी' में बीस व्यंग्य निबंध है। 'नये रोग' शीर्षक लेख में आपने अनेक रोगों के साथ भाषण देने के रोग को 'स्पीचेण्टरी' रोग की संज्ञा देते हुए लिखा है। 'यह रोग सार्वजनिक जीवन में विशेष रूप से होता है। इसके कोटाणु पहले दिमाग में हल-चल पैदा करते है और फिर गले और जोभ पर आक्रमण करके जोभ में खुजली उत्पन्न कर देते हैं। जब रोगी किसी सुव्यवस्थित भीड़ को देखता है तो उसकी जोभ की खुजली बढ़ जाती है और यदि ऊंचा मंच बना हो और साथ में'माइक' भी रखा हो तब रोगी की खुजली बेकाब हो जाती है। उसके पेर सोधे होने लगते हैं और खड़े होने को मचलते है।

युवावस्था में लिखी आपकी 'विमना की सड़क' विद्यार्थियों तथा प्रौढ़ों में समान रूप से लोकप्रिय हुई। 'मनोरंजक संस्मरण' शीर्षक से आपने साहित्यकारों के मनोरंजक संस्मरणों का एक संग्रह प्रकाशित किया जो हिन्दी साहित्य को एक अनूठी देन है।

२८ सितंबर १८९३ में इटावा (उ० प्र०) में आपका जन्म हुआ। प्रयाग विश्वविद्यालय एवं लंदन विश्वविद्यालय आपके अध्ययन के क्षेत्र रहे। ८५ वर्ष की आयु में भी आप स्वस्थ एवं सक्रिय हैं। हाल ही में मारीशस में होने वाले विश्व हिन्दी साहित्य सम्मेलन में वहां के निवा-सियों को गंगाजल तथा अन्य सांस्कृतिक उपहार देकर आपने उनका मन जीत लिया। जब डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी से चतुर्वेदी जी की इस लोकप्रियता का जिक्र किया गया तो उन्होंने विनोद में चुटकी ली 'भाई हम तो दो वेदों के ज्ञाता हैं,चतुर्वेदीजो तो चारों वेदों के ज्ञाता है।'

वास्तव में पं० श्री नारायण चतुर्वेदी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व हिन्दी साहित्य के लिए गौरव की वस्तु है।

मर्ज मंत्रीपद का—नुस्खा भोला पंडित का

बरसात का दिन था। पण्डित भोलानाथ अपनी बैठक में बैठे हुए थे। सुबह उठ कर समाचार पढ़ा करते थे। उस दिन अखबारों की छुट्टी थी। बैठे बैठे बोर हो रहे थे इसी बीच उनके अभिन्न मित्र मास्टर रामप्रसाद आ गये। भोलानाथ को बड़ी खुशी हुई। पंडिताइन को टेर कर नाश्ता-चाय लगाने के लिए कहा।

पण्डिताइन का 'मूड' ठीक नहीं था। उसे कुछ अन्यमनस्क-सी देख कर पण्डित जी बोले, "देख भाई, तोय भैया के मन्त्रिमण्डल से हटिवे को इतनो दुख है तो मायके चली जा। हमारे अच्छे-भले घर मे मे शोक मत मनावे। कार्तिक को मस्त महीना है। हँसो-खुशी रह।"

रामप्रसाद ने बीच में टोका, "गुरू जी, मैं तो अभी नाश्ता कर के आया हू। गुरुआइन को दुख होना स्वाभाविक है। मेरे स्वयं का 'मूड' भी बिगड़ा हुआ है। उनसे मुझे भी कई काम कराने थे। गुरुआइन ने भी अनेक रिश्तेदारों को काम कराने का वचन दे दिया था। आप शांत रहिए, मैं चाय बना कर अभी लाया।"

पंडित जी बटुआ खोल चुके थे। तबाकू में चूना मिलाते हुए बोले, "रामप्रसाद! बेटा, तू कौन कौन से हमारे काम करि जाइगो। खैर भाई, चाय बनाय जाइगो, रोटी कौन करेगो, घर मे तो धधे-ही-धधे हैं। अरे, घर में तो जवान-जवान की मौत हू है जाये तो हू या पापी पेट की आग बुझामिनी परे। क्यो भैया, सारो मन्त्रिमंडल से हटि गयो, तो मैं का कर सकूं? मेरो का चलेगो? मोपे बिना बात की गुस्सा उतार रही है। राजनीति के खेल समझे तो है नहीं, बिना बात कूं बामे टाँग अड़ावें।"

इसी बीच पंडिताइन चाय बना कर ले आयीं। पंडित जी की मूछों में हंसी की किरणें चमकने लगीं। जब वो चाय रख कर जाने लगी, तो पंडित जी ने उसे हाथ पकड़कर बैठा लिया।

पंडिताइन की उम्र पचास के लगभग थी। क्योंकि उसके कोई बाल-बच्चा नहीं हुआ था, इसलिए काठी बनी हुई थी। बाल भी घनघोर काले थे। जयपुर की बनी इंद्रधनुषी साड़ी पहने हुए थीं। उसी रंग की चोली थी। आंखों में चौड़ा-चौडा काजल लगा हुआ था। गालों पर भी रक्तिम आभा थी। चूड़ियां शायद दो-चार दिन पहले ही पहनी थीं, वे भी चमक रही थीं।

पंडित जी बोले, "रामप्रसाद, तुम्हीं इसे समझाओ। उस दिन पूछने लगी, मंत्री कैसे बनाये जावें ? मेरे भैया ने का कसूर कर दियो ? कोठी हू खाली करनी पड़ी। मोटर हू छिन गई, मंत्रीगिरी को कोई इम्तिहान होतो होय मैं तो इसे बतातो, भैया तू ही समझाय दे। मेरे घर में से ये कलेश तो कम होंगे। ये देख, ये चर्चा चली और वाकी आंखें छलछलाय आवें।"

रामप्रसाद बोला, "गुरुआइन, आप अपना मन इतना दुखी मत कीजिए। जो विधानसभा या संसद का सदस्य चुना जाता है, वह भी सभा का एक विशिष्ट व्यक्ति माना जाता है। उन्हीं में से मंत्री छांटे जाते हैं। अब मैं कैसे आपको समझाऊं कि ये छंटाई कैसे होती है ?"

इसी बीच पंडिताइन बरस पड़ी, "रामप्रसाद, तू मेरे सामने पैदा भयो है, मोकू बहकावे मतो, मैं का जानू नहीं हूं। सबके नाम की पर्ची लिखि के रख लें और काई क्वारी छोरी से, जितने हू मंत्री चाहिए वे पर्चा उठिवाइलें। जब मेरे भैया को पर्चा निकरि आई और याइ मंत्री बनाइ दियो, फिर ये बेईमानी क्यों ? ये वहां जाइके वाकी मदद नाइ करें कि अच्छे भले कू क्यों हटाइ दियो ? रामप्रसाद, वखत परे पे अपनो ही मदद करें। बताओ, जब से वो मंत्री भयो अपने-तुम्हारे ही काम कर रह्यो, रह्यो आतो तो और जाने कितनो फायदो होतो ?"

रामप्रसाद धर्म संकट में था। इधर गुरू जी थे, उधर गुरुआइन।

वह दोनो की हा मे हा मिलाता जा रहा था। इसी बीच पदच्युत मत्री जी आ टपके। पडित जी की बाछे खिल गयी, बोले, "आओ भैया तुम्हारी ही चर्चा है रही हती। अब तुम समझाओ ये का गडबड है गयी ?"

उसने कहा, "जीजा जी, का बताऊँ मेढको का तोलना है। शुरू-शुरू मे तो अपनी ओर करने के लिए हरेक को आश्वासन दे देते है कि मत्रिमडल मे ले लेगे। आप स्वय ही विचार कर सकते है, सबको मत्रि-मडल मे कैसे लिया जा सकता है ? फिर इस गुट स उस गुट म, और उस गुट से इस गुट मे आवागमन शुरू हो जाता है। य तो लाइलाज मर्ज है। कुछ समझ मे नही आता। दिन तो क्या, पूरी रात भी निकल जाती है इसी तोड-फोड मे।"

गुरु जी ने अदर से गुरुआइन को बुला कर कहा, "ले, समझ ले भाई, तेरो भइयो आइ गयो है। तू स्वय ही वासे वात कर ले। मैं यामे का थेगरी लगाइ दउगो।"

पडिताइन बोली, "क्यो भइया, तेरे जीजा जी काहू काम के नही है। तोय फिर से कुर्सी पे नाइ बैठारि सके। ये तो पूरे मोहल्ले के झगडे निबटाते रहे। दिन रात बैठक भरी ही रहे। काऊ-काऊ दिन तो ऐसी पचायत लै बैठें कि खाइवे की फुर्सत नाइ मिले। तुम्हारे झगड क्यो नाइ निबटाइ सके। चुप्पी क्यो मारि जा कछु तो बोलो। मदिरवारेन को कितनो उलझन भयो झगडो हो, तुम्ही ने सुलझाओ कि काई और ने।"

गुरू जी ने अपने सारे-मत्री को सबोधित करते हुए बडे जोश मे कहा, "देख भाई, तेरी भैन मोकू चैलेंज दे रही है, और सच्ची कह रही है मैं बीस वर्ष से पच हू, सैकडन पचायत करी और हजारन झगडे निवटाइ दिये।"

बीच मे रामप्रसाद बोल उठ, "गुरु जी ये सब बाते आप क्यो बता रहे हैं, सारा कसबा जानता है कि झगडे सुलझाने मे आप कितने

प्रद्धस्त हैं। आप मेरा यकीन मानिए कि यदि आप ऐसा कोई रास्ता रकाल दें कि प्रेमपूर्वक मन्त्रिमंडल बन जाये और प्रेमपूर्वक चलता हे, उखाड़-पछाड़, तोड़ा-फोड़ी सब अतीत की वस्तुएं है जायें। गुरू जी, ाच मानिए आप अमर हो जायें और पूरा राष्ट्र आपके गुण गावे।"

पंडित जी मुस्कराये, तंबाकू जो बना रहे थे, उसे फटकार कर ंठों में दबाया और बोले, "तो अब मोई पे डार दीनी है तो सुनो। रे पास ऐसो नुस्खा है कि जितने चुन के आवे सभी कू मंत्रीगिरि को बाद मिले, सब खुश रहे और तोरा-फोरी को नौबत न आवे।" गुरू ी ओर देखते हुए वे फिर बोले, "क्यों भाग्यवान, गणेश जी के पुराने दिर में कितने पुजारी हैं? कितने वरसने से या बात पै मुकदमा ड़ि रहे कि पूजा कौन करेगो? कौन को हक है, लट्ठ भी चले, गारी लौज तो नित्य को नियम है गयो हतो, हजारन रुपये मुकदमन में खर्च ये?"

गुरुआइन के अतिरिक्त उसका भाई तथा रामप्रसाद भी स्वी-ारोक्तिसूचक गर्दन हिला रहे थे। रामप्रसाद बोले, "अब तो सब गारियों में ठीक-ठाक चल रहा है।"

गुरु जी गरजे, "बेटा बात कूं बीच में मत काटे। ये तो पूछ कि ये ा से नैया कैसे चलिवे लगी? भगवान, भलो होय वा जज को, गणेश ा ऐसे वाकी बुद्धि पे बैठे और वाने ऐसा फैसलो सुनायो कि दूध-को-ा और पानी-को-पानी कर दियो।"

गुरुआइन बोली, "पहेली मत बुझाओ, जल्दी वा नुस्खा कूं क्यों ईं बताई रहे।"

गुरु जी पुनः बोले "तू तो ऐसी उतावली हो रही है कि कछु पूछयो मती। बताइ तो रहयो हूं। तो हां, वा जज ने पूरे वर्ष के दिनन कूं ारिन में बांट दियो, साल में काई को दो दिन को पूजा करिवे को नम्बर आवे, काई को आधे दिन को। कई बरस है गये, अपने दिन भेंट वो ले जाता है, जिसका नंबर, उसी दिन की भेंट उसको। सब ाड़ मिट गये।"

गुरु जी को सारो मंत्री बोला, "तो आप ये कहना चाहते हैं कि जितने सदस्य हो उनको बारी-बारी से मत्रीगिरी मिलती रहे।"

पडित जी बोले, "भैया तोय ताज्जुब क्यो है रह्यो है सब अपने क्वाटरन मे रहो, जा दिन नबर आवै, मत्री बन के अपने मनोरथ पूरे कर लेओ। सरकार तो सरकारी आदमी चलाते ही रहे है। भैया मेरे चैले न है कि सिवाय वा नुस्खा के अजमाइने के दूसरो कोई उपाय नही है। हे सके लोग सुनिके हँसा करे पर लाला जैसे हालात चलि रहे हैं, ऐसे ही हालात गणेश जी के मदिर के पुजारिन के है मैं तो तुम कहो जितने की शर्त लगाऊ, करि के तो देखो।"

रामप्रसाद बोले, "गुरु जी, वैसे बात आपकी समझ मे तो आती है, क्या जो नवरदार लोग हैं उनके गले मे उतरेगी।"

पडित जी बोले, "भैया, रोम-रोम राजी होय तो बेपइसा को नुस्खा है, करि देखो नाय जिंदगी भर लडिते रहो। भैया, मोइ तो स्नान-ध्यान करन देउ, राजभोग के दरसन करिबे जाना है।"

और गुरु जी उठकर अदर चले गये।

चन्दा-चयन-चातुरी

चन्द्रमा सभी ने सुन्दर माना है। कवियों ने इसका दिल भरकर उपयोग किया है। चन्द्रमा व्यापारी होता तो अपने इस्तेमाल की ऐवज में प्रत्येक कवि से फीस वसूल करता। चन्द्रमा में शायद वणिक बुद्धि नहीं है। चन्द्रमा घिसते घिसते चन्दा हो गया। पिया के संदेश भेजे जाने का काम इससे लिया जाने लगा (चन्दा देस पिया के जा) चन्दालाल "मैसेजर" का काम करने लगे। चन्दा पर चन्दा चला। किसी काम के लिए किसी से धन लेने को चन्दा कहा जाने लगा। चन्दा बहुत ही लोकप्रिय हो गए। चन्द्रमा पिछड़ गए। शुरू में अनाथालय चलाने के लिए चन्दा वसूली का कार्य शुरू किया गया। खोज करने वाले दिमाग शुरू से ही रहे हैं। एक साहब के ८ लड़के-लड़कियाँ थे। उस समय नसबन्दी का प्रचलन इतना अधिक नहीं था। पाँच बच्चे उसके भाई के थे। भाई दुकान करता था। ये यहां शाम सुबह बच्चों को लेकर निकल पड़ते थे। "गरीबों की मदद कीजे भला होगा, भला होगा।" चन्दा का काम चल निकला। अनाथालय का भवन बन गया। अनाथ तो घर के ही थे। निवास स्थान उसमें ही हो गया। छोटे भाई ने भी दुकान बन्द कर दी। वो भी चन्दा का कार्य करने लगा। कुछ समय बाद ये भी लखपती बन गया।

धीरे-धीरे स्कूल बनवाने के लिए चन्दा चयन प्रारम्भ हुआ। धर्मशाला बनवाने से चन्दा चयन का कार्य प्रारम्भ हुआ। भवन बनवाने के कार्य का प्रबंध करने वाले का निजी भवन भी साथ में बनने लगा। चन्दा-चयन का कार्य सुव्यवस्थित ढंग से चलने लगा। बड़े-बड़े लोगों का ध्यान भी इस नये उपयोग की ओर खिंचने लगा। बड़े लोगों की बड़ी बातें होती है। महापुरुषों के स्वर्ग जाने पर उनके 'स्मारक' के लिए

चन्दा चयन होने लगा। सैकडो हजारो-लाखो करोडो तक इसकी राशिया फैलने लगी। उर्वर मस्तिष्क चन्दा-चयन के लिए हवाई योजनाएँ बनाने लगे। पीडित साहित्यकारो के लिए भी चन्दा-चयन होने लगा। जिन पीडितो की अपील निकाली गई वे वक्तव्य देने लगे कि उन्हे रुपये की आवश्यकता नही है, उनके लिए चन्दा जमा न किया जाय। सच बात यह थी कि उनके लिए चन्दा जमा भी नही किया जा रहा था। भारत स्वतत्र हुआ। चन्दा-चयन के अभ्यास भी बदले। क्षेत्र विस्तृत हुआ। चुनाव के लिए चन्दा-चयन कला की परिधिया आकाश चूमने लगी।

एक पार्टी के कार्यकर्ता ट्रेन मे मिले। उनके बैग मे लगभग पाँच लाख रुपया था। प्रत्येक प्रत्याशी को एक निश्चित रकम देनी थी। मैंने उनसे कहा—"स्टेशन पर डकैती की रिपोर्ट लिखा दे। मैं गवाही दे दूगा। कुछ रकम मुझे दे दो बाकी आप डकार जाओ'। पहले खुश हुए पर बाद मे हिम्मत नही हुई। अपना काम तो सलाह देना था। बाद मे पता चला जिन जिन को रुपया दिया गया, वे ही डकार गये। नाम मात्र का खर्च किया बाकी का हिसाब अच्छे कागज पर अच्छी तरह लिखकर दे दिया। चन्दा तो गोल है ही उसे गोल कर देने मे सकोच होना ही नही चाहिए।

चन्दा मागना भी एक कला है। राजनीति के क्षत्र के अतिरिक्त साहित्यिक तथा सास्कृतिक क्षेत्र मे भी इस कला के आचार्य मिल जाते है। दूसरे की जेब से रुपया निकालने वाले को पाकेटमार कहा जाता है। उसे पुलिस पकड लेती है। चन्दा भी दूसरे की जेब से ही निकाला जाता है। किन्तु इसे निकालने वाले को आर्थिक लाभ के साथ प्रतिष्ठित पद पर विठाया जाता है। चन्दा लाने के लिए चलती रकम होना आवश्यक है। इस मे साम दाम, दड तथा भेद का प्रयोग करना पडता है। कही विनम्रतापूर्वक चन्दा प्राप्त किया जाता है। कही धमकी और आतक से भी चन्दा प्राप्त किया जाता है। इसे अनैतिक नही माना जाता। नीति मे कहा गया है जब सीधी उगली से घी नही ... तो टेढी से निकाला जाता है।

चन्दा-चयन-कला ने धीरे-धीरे व्यवसाय का रूप ले लिया। कुछ भाई-बहिन लघु-उद्योग के रूप में इसे अपना लेते हैं। इस उद्योग को शुरू करने के लिए अधिक पूंजी की आवश्यकता नहीं पड़ती। रसीद वही छपवा लीजिए तथा कार्य प्रारम्भ कीजिए। इसके लिए आपको कहीं अर्जी देने की आवश्यकता नहीं है। अकवर इलाहाबादी कह गये हैं—

देखता है एक उम्र से बन्दा,
होता है कुछ काम न धंधा
बस यही बातें और यही फन्दा
लाओ चन्दा, लाओ चन्दा।

चन्दा लेने की कोई ऋतु नहीं होती। चाय पीने का कोई खास समय नहीं होता। चाय कभी भी पी जा सकती है। चन्दा किसी भी समय इकट्ठा किया जा सकता है। बेकार व्यक्ति के लिए तो ये ईश्वरीय वरदान हैं। "हरद लगे न फिटकरी रंग चोखा आवे" मेरा एक तुक्तक है

रामू को जब नहीं मिला कोई धंधा
छपाकर रसीद वह उघाने लगा चन्दा
आया धन खूब
निखर आया रूप
मूँछों पर ताव देकर रहने लगा बन्दा।'

एक फिल्म बनी। एक जाति विशेष का उसमें मजाक उड़ाया गया था। जाति की सभा हुई। जोरदार भाषण हुए। देखते-देखते हजारों रुपया चन्दा जमा इसलिए किया गया कि फिल्मवालों पर मुकदमा चलाया जायगा। कलाकार धन लेकर बम्बई गये, आज तक नहीं लौटे। फिल्म धड़ाके से चल रही है।

कई वर्ष हुए। एक कवि-बन्धु ने एक अभूतपूर्व पत्रिका निकालने की एक दीर्घ योजना बनाई: हजारों को संख्या में अग्रिम सदस्य बनाए। आजतक न उन्हें अच्छा प्रेस मिला और न कागज जिस पर पत्रिका निकल सकती।

चन्दा-चयन के एक इतिहास में एक क्रांतिकारी नेता के जीवन में ही लाखों रुपये का अमृत-तुल्य कोष इकट्ठा हुआ। उसके हिसाब के बारे में अनेक शोधार्थी अहर्निश लगे हुए है किन्तु किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंच पा रहे। केवल इतना पता चला है कि उसके प्रबन्ध के लिए अभी पूरा ट्रस्ट ही नही बन पाया। उस कोष से सम्बन्धित एक व्यक्ति कोष के खर्चे से विदेशों का चक्कर लगा आये। वे विदेशों में ऐसे कोषों के प्रबन्ध के लिए ट्रस्ट किस प्रकार बनाये जाते है, इसका पता लगाने गये थे।

चन्दा-चयन करने की कला में परिपक्वता मिल जाने पर चन्दा हजम करने की योग्यता प्राप्त की जाती है। इसके लिए गम्भीरता बहुत आवश्यक है। सदैव चिन्तित नजर आईये ताकि जिससे आपने चन्दा मांगा है वह ये पूछ ही न सके कि उसका क्या हुआ? थोड़ा साहस भी होना चाहिए। जेल के अन्दर जाने मे किसी प्रकार का मानापमान का ध्यान नही रखना चाहिए।

क्या ही अच्छा हो कि कोई आयुर्वेदाचार्य वैद्यराज चन्दा हजम चूर्ण बनाये जिसके फांकने से कितनी भी रकम का चन्दा हो, तुरन्त पच जाय।

नेता की मृत्यु

एक शहर में एक नेता की मृत्यु हो गई। उन्होंने गलत तरीके र बहुत रुपया कमाया था इसलिए बहुत बदनाम हो गये थे। अनोखे ताल उनके पड़ोसी भी थे और उनकी पार्टी के सदस्य भी। अनोखे- ताल की तबियत खराब थी, उन्होंने अपने लड़के बुद्धूलाल को मुर्दनी में शरीक होने को कहा। बुद्धूलाल के ये पूछने पर कि उसे क्या करना होगा, अनोखेलाल ने कहा वहां जो सब कहते हों, तुम भी कहना, और जो वे लोग करें वह तुम भी करना। बुद्धूलाल मुर्दनी में शरीक होने चले गया। मुर्दनी में उसने लोगों को आपस में कहते सुना कि नेता जी बड़े भ्रष्टाचारी थे, अच्छा हुआ मर गया मुहल्ले का कूड़ा साफ हो गया। इसी बीच स्व० नेताजी के लड़के अजीतप्रसाद ने बुद्धूलाल से पूछा "क्यो भाई, अनोखेलाल नहीं आये। बुद्धूलाल ने उत्तर दिया—वैसे तो उनकी तबियत खराब थी इसलिए नहीं आये लेकिन सच पूछो तो मोहल्ले का कूड़ा साफ हो गया। अजीतप्रसाद उसका मुह देखता रह गया।

कुछ दिनों बाद अनोखेलाल जी से अजीतप्रसाद की भेंट बाजार में हो गई। उसने अनोखेलाल से बुद्धूलाल की शिकायत की और कहा हमारे पिता जी मर गये और आपके लड़के ने कहा कि मोहल्ले का कूड़ा साफ हो गया।" अनोखेलाल ने अजीतप्रसाद को धीरज बंधाते हुए कहा "बेटा तुम उसकी बातों पर ध्यान मत दो। इस बार कोई मौका आने दो मैं स्वयं ही शामिल हूंगा" और नेताजी का पुत्र अनोखेलाल का मुंह देखता रह गया।

नौकर

एक शहर मे एक लालाजो रहते थे। वे बहुत मोटे थे! कजूस इत कि चमडी चलो जाय पर दमडी न जाय। अपनी बैठक में बैठे थे उसी समय कुछ यार दोस्त आ गये। ललाइन ने मेहमानों के लिए चा जोड़े पान नौकर के हाथ भेज दिये। नौकर ने लाकर मेहमानों के साम पान रख दिये और जोर से कहा "ललाइन ने पान भेजे है।" लाला ज तो कजूस थे ही मेहमानो के चले जाने के बाद नौकर पर चिल्ला और कहा "आगे से जो कुछ देना हो इशारे से दिया करो और जो कुछ भी कहना हो धीमे से कहा करो।" नौकर आज्ञाकारी था। उसने दोन बातें गाँठ में बाध ली।

कुछ समय बाद की घटना है कि लाला जी के ऊपर वाले कमरे में आग लग गई। ललाइन ने नौकर से कहा कि जल्दी जाकर सेठ जी को सूचित करो। नौकर ने वहा पहुच कर देखा कि सेठ जी के पास कुछ लोग बैठे हुए है। वह चुपचाप कोने मे खड़ा हो गया। जब लाला जी की निगाह उस पर पडी तो इशारे से पूछा कि क्या उसे कुछ कहना है।

नौकर के हा कहने पर लाला जी उठ कर उसके पास आये। नौकर ने बहुत धीमे से उनके कान में कहा—'ऊपर कमरे मे आग लग गई है।' ये सुनकर लाला जी बेतहाशा ऊपर की ओर भागे। उधर पड़ोसियो ने नौकर से पूछा 'क्या हुआ रे?' उसने धीमे से उत्तर दिया "कुछ नही।" इस बीच लालाजी का कमरा जल कर खाक हो गया। मूर्ख नौकर से भगवान बचाये।

एक टिकट का सवाल है बाबा !

पंडितजी की बैठक। पंडिताइन और उनका चाचा रामप्रसाद बैठे। चायपान हो रहा है। आता चकाचौंध शास्त्री का।

चकाचौंध – पंडित जी, पा लागन।

पंडितजी – आशीर्वाद ! कैसे आये ?

चकाचौंध – गुरूजी, चुनाव लड़ूंगा।

पंडितजी – लड़, कौन रोकता है ?

चकाचौंध – टिकट मिल जाय, कुछ सहायता कर दें।

पंडितजी – कहां मिल रही है टिकट ?

चकाचौंध – पार्टी कार्यालय में।

पंडितजी – तू गया था, क्या वहां ?

चकाचौंध – अजी, वहां तो कुम्भ-मेला की भीर हो रही है धकापेल में मेरी तो एक चप्पल वहीं रह गई।

पंडितजी – तेने किसी ज्योतिषी से बातें करी? अपनी जन्मपत्री दिखाई।

चकाचौंध – गुरूजी, पचास तो रुपया ले लिये, कहा टिकट मिलने के ग्रह हैं, शनि ग्रह रोकेगा, किन्तु इतवार तेरी मदद करेगा इसीलिए आज पार्टी दफ्तर गया था लेकिन शनि जो लगा हुआ है, एक चप्पल खो गई।

पंडितजी – तू तो तीन चार मान्टेसरी स्कूल चला रहा था, वे चल रहे हैं या नहीं ?

चकाचौंध – सो तो आपकी दया है, चार पांच हजार रुपया महीना मिल जाते हैं। एम० एल० ए० हो जाऊंगा तो स्कूलों वालो

[illegible]—जमीन अपनी हो जायगी। मौका लग गया तो एक प्राइ[illegible]
[illegible] कालिज और खोल लूगा।

पडितजी—हां, [illegible] सरकारी मान्यता भी मिल जायेगी, वे[illegible]
विचार तो उत्तम है।

चकाचौध—हा, गुरूजी, आप तनिक अध्यक्ष जी से कह दे, वे आप[illegible]
वहुत मानते है।

पंडितजी— इस क्षेत्र से कितने और टिकटार्थी है।

चकाचौध—पता चला, कोई ६० है। एक तो गोपीनाथ है ही जो इ[illegible]
क्षेत्र से जीतता रहा है।

पडितजी— उसे कैसे लिस्ट मे से हटाओगे ?

चकाचौध—पडितजी, उसने तो वहुत माल वना लिया चार तो क[illegible]
खडी कर ली एक छोटी शुगर फैक्टरी डाल ली। जन[illegible]
वहुत नाराज है।

पडितजी— तू कभी जेल गया ?

चकाचौध—गुरूजी, सच पूछो तो एक वार विना टिकट सफर क[illegible]
हुए अवश्य वन्द कर दिया गया था।

पडितजी—तो अव टिकट क्यो मागे ? हो जा खडा विना टिकट के ह[illegible]

चकाचौध—गुरूजी, आप तो हसी कर रहे है, ये टिकट और वो टि[illegible]
क्या एक ही है ?

पडितजी— पहले ये वता, तेरे जीतने के क्या आसार है ?

चकाचौध—विरादरी वाले सव वोट देगे। मेरे स्कूलो मे जो मास्ट[illegible]
मास्टरनी लग हुए है वे सव मुझे वोट देगे और उनके स[illegible]
रिश्तेदार भी मुझे वोट देगे।

पडितजी—तेने कोई समाज सुधार का भी काम किया है ?

चकाचौध—गुरुजी, फीस तो जरूर "डवल' लगे है पर स्कूल खोलन[illegible]
क्या समाज सुधार का काम नही है।

ंडितजी—बेटा, ये तो तेरा धन्धा है। और कोई बात तो बता जिससे उन पर प्रभाव पड़े।

काचौंध—मैं तो दौड़ लगा रहा हूँ इन नेताओं के आगे पीछे। अरोड़ा जी को लड़की के सम्बन्ध पक्का करने में बहुत घूमा। गांठ के पैसे भी खर्च किये। भगवान की दया से अच्छे घर सम्बन्ध हो गया। दो-दो मुकदमों में उनकी तरफ से झूठी गवाही दी, वे जीत गये, उनके लड़के को जो किसी स्कूल में मैट्रिक में फेल हो रहा था, अपने एक स्कूल में 'इंग्लिश टीचर' लगा रखा है।

डितजी—पगले, फिर क्यों चिन्ता करे है। तेरा काम तो अवश्य हो जायेगा।

ाकाचौंध—गुरुजी, ये बात नहीं है। अन्य प्रत्याशी भी अपनी अपनी तिकड़म लगा रहे हैं। कुछ तो ऐसे हैं जिन्होंने अब तक अरोड़ा जी के हर चुनाव में रुपया लगाया है और वैसे भी 'फाइनेन्स' करते रहे हैं।

ंडितजी- अच्छा तो ये बात है। और कोई चक्कर तो नहीं है।

चकाचौंध—हाँ, गुरुजी, ये तो कहना ही भूल गया। अरोड़ा जी अपनी पत्नी को टिकट दिलवाना चाहते हैं, वो कुछ दिनों से झुग्गी-झोपड़ियों में शाम का स्कूल चलाती है।

ंडितजी—ये कलेश तो "डीलक्स" है। खैर, अब तू जा। अरोड़ा जी से बात करूँगा। हाँ, तू बन्दरों को केला और चना नित्य खिलाना जिससे शनि ग्रह का प्रकोप भी कुछ ठण्डा पड़े। एक सप्ताह पीछे आना। (चकाचौंध का घर जाना)

रामप्रसाद—गुरुजी, मैं तो चुपचाप सब सुन रहा था। आप इसके चक्कर में मत पड़ना ये तो पूरा लपका है। दो बार सोने के बिस्कुट ले जाते पकड़ा जा चुका है। बहुत ही बदनाम आदमी है। स्कूल की एक मास्टरनी को धरे बैठा है

पंडिताइन—आज रामनवमी का दिन है। तुम्हारी भी बुढापे में अक्कल मारी गई है। कोई भी आया और बैठ गये उसकी कथा सुनने। और इतनी देर को तो सुन्दर काड का पाठ भी हो जाता। डोले मर टिकट के मजनू। अरे सेवा ही करनी है, अस्पताल में एक घन्टा नित्य जाओ, गरीबों की मदद करो, घण्टा दो घण्टा गरीबन के बच्चों को पढ़ाओ। एम० एल० ए० बन के ही सेवा होयगी? चलो उठो, स्नान करके रामजी के दर्शन करिबे चलें।

संस्मरण

मथुरा के आसपास बहुत दूर तक ब्रजभूमि फैली हुई है। कहा जाता है कि ब्रज चौरासी कोस में फैला हुआ है। इस प्रदेश में प्रसिद्ध कवि एवं लेखक हुए। मुझे सेठ कन्हैया लाल पोद्दार का स्मरण है। लगभग सन् १६४० की बात है। सेठ जी अलंकार तथा रस साहित्य के प्रकांड विद्वान थे। स्वामीघाट पर उनकी हवेली आज भी विद्यमान है। मारवाड़ी पगड़ी, बन्द गले का कोट तथा धोती यह उनकी वेशभूषा थी। उनमें आभिजात्य था। सर्व श्री मैथिलीशरण गुप्त, पद्मसिंह शर्मा आदि कवि तथा लेखक उनके यहाँ बराबर आते थे। मथुरा में जो भी विशिष्ट साहित्यकार आता वह पोद्दार जी के यहाँ जरूर आता। कालिदास के मेघदूत का समश्लोकी अनुवाद खड़ी बोली में उन्होंने किया था। 'संस्कृत साहित्य का इतिहास' भी उनका महत्वपूर्ण ग्रन्थ है।

इतने प्रख्यात साहित्यकार होने के बावजूद वे नये लेखक तथा कवि का हृदय से सत्कार करते थे। उनका प्रशंसा करने का ढंग अत्यन्त ही मनोरंजक था। वे दाएँ हाथ का अँगूठा तथा उसके साथ की उँगली को मिलाकर हिलाते थे और यही उनकी प्रशंसा करने की शैली थी। उनका स्वाध्याय बराबर चलता रहता था। सरस्वती, नईधारा, माधुरी, सुधा आदि पत्रिकाएँ उनके नियमित आती थी। मैंने देखा था कि भागवत्, उपनिषद्, गीता, पुराण आदि का श्रवण वे संस्कृत के पंडितों से नियमित रूप से किया करते थे।

कलकत्ता में उनको अभिनंदन ग्रन्थ भेंट किया गया था। इस ग्रन्थ के प्रमुख सम्पादक मनीषी डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल थे। यह अभिनन्दन ग्रन्थ वस्तुतः ब्रज साहित्य एवं संस्कृति का मानक कोश है। मुझे उस अभिनन्दन समारोह में शरीक होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। सर्व

श्री हजारीप्रसाद द्विवेदी, सत्येन्द्र, गुलाबराय, बेचनशर्मा 'उग्र', लालता-प्रसाद शुक्ल आदि विद्वान उस समारोह मे शरीक हुए थे। इलाहाबाद की साहित्यिक सस्था 'परिमल' की एक शाखा मथुरा मे भी थी जिसका मै सयोजक था। मैथिलीशरण जी गुप्त मथुरा पधारे हुए थे तथा सेठ कन्हैयालाल पोद्दार के ठहरे थे। हमने 'परिमल' की गोष्ठी उनके स्थान पर ही रक्खी। पोद्दार जी बोले "हास्य रस के कवि बनते हो गुप्त जी की कविता की कोई साहित्यिक पैरोडी सुनाओ तो मजा आवे।" गुप्त जी विनोदी वृत्ति के थे। वे सदैव खुलकर हँसा करते थे। एक मृदुल मुस्कान उनके चेहरे पर सदैव बिखरी रहती थी। राष्ट्र कवि होने का गौरव उन्हे प्राप्त था किन्तु अभिमान छू तक नही गया था। उसी दिन सध्या को गोष्ठी होने को थी। कुछ समझ मे नही आ रहा था कि किस कविता की पैरोडी लिखकर सुनाऊँ जो गुप्त जी को पसन्द आ जाय। यशोधरा मे जो उनका प्रसिद्ध गीत है 'सखि वे मुझ से कह कर जाते' शीर्षक गीत की पैरोडी मैने उन्हे सुनाई जो इस प्रकार थी—

सजनि सिनेमा पति गये, नहिं अचरज की बात,
पर चोरी चोरी गये, यही बडा व्याघात,
सखि वे मुझसे कहकर जाते।
कहतो क्या मुझ को अपनी वे पथ बाधा ही पाते।
कारण नही समझ मे आता
ले जाते तो क्या हो जाता
शायद वे सकोचकर गये, महगाई के नाते।
माना उनके मित्र बहुत है
पर वे सब तो फारवर्ड है
हम सब मित्रो के सग मिलकर, चाप पुटेटो खाते।
बच्चो का यदि साथ न भाता
मुझसे यह क्यो कहा न जाता

'सैकिंड शो' के होने तक तो बच्चे भी सो जाते।
उम्र हुई चालीस की आली
'मेक-अप' से लगती हूँ लाली -
मैं ठिगनी वे लम्बे कद के इसीलिए शरमाते।
अन्य किसी के साथ गये वे
क्या मुझसे मुँह मोड़ गये वे
मैं तो इसको भी सह लेती पतिव्रता के नाते।

पोद्दार जी तथा गुप्त जी हँसते-हँसते लोटपोट हो गये। उन साहित्यकारों में विशाल हृदयता थी तथा बनावट, कृत्रिमता तथा मुखौटों से घृणा थी। उनसे मिलना, उनको अपनी रचनाएँ सुनाना एक सुखद अनुभव हुआ करता था। वे सचमुच नये कवियों को उन्मुक्त हृदय से प्रोत्साहित किया करते थे।

ऐसी ही विभूति डॉ० सत्येन्द्र हैं। मथुरा में वे एक इन्टर कालिज के साधारण अध्यापक थे किन्तु नवीन प्रतिभाओं के साथ परिश्रम करके उन्हें ऊपर उठाना उनको बहुत प्रिय लगता था। वे चाहते तो प्राइवेट ट्यूशनों से अनापशनाप धन पैदा कर सकते थे किन्तु उनका सारा जीवन नई प्रतिभाओं को चमकाने में लगा। आज भी उनके बनाये हुए हिन्दी में कई लेखक तथा कवि विद्वान हैं। मैं इन्टर कालिज में कामर्स का विद्यार्थी था। हास्य एवं व्यंग्य लिखने की प्रतिभा मुझ में जन्मजात थी मैंने अपने ही ऊपर एक 'कामर्स का विद्यार्थी' शीर्षक एक व्यंग्य सन् १९४१ में लिखा। डॉ० सत्येन्द्र उस विद्यालय से निकलने वाली वार्षिक पत्रिका 'ज्योति' के सम्पादक थे। उन्होंने उस लेख को पढ़ा, सुधारा तथा ज्योति में प्रकाशित किया। लेख का एक अंश इस प्रकार था—

'एक दुबला पतला, चश्मा लगाए हुए, कुर्सी कनरवाला विद्यार्थी डेस्क पर हाथ टेके हुए क्लास रूम में बैठा है। हाँ, वह कर रहा है बुककीपिंग—यानी प्यारी बुककीपिंग। उसको

थे वडे आदमी को कर्जदार बनाने की। वह दिन भर मे करोडो रुपये का हिसाव करता है। किन्तु अफसोस, जब वह क्लास से अपने घर लौटता है तो उसकी जेब मे एक फूटी कौडी भी नही मिलती। वाह! यह कोई हँसने की बात थोडे ही है।"

मुझे प्रोत्साहन मिला। डॉ० सत्येन्द्र ने अनेक हास्यरस के लेखकों की पुस्तकें पढने का सुझाव दिया। अपने व्यक्तिगत पुस्तकालय से भी उनको पुस्तकें पढने को दी। उन दिनों के अध्यापकों मे अपने विद्यार्थियों के जीवन निर्माण की दिशा मे ऐसा समर्पण था। डा० सत्येन्द्र ने 'ब्रज-लोक साहित्य का अध्ययन' शीर्षक शोध-प्रवन्ध पर पी० एच० डी० तथा लोक संस्कृति से सम्बन्धित विषय पर डी०लिट् की। उच्च पदों पर रहकर उन्होने अवकाश प्राप्त किया है। हिन्दी के वरिष्ठ आलोचकों मे उनका स्थान है।

सास-बहू का झगड़ा

चरितर प्रसाद—सत्ता के पति, जो घर से गायब हो गये।

सास—सेवा देवी, बहू—सत्ता देवी, । दयाराम—सेवा के स्वर्गीय पति के मित्र, सत्ता देवी के प्रेमी—लपका राम, तस्कर किशोर, सुधा-मदी लाल, बेईमान सिंह आदि—

सूत्रधार—हमारी कला कला के चाहने वालो, पेशे खिदमत है हमारा नया स्वांग। झगड़ा सेवा देवी और बहू सत्ता देवी का। वो लो करते हैं स्टार्ट।

बिल्कुल ताजा प्लाट है, सुनो लगाकर ध्यान।
नई बहू ने सास के, काटे दोनों कान।
काटे दोनों कान, सास को घर से बाहर निकाला,
गली गली वह भीख मांगती, लगा पेट पर ताला।
सत्ता के यारों ने उसको कोठे पर ला बैठाया
नौ-नौ आंसू सेवा रोवे, जर्जर हो गई काया
अकेली पड़ गई सेवा, न कोई नाम का लेवा
पुरानी यादें आईं
पति के साथी दयाराम को जा फरियाद सुनाई।

मैडम सेवा—

हे दयाराम जी विनती मेरी सुनो,
बहू सत्ता ने कीना परेसान है।
कुलवधू अब नहीं है वो वारांगना,
लोकलज्जा का उसको नहीं ध्यान है।

मेरा बेटा चरित्तर जाने कहाँ गया,
मेरी विपदा का भी न उसे ज्ञान है।
खसम के गये से ये सुख पा गई,
अब तो कुर्सी मे इसकी धरी जान है।

दयाराम —सेवा देवी क्या कहूँ, ये समय समय की बात
तेरे सम सद्नारि को, लगे मारने लात।
लगे मारने लात, बहू कुलटा ने सबै फसाया
करे कीर्तन सत्ता का, ये नया जमाना आया।
सत्ता के लैला मजनू फिरते है मारे मारे
तेरे नाम के फिर भी देवी, पडे लगाने नारे।
देख तू चुप्प तमाशा, लोग ये तोला माशा
तेरे दिन शीघ्र फिरेगे—
चार दिनो के बाद शरण मे तेरे ये ही गिरेगे।

सूत्रधार — सेवा देवी घर गई, कर लिये बन्द किवाड
दयाराम बेचैन हो, करने लगे विचार।
करने लगे विचार, चरित्तर कैसे वापस आवे।
माथा चक्कर खाय, नहिं कुछ उपाय समझ मे आवै।
सत्ता ने कैसा लोगो पर, जमकर जादू डाला
इसके सिवा सभी कुछ भूले, जपें स्वार्थ की माला
बनाते रहते हैं गुट,
गये है सब इनमे जुट।
रोज होते है दगल,
पहलवान कुश्ती लडते, दगल को समझे मगल।

[दरबार सत्ता देवी का]

व्यापारी —चरण कमल बदौ मेरी माता।
सर्वस करो निछावर तुम पर,
परमिट, 'कोटा' की तुम दाता।

माता, पिता, कुटुंब कबीला
केवल तुमसे मेरा नाता
चरण कमल वंदों मेरी माता।

नेता — प्रेयसी में तुम्हारी चप्पलों का दास
प्रेम की लेकर परीक्षा, मुझे कर दो पास
पार्टी भी छोड़ दूंगा,
स्वजन से मुख मोड़ लूंगा
पर कुएं में डूबकर जल्दी बुझाऊं प्यास।

बुद्धिजीवी—देवि तुम्हारा है अभिनन्दन
सारा ज्ञान समर्पित तुमको, मस्तक पर लगवालो चन्दन
सिद्धान्तों की ओढ़ चदरिया, करता हूं मैं तेरा वन्दन।
मुख पर 'क्रांति केरियर' बगल में
कोठी कार भये अब नन्दन
(परिक्रमा देते हैं)

सूत्रधार— हो परेशान सत्ता गई लौट घर,
सास सेवा के जाके छुए फिर चरन
बोली लपकों ने मुझको लिया घेर था
अब मैं तेरी शरण, अब मैं तेरी शरण
(युगल गान)
बापू तुम स्वर्ग सिधार गये,
हमें हाय, विपदा में डाल गये।
मैं अनाथ बनकर जीती हूं
अपमान के घूंट को पीती हूं
रघुपति राघव राजाराम
इनको सन्मति दो भगवान।

यादों के झरोखों से

कवि[illegible] अन्दर उदात्त भावों को जगाता है। उसके हृदय को रस-प्लावित करता है। ब्रज-भूमि मे अनेक सन्त एवं भक्त कवि हुए हैं जिन्होंने हिन्दी साहित्य को अमूल्य काव्य-निधि अर्पित की है। अष्टछाप के कवियों की वाणियाँ आज भी हृदय को रस प्रदान करती है। पिछले पाँच सौ वर्षों से काव्य की यह मधुर सरिता निरंतर प्रवाहित होती रही है। 'पढ़न्त' भी कविता-प्रेम की एक ऐसी परिपाटी है जो आज भी पढ़नेवालों को तथा श्रोताओं को आनन्द विभोर करती रहती है। यमुना छट्ट पर आज भी 'पढ़न्त' होती है। इसमें भाग लेने वाले अपने बनाये प्राचीन कवियों के छन्दों का सस्वर पाठ करते है। विषय कोई भी हो सकता है—वसन्त, शरद, नयन, ग्रीष्म आदि मे से किसी एक विषय को ले लिया जाता है और रात रात भर ये पढन्त गोष्ठियाँ चलती रहती है। इनमे भाग वही ले सकता है जिसे काफी सख्या मे छन्द याद हों। काव्य रस का आनन्द लेने के अतिरिक्त नये कवियों को काव्य लिखने की प्रेरणा भी इन गोष्ठियों मे मिलती है।

एक घटना याद आती है। पढन्त चल रही थी। विषय था 'नयन'। हमे उस गोष्ठी मे भाग लेने का सुअवसर प्राप्त हुआ। सन १९४० की बात है। 'काला चश्मा' शीर्षक एक छन्द हमने सुनाया जो इस प्रकार था—

कारे रंग वारो प्यारी चश्मा उतारि नेकि
देखो तेरे नैन नैन अपने मिलाय के
तेरे नैन देखिबे की भौत अभिलाष मोहि,
सुनिलै अरज नेकि दया चित लाय कैं।
कमल से कि मीन से कि खजन से नैन तेरे

एक है कि दोनों नैंकि देखों निहारि कै
मैम भयी रानी कहूं नाहि ऐंचातानी तू,
मोकों दिखाई नैंकि चस्मा हटाइ कें।

उन दिनों वरिष्ठ कविगण मुक्तहृदय से उदीयमान कवियों का उत्साह-वर्द्धन करते थे। उनके छन्दों का परिष्कार करते थे। प्यार से समझाते थे। समवयस्कों में भी स्वस्थ स्पर्धा होती थी। कटुता अथवा द्वेष का नामोनिशान नहीं था। ब्रजभाषा के ऐसे दिग्गज कवियों को सुना जिन्हें हजारों छन्द कण्ठस्थ थे। कैसी स्मरण शक्ति थी उनकी।

इसी प्रकार विद्यार्थियों को कविताएं याद कराने का माध्यम था अन्त्याक्षरी प्रतियोगिताएं। उन दिनों फिल्मी गीतों की अन्त्याक्षरी का प्रचलन नहीं हुआ था। ये कुप्रवृत्ति तो आजकल ही दृष्टिगोचर होती है। तुलसी, सूर, रसखान, घनानन्द, पद्माकर, रत्नाकर के छन्दों का पाठ जब विद्यार्थी अपने कोकिल कंठों से किया करते थे तब वातावरण में एक स्निग्धता आ जाती थी। आधुनिक कवियों में श्यामनारायण पाण्डेय, सुभद्राकुमारी चौहान, प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी आदि की रचनाएं कराई जाती हैं। उन दिनों जब विद्यार्थी हाई स्कूल परीक्षा देकर निकलता था, उसके पास लगभग सौ अच्छी कविताओं की पूंजी होती थी जो उसको आजीवन रस प्रदान करती रहती थी। हिन्दी के अध्यापकगण भी अच्छे छन्दों का चयन करके अपने विद्यार्थियों को देते थे तथा सस्वर पाठ में उनका स्वरपाठ करना भी सिखाते थे। दुर्भाग्य से यह स्वस्थ परम्परा लोप होती जा रही है।

सन ४१ में हम इलाहाबाद पहुंचे। हिन्दी साहित्यकारों का वह एक प्रसिद्ध गढ़ था। प्रयाग विश्वविद्यालय का वातावरण साहित्यिक तथा सांस्कृतिक था। 'देशदूत' हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ साप्ताहिक था। सम्पादक थे स्व० पं० ज्योति प्रसाद मिश्र 'निर्मल'। उन दिनों 'देशदूत' में छपना बहुत बड़ी बात थी।

'राजा महेन्द्र प्रताप' पर एक लेख १९४१ में 'देशदूत' में छपा। निर्मल जी ने इंडियन प्रेस तथा अपने घर के बड़े चक्कर लगवाये।

छपास का मारा मजनू बन जाता है और जब तक उसकी रचना प्रकाशित नहीं हो जाती वह बेचैन रहता है। निर्मल जी ने हमसे तत्कालीन कुलपति डॉ० अमरनाथ झा से साक्षात्कार करने के लिए कहा। हम डा० झा के यहाँ गये। उन्होंने हमारे प्रश्न रख लिए। तीसरे दिन उनके लिखाये हुए उत्तर लेकर मैं इंडियन प्रेस पहुंच गया। स्व० डा० अमर नाथ झा नए लेखकों को बहुत प्रोत्साहन देते थे। उनकी लिखावट नयनाभिराम थी। अक्षर मोती जैसे थे। वे अपने निवास स्थान पर एक कविगोष्ठी प्रति वर्ष करते थे। जिन कवियों को उस गोष्ठी में सम्मिलित होने के लिए निमन्त्रित किया जाता था वह कवि बहुत भाग्यवान माना जाता था। यद्यपि वे पाश्चात्य वेशभूषा पहन कर विश्वविद्यालय आते थे किन्तु हृदय से पूर्ण भारतीय थे। उनकी भाषा में विनोद का पुट रहता था उनके मुख के चारों ओर एक प्रभामंडल व्याप्त था। अनेक साहित्यकारों को उन्होंने संरक्षण दिया। उन दिनों डॉ० धर्मवीर भारती का 'गुनाहों का देवता' विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों में बहुत लोकप्रिय था। विद्यार्थी अपनी प्रेमिकाओं को उसके 'डाइलोग' याद करके सुनाते थे। कवियों में नरेन्द्र शर्मा का 'प्रवासी के गीत' विश्वविद्यालय में काफी पढ़ा जाता था। हिन्दी विभाग में प्रतिवर्ष एक कहानी प्रतियोगिता होती थी। ४-१-४२ को बाबू भगवती चरण वर्मा की 'बाँके' कहानी उनके मुख से सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। वे उस वर्ष प्रतियोगिता का सभापतित्व करने पधारे थे। स्व० डॉ० धीरेन्द्र वर्मा बहुत गम्भीर रहते थे। उनसे बातें करना प्रत्येक विद्यार्थी के बस से बाहर था। डॉ० रसाल के घर पर कभी-कभी जाते थे। वहाँ सहजता का अनुभव करते थे। तम्बाकू की फंकी लगाते जाते तथा ब्रजभाषा में कविता सुनाते जाते। कविसम्मेलनों में डॉ० रामकुमार वर्मा की कविता 'मैं तुम्हें सौ बार देखूं' कई बार सुनने का मौका मिला। बच्चन इलाहाबाद में तथा बाहर बहुत लोकप्रिय थे। वे अंग्रेजी विभाग में थे। अंग्रेजी विभाग में अनेक विद्वान थे। फिराक साहब को लेकर अनेक किस्से विश्वविद्यालय में सुने। साहित्यिक प्रेरणा पं० श्री नारायण चतुर्वेदी की दारागंज स्थित

बैठक पर बराबर जाने से प्राप्त हुई। उन्हें सब लोग 'भैया साहब' के नाम से सम्बोधित करते रहे हैं। हम प्रायः नित्य ही उनके दरबार की हाजिरी देते थे। नित्यप्रति के आनेवालों में सर्वश्री इलाचन्द्र जोशी, उदय नारायन तिवारी, रामेश्वर शुक्ल, भगवतीप्रसाद वाजपेयी, गिरजा शुक्ल गिरीश, वाचस्पति पाठक, निर्मल जी आदि थे। भैया साहब की बैठक में हंसी की धारा अबाध गति से बहती रहती थी। चर्चा का कोई खास विषय नहीं होता था। कभी कभी आने वाले में सर्वश्री रामकृष्ण दास, पं॰ बनारसी दास चतुर्वेदी, मैथिलीशरण गुप्त, सियारामशरण गुप्त, श्यामनारायण पाण्डेय, भगवती चरण वर्मा भी रहे है। पं॰ श्रीनारायण चतुर्वेदी 'विनोद शर्मा' के नाम से हास्य व्यंग्य लिखते रहे हैं। वे मनीषी होने के साथ प्रत्युत्पन्नमति भी हैं। बतरस ही इस बैठक का मुख्य आकर्षण रहता था। वहां एक शाश्वत गप्प-गोष्ठी चलती रहती थी। साहित्यकारों के संस्मरण, साहित्यिक व्यक्तियों की चर्चा, नई पुस्तकों की आलोचना आदि ही गोष्ठी के मुख्य विषय रहते थे। पान और चाय के दौर भी साथ चलते रहते थे। हिन्दी साहित्य सम्मेलन की राजनीति भी चर्चा का विषय रहती थी। भैया साहब के यहां मनहूसियत के लिए तनिक भी गुंजायश नहीं थी। कोई मनहूस फंस भी जाता था तो वह उसका प्रथम तथा अन्तिम आगमन होता था।

भगवती प्रसाद वाजपेयी भी मुख्यतः उपन्यासकार थे तथा साथ ही साथ कवि भी थे। गोष्ठियों तथा छोटे कवि सम्मेलनों में कविता पढ़ते थे। उनकी काव्य-पाठ की एक विशेष शैली थी।

"बहुत दिनों में मिलीं, जरा कुछ बोलो तो, कोई बात कहो" "छेड़ छाड़" में संग्रहीत 'भैया साहब' की कविताओं को सर्वप्रथम उनकी बैठक में सुनने का मौका मिला था। उन दिनों बहुत कवि सम्मेलन हुआ करते थे। दस दस हजार की उपस्थिति में हुए कवि सम्मेलनों की अध्यक्षता 'भैया साहब' किया करते थे। उन दिनों कवि सम्मेलनी

राजनीति और नवरस

नाग पंचमी का दिन था। पंडित जी बैठक में बैठे हुए अखबार पढ़ रहे थे। उनके चमचे रामप्रसाद आ टपके। रामप्रसाद एक सप्ताह राजधानी में रहकर लौटे थे। बोले—गुरु जी, काया पलट हो गया। पंडित ने उत्तर दिया—बेटा, इब्तदाये इश्क है रोता है क्या? आगे-आगे देखना होता है क्या? सावन में फाल्गुन हो गया? नेतागण फाग-खेल रहे हैं।

रामप्रसाद ने कहा—सचमुच गुरुजी, फागुन महीने के से दृश्य देखने को मिले। क्या गुलाल उड़ाया है एक दूसरे पर। गुलाल नहीं मिला तो कीचड़ से होली खेल ली।

पंडित जी ने कहा—बेटा, राम प्रसाद साहित्य में नौ रस होते हैं? राजनीति में भी नवरस की उत्पति हो गई।

चमचे ने पूंछा—गुरु जी, ये तो आपने अनूठी बात कही। हमारे आचार्यों ने तो साहित्य के लिए नौ रस बनाए, नेतागणों ने इन पर कैसे कृपा करी।

गुरु जी बोले—आँखें खोल तभी तेरे ज्ञानचक्षु खुलेंगे। शृंगार रस प्रेम-प्रधान है। एक दल ने दूसरे दल के लोगों को तोड़ने के लिए कैसे कैसे रसभरे प्रणय निवेदन नहीं किये? आवाज दे कहां है, दुनिया मेरी जवां है। जिस समय एक नेता ने दूसरे से कहा—'हे प्रिये, तुम्हारे विरह में मैं सूख सूख कर कांटा हो गया हूँ, मुझे अपना ले मेरी जान। मोहब्बत में इतनी बेरुखी शोभा नहीं देती।' "मेरा दिल ये पुकारे आ जा कुर्सी के सहारे आ जा। भीगा भीगा हे समा, ऐसे में तू कहां, मेरी पार्टी पुकारे आ जा।"

चमचा बोला—वाह गुरु ज़ी, मेरा तो ध्यान ही इधर नही गया। कवियों ने लिखा हो किन्तु हमारे प्रेरणा के स्रोतों ने करके दिखा दिया। क्या कमाल किया है ? अभी तो गुरु जी एक रस ही हुआ। गुरु जी ने तम्बाखू की फंकी लगाकर कहा—देख बेटा—शृंगार रस तो तू समझ गया। करुण रस को भी निप्पत्ति हो गई। अपदस्थ लोगों के यहा से जब स्टाफ निकलता है, टेलीफोन कटते है, कारें जब विदा होती हैं तो बिल्कुल करुण रस भी दहाड़ मारकर रोने लगता है। "वन चले राम रघुराई।" जब कृष्ण गोकुल छोड़कर मथुरा चले गये, उस समय जो हाल गोपियों का हुआ वही हाल चमचे-चमचियों का होता है।

जब तुम्ही चले परदेस, लगाकर ठेस।
ओ प्रीतम प्यारा, दुनिया में कौन हमारा ?

चमचा खुश होकर बोला—"अब तो गुरु जी मेरी खूब समझ में आ रहा है। वीररस की निप्पत्ति तो मैं भी बता सकता हूं। पहले लड़ाई शस्त्रों से होती थी अब होती है वक्तव्यों से। दलों के नेता अखबारों को भी वक्तव्य दे रहे थे मानों तमचे चले रहे हों। काश भूषण आज होते तो 'शिवा बावनी' के स्थान 'कुर्सी बावनी' लिखते। पडित जी और जोश में आ चुके थे, मूछों पर ताव देते हुए बोले—बेटा, वीररस तो तुझे दीखा, वीभत्स रस नजर में नही आया। तुझे किसी कोने में गिरगिट रोती नजर नहीं आई। सुबह लाल रंग, दोपहर हरा रंग और शाम को पीला रंग। इस रस को तो वो भी समझ गया जिसे रस का अर्थ गन्ने के रस से भिन्न नही होता। साथ साथ में अद्भुत रस तो अहर्निश कायम रहा। रोज सुबह अखबार इस रस से पूर्ण समाचार लेकर ही आता है। चमचा भी 'मूड' में आ गया था, बोला—गुरुजी—एक नेता जब दूसरे को जबर्दस्ती अपने दल में मिलाने की कोशिश कर रहा था। तब रामदास, दंड और भेद, चारों को अजमा रहा था। उसके लाल नेत्र तथा धमकी भरो वाणी रौद्र रस का सृजन कर रही

थी। गुरूजी बोले—चमचे, तू अब पक्का चमचा हो गया। हास्यरस क्या समझाऊं। इस सारे कांड में हास्यरस तो रसराज था। विचित्र बातें, विचित्र काम, विचित्र भंगिमाएं, क्या विचित्र नहीं था।

और भयानक रस को झलकियां तो अन्त तक देखने को मिलीं। अन्त में अन्तरस की निष्पत्ति हुई। कुर्सियों पर विराजमान होकर चैन मिला, आनन्द मिला। पहलवान भी दंगलों से लौटते हैं तो कुछ दिनों आराम करके शान्तिलाभ लेते हैं। अभी भी चैन में कमी है। हलका सर दर्द होता रहता है।

जनता की समझ में कुछ नहीं आ रहा। वह अबोध शिशु की भांति अपने आदरणीयों एवं प्रातः स्मरणीयों के करतब देख रही है और उन्हें मौन रूह से प्रेमांजलि प्रस्तुत कर रही है—

रघुपति राघव राजा राम, सबको सन्मति दे भगवान।

कवि कलेशीराम

शुद्ध शब्द है क्लेश। घिसते घिसते कलेश हो गया। हिन्दुओ म इसीलिए गणेश जी की पूजा सर्वप्रथम की जाती है क्योकि उनको विघ्नविनाशक माना गया है। सब उपाय एक तरफ और क्लेश करने वाले का अस्तित्व एक तरफ। गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी ऐसे लोगो की वन्दना बाल्काड मे ही की है। 'जो विन काज दाहिने बाँए। नर-नारी क्लेश-प्रियता मे समाजवादी है। कलशिन ताई जहाँ जायगी वहाँ कलेश करेगी। यह अतिशयोक्ति नही है कि विघन प्रिय प्राणी विना क्लेश किये नही सो सकता। उसे अपना भोजन पचाने के लिए क्लेश करना आवश्यक है। राजनीति को ही ले लीजिए जनता पार्टी भी क्लेश प्रियता के कारण अल्पकाल मे ही पचतत्व मे मिल गई।

कवि कलेशी राम जी ख्यातिप्राप्त एव वयोवृद्ध कवि थे, नही, आज भी जीवित है। पुरस्कार प्राप्त है। रगरूप बगुला जैसा। प्रेमपुर से हृदय जला हुआ तवा जैसा। प्रेमपुर के एक नवयुवक कवि न अपना सकलन छापा। छापा इसलिए कहा गया है कि प्रकाशक वही कवि सकलन छापते हैं जो या तो पाठ्य क्रम मे लग जाता है अथवा कवि उसकी बिक्री की गारटी देना है। बहरहाल उसके मित्रो ने परामर्श दिया कि जब तुमने सकलन प्रकाशित करा ही लिया है तो थोड से खर्चे म इसका विमोचन भी करा लो। मरता क्या नही करता ? बजट बन गया। कवि ने खर्चा उठाने का जिम्मा ले लिया। "विनाश काले विपरीत बुद्धि'। कवि के मित्रो मे से एक ने कवि कलेशी राम का नाम विमोचन कर्त्ता के रूप म सुझा दिया। कलेशी रामजी को प्रथम श्रेणी का आने-जाने का मार्ग-व्यय अग्रिम भेज दिया गया। उन्होने

स्वीकृति दे दी। कलेशीराम जी का ससुराल भी उसी नगर में था। नगर के सांस्कृतिक-हाल को 'बुक' किया गया। सजावट भी की गई। मंच पर नवयुवक कवि. पत्नी सहित उसके परिवारीजन, संयोजक तथा प्रमुख पत्रकार उपस्थित थे।

कवि कलेशी राम जी को स्टेशन से आदरपूर्वक लाया गया। होटल में ठहराया गया। न मालूम क्यों, जब से स्टेशन पर उतरे उनकी मुख मुद्रा अवसाद पूर्ण थी। जिस काव्य संकलन का विमोचन होना था, उसकी प्रति उनको बहुत पहले भेजी जा चुकी थी।

उत्सव प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम कवि कलेशी राम जी की महानता, उदार हृदयता का वर्णन किया गया तथा इतनी लम्बी यात्रा करके आने के लिए आभार प्रकट किया गया। फिर नवोदित कवि एवं उनके संकलन का परिचय दिया गया। पुस्तक को एक चमकीले कागज में लपेटा गया था तथा उस पर सुनहरी फीता चढ़ा हुआ था जिसे कलेशी राम को काटना था।

उनसे विमोचन करने के लिए ज्योंही कहा गया वे बड़े बेमन से खड़े हो गए और उन्होंने प्रवचन प्रारम्भ किया जिसका आँखो देखा हाल इस प्रकार है···

"कविता का युग समाप्त हो गया। न मालूम आज भी लोग कविता क्यों लिख रहे हैं? दुनिया में कविता लिखने के अलावा और भी कार्य हैं। अमेरिका और रूस आदि चाँद पर पहुँच गये। हम अभी कविता ही लिख रहे हैं। जो लिखना था वो सूर और तुलसी लिख गये कुछ हम लोगों ने जवानी में लिख डाली। आज का युग भौतिक युग है। जवानी में कविता लिखने का शोक किसी दशा में अच्छा नहीं कहा जा सकता। खैर मन नहीं मानता तो लिख लो भाई पर छपाने में तो अपनी गाढ़ी कमाई का पैसा मत खर्च करो। यह सब आडम्बर क्यों? यह सब अपव्यय क्यों? क्यों? क्यों?

आज कविता की दशा पर रोना आता है। (पहले सुबकियां लेते हैं फिर फूट-फूट कर रोने लगते हैं) सभा में अजब तरह का सन्नाटा छा

जाता है। (वे रोते-चले जा रहे हैं)। भाईयों और बहनों, मैंने कविता को अपने रक्त से सींचा है, अपना जीवन होम दिया है, प्रतिबद्ध रहा हूं, मेरे गले से सुनो रहा हूं (और अपनी कविताएं सुनाना शुरु कर देते हैं) संयोजक किंकर्तव्य विमूढ़। माइक को विशिष्ट अतिथि के सामने से कैसे खोच लें। नवयुवक कवि का हृदय विदीर्ण है। उसके परिवारी जन हैरान हैं, अतिथि गण उठ उठ कर चले जा रहे हैं, न रोना बन्द हो रहा है न कविता सुनाना। सकलन विमोचित होने को तड़प रहा है। कलेश रामजी की समाधि भंग होती है सयोजक भी तुरन्त कविता संकलन पर लपेटे हुए फीते को काट कर सभा विसर्जन की घोषणा कर देता है। भगवान जैसा विमोचन कलेशी राम द्वारा किया गया ऐसा विमोचन और भी नवोदित कवियों के संकलन का न हो।

एक प्रतिष्ठित संस्था द्वारा हिन्दी के प्रेमी एक वयोवृद्ध मत्री का जन्म दिवस मनाया गया। सौभाग्यवश कलेशी रामजी उस उत्सव का सभापतित्व कर रहे थे। कार्यक्रम सुरुचि पूर्ण था। प्रतिष्ठित साहित्यकारों तथा राजनीतिक विशिष्ट कवियो द्वारा सयत विचार प्रकट किये गये तथा उनकी हिंदी के प्रति की गई सेवाओं की प्रशसा करते हुए उनके दीर्घ जीवन की कामना की गई। कलेशीराम को अन्त में बोलना ही था। उन्होने जो कहा उसका सारांश था कि कवि भूखा मर रहा है और राजनीतिज्ञ के कपोलों पर वृद्धावस्था मे भी लालिमा फूट रही रही है। पूरे कार्यक्रम की ही खाट अपने ओजस्वी भाषण से खडी कर दी।

एक राज्य की राजधानी में एक अहिंदी भाषी युवाकवि ने एक काव्य संकलन लिखा। उस नगर के सांस्कृतिकभवन मे उस सकलन के सबध में एक उत्सव हुआ। सौभाग्य से अथवा दुर्भाग्य से कलेशीराम वहा एक वक्ता के रूप मे अवतरित हुए।, शुरू मे ढग से बोले फिर पटरी से उतर गए। कहने लगे कि उस सकलन की पाडुलिपि उन्होंने ही ठीक की है और कुछ इस प्रकार का सकेत देने लगे कि उस कवि का तो केवल नाम ही प्रकाशित हुआ है वास्तविक मे सब कविताएं उन्होने ही

लिखी हैं। सभा में अशान्ति फैल गई। इतने से ही वे सन्तुष्ट न हुए, अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने नये कवि की जाति को लेकर उनकी बुद्धिहीनता पर व्यंग्य कस दिया। परिणाम स्वरूप एक छोटे-मोटे साम्प्रदायिक दंगे की भूमिका बंध गई। पूर्व इसके कि वहाँ पुलिस आती और कुछ लोग अस्पताल जाते। कुछ समझदार व्यक्तियों ने कुशलता पूर्वक सभा को विसर्जित कर दिया।

आप किसी सभा का आयोजन करें तो कलेशीराम से सावधान रहियेगा।

परलोक-सेवा-आयोग

इस लोक मे तो गड़बड़ झाला प्रत्यक्ष दिखलाई देता है। सुना परलोक में भी उसका असर पड़ने लगा है। लाला रामभरोसे हमारे पड़ौसी है। उनकी आयु ८० के आसपास है। एक दिन ऐसे बेहोश हुए कि करीव वीस दिन वाद होश आया। उनके घरवालों ने कई कुशल डाक्टरों को उन्हे दिखाया किन्तु सवने यही कहा कि इन्हें चुपचाप लेटे रहने दो, अपने आप होश आ जायेगा। जब होश आया तब डाक्टरो ने उन्हें दवाई-दारु देकर सहज कर दिया। वे सरकारी नौकरी मे रहे थे। बहुत से साक्षात्कारो से उनका सम्वन्ध रहा था। कुछ मे स्वय बैठे थे, बाकी में अपने वाल-वच्चे बैठाये थे।

मैंने सोचा कि क्यों न इनसे भेट-वार्ता करूं और यदि नई जानकारी मिले तो उसे प्रकाशित कराऊं। सुवह के लगभग दस बजे थे। मैं उनके पास गया। वे खाट पर बैठे हुक्का गुड़गुडा रहे थे। मैंने उनके चरण छुए, आशीर्वाद प्राप्त किया और उनसे भेट-वार्ता का कार्यक्रम प्रारम्भ कर दिया।

प्रश्न—बावा, वीस दिन आप बेहोश रहे थे।

उत्तर—हां, रहा था। मैं तन्द्रावस्था में था। एक नई दुनिया मे विचरण कर रहा था।

प्रश्न—आपने कौन-सी दुनिया देखी?

उत्तर—अरे, तुम इतना भी नही समझ सके। परलोक का दृश्य देख रहा था। मुझे यमदूत ले गये थे। मैने सरकारी खर्चे पर कई विमान यात्राएँ की थी। यद्यपि ये भी नि:शुल्क थी किन्तु गोरी गोरी परिचारिकाओं के स्थान पर हब्शी जैसे यमदूत साथ मे थे।

प्रश्न—वे आपको कहां ले गये?

उत्तर—चित्रगुप्त के सचिवालय में। वहाँ तो हड़ताल चल रही थी।

प्रश्न— हड़ताल का क्या कारण था?

उत्तर—नर्क और स्वर्ग के आवंटन करने में रिश्वतखोरी और भाई-भतीजा वाद पनपने लगा था।

प्रश्न— बाबा, ये तो आप बहुत ही विचित्र बात सुना रहे हैं। इस जीवन में किए गए पाप-पुण्य के आधार पर ही "आटोमैटिक" तरीके से स्वर्ग-नर्क मिलता है।

उत्तर—भैया, ये बातें तो इतिहास की हैं। अब तो वहाँ भी "एप्रोच" से स्वर्ग नर्क मिलने लगा है।

प्रश्न— विष्णु भगवान क्या कर रहे थे?

उत्तर—वे बहुत 'पजल्ड' थे। नारद से परामर्श करते मैने उन्हें देखा।

प्रश्न— वे लोग क्या बात कर रहे थे?

उत्तर—नारद जी विष्णु भगवान को बता रहे थे कि मृत्यु लोक से एक नेता आया। वह बहुत प्रभावशाली मंत्री भी रह चुका था। उसकी गुप्त चरित्रावली बहुत रंगी हुई थी। जब उनसे नर्क में जाने को कहा गया तो वो भड़क गया।

प्रश्न— मेरी तो कुछ समझ में नही आ रहा बाबा। यहाँ तो यह सब कांड होते रहते है। चमचे इन लोगों के दिमाग बिगाड़ देते हैं। ये पाप पुण्य को पर्यायवाची मानने लगते हैं किन्तु वहां तो सब आटोमैटिक है। आज तक तो कोई गड़बड़ी सुनने में नहीं आयी।

उत्तर—भैया, मेरे तो स्वयं ही होश फ़ाख्ता हो गये थे। उस नेता—मंत्री ने चित्रगुप्त कार्यालय के कर्मचारियों को ही बहका दिया। उनसे कहा कि वे लोग मूर्ख हैं, उनके पास तो स्वर्ग/नरक एलाटमेन्ट है उनके दिन तो सोने के और रातें चांदी की हो सकती हैं। कर्मचारियों ने उसी दिन से 'पेन-डाउ

स्ट्राइक शुरू कर दी है। असख्य व्यक्ति बिना आवटन के ऐसे ही पड़े हुए हैं जैसे यहाँ अनेक गाड़ियो के लेट हो जाने पर प्लेट फ़ार्म पर भीड लग जाती है।

प्रश्न— बाबा, अकेले नेता ने पूरे परलोक मे भी गडबडी मचा दी ?

उत्तर—भैया, अब वो एक नही अनेक हैं। सीनियर आई० ए० एस० अफसर, नामी उद्योगपति, बड़े वकील, मजदूर नेता, पत्रकार प्रसिद्ध डॉक्टर, बुद्धिजीवी—एक अच्छा खासा गुटबन गया है जिसने वहा की सब व्यवस्था बिगाड दी है।

प्रश्न— ये लोग क्या कर रहे है ?

उत्तर—बारी-बारी से भाषण देते हैं। कहते हैं नर्क/स्वर्ग का भेद-भाव नही चलेगा, ये डिक्टेटरशिप है। प्रजातात्रिक तरीके से कार्य होना चाहिए। नर्क/स्वर्ग का फैसला इकतरफा नही होना चाहिए और जब तक मामला तय न हो, इस निर्णय को अमल से रोकेने के 'स्टे' मिलना चाहिए। आई० ए० एस० अफसर के भाषण का सार था कि स्वर्ग/नर्क के आवटन के नियम बनने चाहिए जो लचीले होने चाहिए। फाइल एल० डी० सी० से चलनी चाहिए और अन्तिम निर्णय का अधिकार उन्हें होना चाहिए।

प्रश्न— उद्योगपति भी कुछ कहते हैं ?

उत्तर—अजी उनका तो वहाँ भी वर्चस्व हो गया। उनमे कई लोग तो इनके प्रतिष्ठानो मे जीवन भर कार्य करके हो गये हैं। सभी लोग उनकी बनाई धर्मशालाएँ मन्दिर आदि से प्रभावित हैं। समय-समय पर इनसे आर्थिक सहायता भी प्राप्त करते रहे हैं।

प्रश्न— क्या वहाँ भी राजनीतिक पार्टिया बन गई है ?

उत्तर—पूरी तरह से तो नही बन पायी पर धीरे-धीरे गुटो का निर्माण हो रहा है। चुने हुए विधायको तथा ससद सदस्यो ने माग की है कि उन्हे केवल स्वर्ग ही भेजा जाए। उनका मूल्याकन हो

चुका है। वे मृत्युलोक के प्रतिवरिष्ठ व्यक्ति रहे हैं वहाँ भी उनको स्वर्ग तथा स्वर्ग में भी स्पेशल क्लास दी जाये।

प्रश्न—कम्यूनिस्टों का क्या रोल है ?

उत्तर—भाई उनका 'रोल' बहुत ही न्यायोचित है वे तो सर्वहारा के समर्थक रहे हैं। उनके अनुयायियों को जो नर्क इस लोक में भोगना पड़ता है उसका उन्हें अभ्यास है। वे नर्क को ही स्वर्ग बनाना चाहते हैं।

प्रश्न—देवतागण इस आंदोलन को दबाने के लिए क्या कर रहे है ?

उत्तर—नारद जी के सुझाव पर परलोक सेवा आयोग का गठन किया गया है। ये लोग नये सिरे से स्वर्ग तथा नरक में एडमीशन के अलग अलग 'हैस्टस' बना रहे है। पहले लिखित परीक्षा लेंगे तथा बाद में इन्टरव्यू करेंगे। इंटरव्यू के समय इस लोक में किये गए पाप पुण्यों का लेखा-जोखा सामने होगा क्योंकि वहाँ कुम्भ की सी भीड़ इकठा हो गई है। इसलिए इस बेच को तो सीधे इंटरव्यू कर के आवंटन किया जा रहा है।

प्रश्न—आयोग के सदस्यों का कुछ पता चला ?

उत्तर—नाम बताने वाले थे कि मुझे होश आ गया। तुमको नामों में क्या दिलचस्पी है ?

प्रश्न—बाबा, आप नहीं समझेंगे। नामों का पता लगने के बाद आपको होश आ जाता तो हम यहीं से 'एडवान्स' में स्वर्ग का आवंटन करा देते। खैर, अच्छा बाबा।

उत्तर—'धन्यवाद'

वोटर-अभिनन्दन-पत्र

हे सर्वशक्तिमान। तुम्हारा यह विशेषण चाहे 'टेम्परेरी' हो पर तुम पर समय समय पर आदर पूर्वक चस्पा किया जाता है। जब तक वोट नही देते तब तक तुम 'ब्रह्म' समान माने जाते हो।

हे मृग शावक !

तुम्हारे अन्दर 'कस्तूरी' रूपी वोट छिपा है। तुम्हे इसका ज्ञान नही रहता। समय समय पर तुम्हे इसका स्मरण कराया जाता है।

हे भेड़-श्रेष्ठ !

तुम्हारे 'वोट' रूपी ऊन को उतारने के लिए तुम्हे प्रसन्न किया जाता है, बाद मे पुन चरने को स्वतत्र छोड़ दिया जाता है।

हे बछिया के ताऊ !

चुनाव के समय तुम इस मुहावरे के जीवन्त उदाहरण बन जाते हो। अध्यापक कक्षाओ मे इस मुहावरे का वाक्य-प्रयोग करके बच्चो को समझाते हैं। भारत का वोटर 'बछिया का ताऊ' होता है।

हे स्थित प्रज्ञ !

गीता मे 'स्थितप्रज्ञ' होने के लिए कठोर तपस्या का विधान बताया गया है। चुनाव काल मे हर वोटर 'स्थितिप्रज्ञ' हो जाता है। वह पात्र/कुपात्र न देख कर 'स्थितिप्रज्ञ' रूप मे वोट प्रदान करता है।

हे कर्ण !

भारतीय सस्कृति के अनुसार तुम्हारी दान-वृत्ति कर्ण के समान हो जाती है। वोट-दान देने मैं तुम्हारी विशाल-हृदयता प्रणम्य है।

हे श्रद्धावादी !

महाकवि तुलसीदास के समय में चुनाव-प्रक्रिया का अस्तित्व नहीं था वरना 'हित अनहित पशुपच्छिहु जाना' अर्द्धाली नहीं लिखते। तुम भी अपना भला बुरा बिना सोचे ही वोट दे देते हो तथा तुलसी बाबा की चौपाई पर प्रश्नचिन्ह लगा देते हो।

हे अवढरदानी !

शिवजी के बारे में प्रसिद्ध है कि वे शीघ्र प्रसन्न हो जाते हैं तथा भक्त को मुंह-मांगा वरदान दे देते है। बाद में परेशानी में पड़ जाते हैं, शिवजी को तो एक ही भस्मासुर ने परेशान कर दिया था किन्तु तुम पर आरोपित टेम्परेरी शिवत्व का लाभ उठाने के लिए असंख्य भस्मासुर मंडराते हैं और तुम उन्हें वोट रूपी वरदान तुरन्त प्रदान कर देते हो।

हे अज्ञात-यौवना नायिका !

तुम उस प्रेयसि के समान हो जिसे अपने उद्दाम यौवन का पूरा एहसास ही न हो। तुम्हारे वोट रूपी यौवन के लुटेरे दिन दहाड़े तुम्हें फुसलाकर लूट लेते हैं और तुम देखते रह जाते हो।

हे हनुमान !

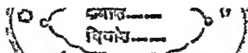
हनुमान जी को भी उनकी छिपी हुई शक्ति का ज्ञान कराना पड़ा था। तुम्हारे बुद्धि के खजाने भी वोट रूपी हीरा है जिसे तुम कौड़ी के मोल लुटा देते हो।

हे धर्मभीरु !

तुम कैसे धर्मप्राण व्यक्ति हो। तुमने पढ़ा होगा कि कुपात्र को दान देने से पाप चढ़ता है। अज्ञान की बात छोड़ दो। जान बूझ कर ऐसे व्यक्ति को वोट देकर पाप मोल लेना कहां की बुद्धिमानी है।

हे शंख-श्रेष्ठ !

शंख दूसरे का बजाया बजता है। तुम भी दूसरे के बजाये बजते



हो। भैया, गाठ की, क्या गिरवी रख दी है तो उसे छुडा लो। अब तो ३२ वर्ष हो गए। कब तक ब्याज देते रहोगे ? कब तक दूसरो की अक्ल से काम लेते रहोगे ?

हे बेपेंदी के लोटे !

प्यारेलाल, जरा सी उगली का झटका लगा और लुढक गये। बहुत लुढक लिये। पेंदी लगवा लो। सीधे उठो, सीधे बैठो। कुछ समझ मे आई चाचा जी।

हे दिव्यचक्षु !

ताऊ, बचपन से रामलीला देखते रहे हो। दशहरा मे रावण का पुतला जलाते रहे हो। राम को राजगद्दी पर बिठाकर खुशिया मनाते रहे हो। ऊपर की तो खुशी हुई है,

ज्ञान-चक्षु खोलो दादा, बहुत सो लिये दादा,
कही ऐसा न हो कि लोकतत्र का निकल जाय जनाजा,
थोड़ा लिखा बहुत समझना।